

GOOJBATEE

TRANSLATION OF

ESOP'S FABLES.

इसपनीति कथाश्री

बापूशास्त्रीपंड्या रायकषाळ

संशोधने

सराठी उपरधी गुजराती भाषासां करीये
मुंबाईनी शिधामंडळीना हापखानासां छापीये

सन इसवी

१८३८

संवत्

१८८४

शक शालिवाहन

१७५०

SMT. HANSA MEHTA LIBRARY
The Maharaja Sayajirao University
of Baroda

Call No

PK

1936

क्र. 2808

G 75

A 3 A 3 / 1828

Mahajam Bk Dt.

PURCHASED

Date 30-5-57

Initial CP

G-2808

PURCHASED

Date

Initial

Cool. Rs. 8-0-0

7PK

1936

G75

A3A3

1828



(१)

अनुक्रमणिका

पात	अ	पृष्ठ
८	अरुण्य अने लाकडां कापनारो	६०
	इ	
१२५	इंद्र अने गणपति	२१२ 149
१३८	इंद्र अने गंधेडो	२३६ 200
	उ	
८३	उदरसाथे सिंहीनु लाम	१२८ ६८
१४९	उदर अने सापनी नाशी	१४२ ६७
१५९	उदरनी सभा	२६९ 242
	ए	
१२७	एक आंखे काणुं हरण	११५ 169
१७६	एक खाली घोडो अने लादेलो	
	गंधेडो	३०५ 277

* This column refers to the corresponding Fable in Croxall's Esop, London 20th Edition.

(२)

क

३५	कडकडता पचडानो	- - -	४३	190
५५	कणवी अने शाहाडग	- - -	७२	261
१४८	कणवी अने तेना खोकरा	-	२५५	235
१७४	कणवी अने अदृष्ट	- -	३०२	309
१६	कबुतर अने कुकडां	- - -	१८	109
१०६	करडकणो कुतरो	- - -	१७९	81
१७	कस्तुरीवो वृग	- - -	२०	111
८६	कागडो जेणे मोरनां पाशां			
	शरीरनां खोशां हतां	-	१३५	7
१३२	कागडो अने खबुतर	- -	२२४	173
१७०	कागडो अने साप	- - -	२६५	325
१७३	कागडो अने गाडहं	- -	३०९	308
१०९	काचवो अने गहडपक्षी	- -	१६९	74
१८९	काळुं माणस	- - -	३९९	292
६६	कांडाखानारा उंटनी	- -	६९	276

कीडीया

(३)

३६	कीडीयो अने तीड	- - -	४८	205
७६	कीडी अने माड	- - -	१२९	48
६४	कुकडी अने चकली	- -	१४६	300
१६५	कुकडी अने शियाळ	- - -	२८८	317
१७५	कुकडुं अने शियाळ	- - -	३०३	323
६२	कुकडो अने रत्न	- - -	१४६	1
१४७	कुकडो अने शियाळ	- -	२५२	215
	१ कुतरो अने तेनु प्रतिविंब	- -	९	8
४४	कुतरो अने गाडहं	- - -	५७	220
७६	कुतरो अने दीपडुं	- - -	१९३	35
१३८	कतन्न कुतरो जेणे गाडरां खधां		२३४	180
१३६	कोयला वेचनारो	- - -	२३०	133

ख

१२३	खचरनी	- - -	२०६	158
४८	खबुतर अने कीडी	= = =	६२	226

ग

(४)

न

११७ गधेडो अने सिंह एमनी पारध	१८४	127
१४३ गधेडो सिंह अने कुकडुं -	२४५	207
१४५ गधेडो अने कुतरो - - -	२४८	210
५० गहड अने कागडो - - -	६४	227
७९ गहड पक्षीणो अने शिवाळणो -	१०९	23
१२० गहड पक्षीणो, बलाडो, अने भुडणो	२००	139
१३७ गवई सारंगीवाळो - -	२३२	183
७७ गाडहं जेने बकरीये पाव्युं हं	११६	37
६ नामडोयो अने साप - - -	६	45
१४० नामडोयो उंदर अने सेहेरी उंदर	२३७	63
६५ गोवाळोयो अने खंडेराव -	१५०	304

घ

४० घरडो कुतरो - - - -	१२४	51
१५३ घरडो सिंह - - - -	२६५	246

च

(५)

४३ घासनी गंजीउपरनो कुतरो -	५५	219
१२६ घुड अने तोड - - - -	२१३	167
६ घोडो अने सावर - - -	१०	62
५२ घोडो अने गधेडो - - -	६७	233
१४६ घोडो अने सिंह - - -	२५७	237

च

१३३ चकली अने ससलो - - -	२२६	176
१५८ चकली अने विजां पक्षी - - -	२७४	266
१६८ चाकर अने अणसमज - - -	२६३	287
१०८ चिबो अने शिवाळ - - -	१७५	105
३८ चोर अने होकरो - - - -	३४	186
३६ चोर अने कुतरो - - - -	३५	182
१६९ चोर अने कुकडो - - - -	२८१	298

छ

४० छोकरो अने मा - - - -	५०	201
-------------------------	----	-----

ज

ज

११५	जवान पुरुष अने श्रीम पक्षी	१८१	124
१५६	जवान पुरुष अने बलाडी	२७६	274
१६४	जवान कोकरो अने सिद्धनु अत्र	२८६	315

ट

१०३	टाल पडेलो शिलेदार	१६५	85
-----	-------------------	-----	----

ड

३६	डाहायो सिद्ध	४४	194
११८	डाहायो गधेडा	१६६	128
११२	डोसो अने वृथु	१८३	117
१५४	डोसो अने तेनां कोकरां	२६६	247
१५५	डोशी अने तेनां खंडोयो	२६६	249

द

३७	दीपडुं अने मांही गधेडी	४६	203
३८	दीपडुं अने दकरोनुं वच्चु	४६	196

दीपडां

६२	दीपडां अने गाडरां	८४	272
८८	दीपडुं अने बगलुं	१३६	12
६३	दीपडुं अने बकलुं न्हानुं	१४७	3
१२६	दीपडुं शिवाळ अने वांदरो	२२०	198
७४	देडका अने वे बळर	१०७	27
८५	देडकां अने शिवाळ	१३३	79
६७	देडकांये राजा करवाने		

बिष्णुनी प्रार्थना करी - - १५४ 5

१६६	देडकां अने उंदर	२६०	284
१४	देव अने गाडीवान	१६	100
१३१	देवशर्मा पंडीत	२२३	172
३३	दैव अने कोकरो	४०	156

न

१३०	नदीनी रुख अने समुद्रनी मत्स्य	२२१	170
१६७	नाळुयो अने माणस	२६१	285

प

७ पर्वत बाहानोवखत दुःखी यापके	७	47
७५ पराळ मानुं सावर	- -	१०६ 33
१४६ पयु, पक्षी, अने वागोळ	- -	१५० 112
२३ पारधी अने पक्षी	- - -	२८ 147
४६ पारधी अने पक्षी	- -	६३ 250
५४ पारधी अने खवुतर	- -	७९ 258
१८८ पारधी अने चकली	- -	१२२ 166
१४२ घेठ अने धिजा अवयव	- -	२४३ 68
१५७ पोपट अने पांजड	- -	२७२ 256

ब

४५ बकरानुं वसुं अने पितरो	- -	५८ 193
२० बकरी अने कुतरो	- - -	१७ 175
२१ बलाडो अने उंदर	- - -	२५ 152
४२ बलाडो अने कुकडुं	- -	५३ 217

बलाडो

१०६ बलाडो अने शिवाळ	- - -	१७६ 107
१६३ बलाडो जेने जमवा		
बोलावो हतो	- - -	२८२ 302
२ बळद अने देडकुं	- - -	२ 20
२० बळद अने बकरो	- - -	२४ 146
११० बाज अने बुलबुल	- - -	१७८ 113
१११ बांडो शिवाळ	- - -	१८० 115
१३४ ब्रह्मखती अने मुर्ति कर्तारो	- - -	२२७ 296
२७ बे कर्चला	- - -	३३ 185
६६ बे कुतरियोनी	- - -	६७ 18
६८ बे कुकडा	- - -	१५६ 305
८६ बे ठग अने भाजी वेचनारो	- - -	१४० 207
१६ बे देडका	- - -	२२ 136
७३ बे वाचडियोना धणीनी	- - -	१०५ 31
६३ बे वटे मार्गु	- - -	८६ 293
१०५ बे वटे मार्गु अने शींछ	- - -	१६६ 83

१८५	बे वासण	- - - -	३१८	88
१२१	बेहेन अने भाई	- -	२०३	131
१७१	ब्रह्मा अने उंट	- - -	२२६	82

भ

५७	भरवाडजे कोकरो	- - -	७५	263
५६	भुंडणी अने दीपडुं	- -	७४	260

म

१८३	मद्यपी वर	- - - -	३१४	290
४१	मधरूडे अने रींक	- - -	५२	214
१६०	मधमाख्यो, साख्यो, अने भमरी	२७६	279	
१५	मनुष्य अने हंसी	- - -	१७	102
१०७	मस्तान बोकडो	- - -	१७३	103
१००	मा अने दीपडुं	- - -	१६०	73
१८	माळी अने साकलां	- - -	२१	126

माळी

६५	माळी	- - - -	२८२	295
१३	माणस अने सिंह	- - -	१५	98
३२	माणस जेने कुतरे करड्यो हतो	३६	155	
१८४	माणस अने मत्सर	- - -	३१६	318
८१	मांदो समळीने कोकरो	-	१२६	53
६०	माळी अने कुतरो	- - -	१४२	321
६१	मेहेताजी अने निसाळियो	-	१४४	327
७८	मोर जे पोताना खरने खोटो			
	जाणोने खेद करतो हतो	-	११६	39
१०४	मोर अने बगलो	- - -	१६७	88
१५६	मोर अने काणडो	- - -	२७०	254

र

५६	रणशींगु वगाडनारो	- - -	७८	268
१६३	रवारो वेपारी थयो हतो	-	२८४	312
१३५	राजा गुरसेन अने तेने दास	२२६	178	

राजपूत

राजपूत

ल

१७२ लावरी अने तेनां वखां - - -	२६७	70
३४ लोभोयो माणस - - - -	४९	137
५९ लोभी अने मत्सरी - - -	६६	229

व

१०२ वनोदेव अने मार्ग - - -	१६३	98
१२८ वरुण अने कबाडी - - -	२१७	168
१० वाघनां वेश लेनारो गधेडो -	१९	78
६४ वाच्यमां पडेलुं शिवाळ - - -	८७	281
१४४ वांदरो अने शिवाळ - - -	२४७	208
१८० वांदरी अने तेनां वे वखां -	३१०	311
६९ वेध धारी दीपडुं - - -	८३	271

श

४३ शालुडो अने साप - - -	६६	252
३३ शिवाळ अने द्राव - - -	३	41

शिवाळ

५ शिवाळ अने वकरो - - -	५	44
२२ शिवाळ अने कांटा - - -	२६	151
२६ शिवाळ अने सूरहर - - -	२२	162
३९ शिवाळ अने गामडोयो - - -	३०	153
४६ शिवाळ अने सिंह - - -	६०	230
६८ शिवाळ अने कागडो - - -	६४	16
७० शिवाळ अने ग्राहामृग - - -	६६	22
६६ शिवाळ अने गधेडो - - -	१५२	299
१२२ शिवाळ अने नांकडुं - - -	२०६	159
१६६ शिवाळ अने शाळुडो - - -	२६४	326
१७७ शिवाळ अने दीपडो - - -	३०६	282
१८२ शिवाळ अने मांदरो सिंह -	३१३	240
१८६ शिवाळ अने वाघ - - -	३१६	91
१८७ शिवाळ अने मुखवटो - - -	३२९	135
६६ शीतळवाघु अने सूर्य - - -	१५७	76
११६ शेखीदार प्रवासी - - -	१६८	129

शु

स

११३	सकाम सिंह	- - - -	१८५	118
१०६	समली अने कोळी	- - - -	३०६	222
६०	ससलो अने काचवो	- - - -	८०	269
८४	ससलो अने देडकां	- - - -	१३९	64
१२४	सागनशाड अने कांटांशाड	- - - -	२१०	144
४	साप अने रेतडी	- - - -	४	42
५८	साप अने साखस	- - - -	७७	264
११६	सावर अने वच्चु	- - - -	१६२	122
६७	सावरी पाणीमां जातीहतो	- - - -	६२	13
१२	सिंह अने चार बळद	- - - -	१३	93
२४	सिंह अने देडकुं	- - - -	२६	142
३५	सिंह अने बकरो	- - - -	३९	141
८२	सिंह अने उंरर	- - - -	१२७	56
८७	सिंह अने पगु	- - - -	१३७	10

सिंहण

११४	सिंहण अने शिवाळखी	- - - -	१८७	120
१५०	सिंह, रींछ, अने शिवाळ	- - - -	२५६	238
१५२	सिंह गधेडो अने शिवाळ	- - - -	१६३	244
७२	सुहर अने गधेडो	- - - -	१०४	25

ह

१७८	हरण अने झाखना वेला	- - - -	३०८	288
१८६	हरण अने सिंह	- - - -	३२३	320
४७	हंस अने बगलां	- - - -	६९	232
११	झोटांशाड अने न्हांनांशाड	- - - -	१२	89

समाप्त

कुतरो अने तेनुं प्रतिबिंब

एक कुतरो ह्योमां सांसनो कडको घालीनें
दी उतरीनें, पेले तीरे जतो हतो. तेणे पोतानी
घाया पाणीमां दीवी, त्याहे तेना मनमां आयुं जे,
आ कोई बिजा कुतरो सांसनो कडको लेईनें जा
ता हे. ते ऊ एनी पासेथी खुंची लेऊं, एवो विचा
र करीनें पोतानुं ह्यो उघाडीनें लोभथी ते लेवा
गथो. तो ह्योमांनुं सांस पाणीमां पडु ते तळे बे
ठी, ते फरीनें एनें मथ्युं नहीं.

सार

परमेश्वरे आपणनें जे आयुं तेमां संतोष न मा
नीनें, जे पुरुष विजानुं लेवानें दळे हे, तेनें ते न स
ळे अनें पोतानी पासे ह्याय ते पण जाय.

(२)
वात २

बळद अने देडकां

एक बळद बोडमां चरतो हतो, त्यांहां न्हानां न्हानां देडकां फरतां हतां, तेओमांनुं एक देडकां बळदना पगतळे चंपाईनें मरी गयुं, ते वात विजे देडके घेर जईनें पोतानी मानें कही, अने वळी बोल्युं जे सा एवडो छोटा जीव अहो कोई दिवसे दीटो नहोतो. ते सांभळीनें देडकी पोतानुं पेट घणुं फुलावीनें ते प्रत्ये बोलवा लागी, जे ते जीव आवडो छोटा के, देडको बोल्यो, सा एकरतां घणोभोटो के. फरीनें तेथी वत्तुं पेट फुलावीनें देडकी बोली, आटलो के. ते बोल्यो सातुं पेट फुटे एटली फुले, तो पण तेना जेवडी थाय नहीं. ते सांभळीनें गर्बे करीनें घणुंज फुलवा लागी, एटलानां पेट फाटीं गयुं अने मरी गयो.

सार

गरीबे, पोतानी शक्ति प्रमाणे खरच करवुं. श्री

संतनी

(३)
संतनी बरोवरी करवा जाय तो देडकीनी पेटे मारी जाय.

—०*०—
वात ३

शियाळ अने द्राळ

एक शियाळ भुखे पीडाएलं करतुं करतुं द्राखना मांडवा तळे आयुं उरुं जोरुं एटली सारि पाकेली द्राखोनां लुंनखा खटकनां बीडां, पण सांडवो उंचो साटे हाथनां आवतां नथो, बालो कुतकारा मारीमारीनें घावुं पण एके द्राख हाथसां आवी नहीं. छेली वारे लगार वेगळं जईनें द्राखो सांगुं जोईनें केहेके, आ द्राखो जे लेहे ते ल्या, पण जंतो काचो अने खाटो जाणोनें सुंकांनें जाऊं कुं.

सार

कोटलाक पुरुष एवा होयके जे तेनें हाथ जे वस्तु आवे नहीं. ते उपर काई दोष मेहेलोनें पोतानी हलकाई देखाडता नथो.

वात

साप अने रेतडी

एक साप लव्हारनी दुकानमां जईनें, काई खा
वानुं जोवा सार उंचे नीचे डोखतो हतो, तेणे ए
क रेतडी दीठी, तेनें खावा गयो. ते वखत रेतडी
तेनें तिरस्कार करीनें केहेके. अरे मूर्ख तुं छाने अ
डीश नहीं, शमाटे जे ऊं लोहोडुं अने तीखाने
खानारी, ते छाने चावीनें तारा दांत मात्र पडशे.

सार

सांमानुं सामर्थ्य जोईनें तेनें उपद्रव करवो, प
ण जेनें सर्व लोक माने के, अने जेनुं कहुं सांभ
ले के, अनें करे के. तेनी साथे विरोध करीये
तो तेमां आपणुं तज नाश घाय. तेसज डाहापण
ना जोरथी छोटा माणसनी चेष्टा करीये तो, ते
मां आपणुंज मूर्खत्व मात्र दीसे.

बात

हतो, ते ते कलत्रलाट सांभळतांवांत हाथमां ए
क कोहोवाडो लेईनें आयो, तेणे एक घाये सा
पना बेकडका कर्था. अनें घा मारती वखत
सापनें कहुं. अरे दुष्ट जेणे तारो जीव उगार्था,
तेनो उपकार आयो गणऊ. हवे तनें मारवो
योग्यहे. पण हे महापापी, तारा अपराधनें ए
कखा मरण करतां काई बत्ती शिक्षा जोईवे.

सार

जे पोतानुं साहं करनारनो घात करे, अपवा
जेनुं अन्न खाथ के तेना उपर दगो करे, ते छत
प्र महापापी मुशो सारो, तेनुं छो जोईये नहीं.

—*—

बात ७

पर्वत वाहातो वखत दुःखी आयहे.

कोई एक पर्वत, ऊं बाळुं एवं डोळ घाली
नें, घणो कष्टित अईनें नरका पाडवा लाग्यो.

ते

ते सांभळीनें आस पासना सर्व लोक एकठा ब
घा. अनें पर्वतना पेटमांथो कांई सारी छोटी
वस्तु नीकळणे, एवं जाणनें घणोवार सुघो छोटी
आशाये वाट जाता हता. हेलीनारे एक उरर
कुत्कारो मारीनें बाहेर आये.

सार

कौटलाक पुरुष छोटा राज्यना अधिकार उ
पर रहीनें, अहो कै प्रकारे लोकानं कल्याण क
रीशं, एवं डोळ घालेके, लोक पण तेनं डोळ जो
ईनें तेना उपर घणो विश्वास राखेके. हेलीवा
रे ते अधिकारी पोताना स्वार्थ साधीनें लोकानं
कांई सारं करता नथी.

—*—

बात ८

अरण्य अनें लाकडां कापनारो

एक लाकडां कापनारो अरण्यमां गयो. त्यां
हां आस पास जोईनें दुःख पामवा लाग्यो. त्यां

३

बात ९

शियाळ अनें बकरो

एक शियाळ पाणी पीवानें वाव उपर गयं. ते,
मांहे पद्य. तेणे बाहेर नीकळवानें घणो बार सु
धी अम कथी, पण कांई लाग फाथो नहीं एट
लामां एक बकरो त्यांहां आये, तेणे तेनें पुच्छं
अरे आ पाणी सारं के शियाळ उत्तर करेके भा
ई सारं ते केवुं कळ, ए अमृत सरखुं मीठुं हे. पी
तां पीतां छानें ततो ज घती नथी. ते सांभळीनें
बकरो पाणीमां भुसको मार्यो, तेनां शींगडां छोटां
हतां, ते उपर शियाळ तरत पण नेहेलीनें कुदी
नें वावनी बाहेर नीकळीनें गयं. पक्षी बकरो
उपकां खातो खातो मरी गयो.

सार

लोक जेजे करेके, तेमां पोताना स्वार्थनें जु
एके, विजाना हित सारं उद्योग करनारा एवा

पुरुष

३

पुरुष तो थोडाज. माटे जो कोई काई लाभ देखाडे ते मनुष्यनी साचाई प्रथम चीज पक्की स मज्या विना तेना बोलवा उपर विश्वास राखवा नहीं.

—००*००—

बात ६

गामडोयो अने साप

एक गामडोयो कणवी टाहाडना टाहाडामां वाडा मां काम करतो होता. त्यांच्या वाड आगळ पडेलो एक साप तेणे दीडो. ते टाहाडे करीने घणो व्याकुळ, अद् घडोये, अथवा घडोये सरनार, ए वो जोईने कणवीने दया आवी. पक्षी ते सापने लोईने घरमां शगडी आगळ मेहेल्यो. त्यांच्या शे काधो, एटले दग पांच पळे ऊंशियार थईने, उं चो थईने, फुफवाडा मारवा लाग्यो. अने कण वीनां वाडडी छोकरांनी उपर दोडवा लाग्यो. त्यारे ते मनी दोडारोड थयी. कणवी वाडां

हता,

र झाडोये तेने पुच्छां. तारे शुं जोईये छीये. ते णे ऊत्तर कर्थो ह्यारा कोहोवाडाने हाथो नथी, ते जो न्हानो सरखो एक लाकडानो कडको गळे, तो सारुं थाय. ते वखत सर्व झाडाये मळीने पि चार कर्थो. अने तेनें एक सारो चीकणो आं वलीना लाकडानो कडको आप्यां. लाकडां का पनारे ते कोहोवाडाने घालीने, न्हानां छोटां झाड सघळां काप्यां, त्यारे सागनें वृक्ष विजां झाडनें केहेके. भाईयो आपणे आपणे हाथे आप णो नाश कर्थो, एमां पिजानो थांक नथो.

सार

शत्रूनी दया जाणोनें जे तेनें सहाय थाय छे, ते छेलीवारे संताप पानेके. शत्रु उपर उपकार करवा तो तेना अन्यायनी क्षमा करवा, एमांज छोटापणं छे. पण जेणे करीने शत्रु बळवान् थईनें उलटो आपणनें उपद्रव करे, तें कर्थांमां आप णी मूर्खाई प्रसिद्ध थाय छे.

बात

३

घोडे अने सावर

एक घोडे अने सावर, एक खेतमां नित्य एकठां चरतां. एक रिवस वेजणांनी बोलाचाली यची. सावरे पोतानां शींगडानें जोरे घोडानें खेतर वाहेर काहाडी मेहेल्यो. त्वारे सावरनें शिक्षा करवी, माटे घोडे माणस पासें गयो. अने पक्ष करे माटे प्रार्थना करी. त्वारे माणसे तेनी पीठ उपर खोगीर घाल्युं, अने ह्योमां लगाम घाली, अने उपर चढीनें वेठो. फेरवी जोतां कुला उपर वे चार फटका पण मार्या. घोडे ते सघळुं सहीनें माणसनें हाथे सावरनें हराव्यो. पक्षी माणसनें केहेके, हे भला माणस द्धारुं काम थयुं, जं तारो घणो उपकारी घयो, हवे आ लोगीर अनें लगाम काहाडी ले, अने ह्यनें रजा थाय. ते सांभळीनें माणस बोलेके, आई तं आबो कामनो के एहीं जाण्युं नहोतुं. हवे तं आ

बंधनथी कुटीश एवं ह्यनें सुजतं नथी.

सार

एकनें शिक्षा करवा सार विज्ञानें शरण जवा मां घणो विचार करवो. एकादि वखत जवरा ना हाथ तळे आव्या, तो फरीनें कुटा थईशुं एनो भरुंसा नहीं.

—*—

बात १०

वाघनो वेश लेनारा गधेडानी

एक गधेडानें वाघनुं चामडुं जडुं. ते तेरो शरीर उपर ओडुं. पक्षी ते अरण्यमां अथवा चरवानें ठेकाणे गयो. त्यांहां भयथी सर्व जनावर एनें जोर्डनें नाशी जाय, एक वखत तेना धणी आव्यो. तेनें पण ते बौद्धिवरावा लाम्यो. त्वारे तेना लांबा कान जोर्डनें धणीचे ओळख्यो, जे थातो आपणो गधेडो के. पक्षी तेणे हाथमां एक सो

टो लोईनें गधेडानी सारी पेडे शिक्षा करी, अनें
तेनें कहां जे वाघन चामडुं ओखुं छे, तो पण ऊं
खरुं जाणुं छुं, जे तुं गधेडो छे.

सार

जेनें योग्यता न होय ते खरानो, अथवा जा
णपणानो, अथवा साधु पणानो वेग ले, ते दुर्बल
अज्ञानी लोकोनें मात्र ठगे, पण जाणतानी साथे
गांठ पडो होय, तो ते तेना स्वरूपनें ओळखीनें
उपहास्य करे.

वात ११

छोटां झाड अनें न्हानां झाड

एक छोटां झाड नदीनी तेडे हतुं ते घणा वाना
झपाटाथी उखडीनें नदीना प्रवाहमां तणाइ जतां,
तेनां डाळां नदीनें किनारे न्हानां झाड हतां तेम
नें घसाईनें गथां, पण ते झाडोनें कांई दुःख थयुं
नहीं. त्वारे ते छोटां झाड आश्चर्य पासीनें ते न्हानां

बां

नां झाडनें केहे छे, अरे तमे ते वाना झपाटामां
थी क्यम जगयां. जे वागे. ह्यारा सरखां पण
झाड मूळमुधां उखेडो नांख्यां. त्वारे न्हानां
झाड उत्तर करे छे. वावा आपणी बेनी रीती जु
दी जुडी छे, अहो वा आवे छे त्वारे तेनें नसी
थे छीये, जाणीयेछीये जे बळवाननी आगळ आप
णुं कांई चालामे नहीं. अनें तुं तो पोताना बळ
उपर भरसो राखीनें अकडार्दीथी, उभोज रहे छे.

सार

जेगी साथे आपणुं चालनार नहीं, तेनी साथे
नसीनें चालवुं, त्याहां गर्व राखीये ए गांडापणुं.

वात १२

सिंह अनें चार बळद

चार बळद सार्द बंधाई करीनें एक ठेकाणे च

रता

रता हता. इनमें एकमेकानें खिला न सेहेलता. एवानां एक सिंह तेमनें नित्य जोईनें मनमां विचार करवा लाग्ये. जे आमांघी एकादो एा घानें मळे तो साहं थाय. ते सिंह एक एकनें सारवानें समर्थ हतो. पण चारनो एक जोड जाणनें तेमना उपर जवानें तेनी हांस चाले न हीं. त्यारे केडलाक दाहाडासुधी वेगळेशी ता कतो हतो, पण काई लाग फावे नहीं. छेली वारे तेनें निश्चय थयो, जे जहां सुधी आमनो ए कोडे. त्यांहां सुधी झारुं काई चालनार नथी, माटे हवे एक एकनीं चाडी एक एकनें कहीनें एमनामां फूट करावी. पछी तेणे तेवुं कथ्युं, ए टले ते वळइ मांढोमांहे द्वेष करवा लाग्या. अ नें छेलीवारे जुरा पड्या. पछी एक एक वळइनें सारवानां सिंहनें काई अम पड्यो नहीं.

सार

एक वित्त के, त्यांहां सुधी शत्रूनें काई चाले न हीं, एवानुं एवं माहात्म्य के. माटे ते एका चाडी सांभळीनें अथवा शत्रूनी वातो उपर मन राखीनें तोडवामां लांवे विचार करावे.

बात

बात १३

माणस अनें सिंह

एक अरण्यना रेहेनारनें एक सिंहनी साथे गां ठ पडी. ते वे जगानुं घणीवारसुधी अरसपर स बोलवुं थयुं. ते एक एकनुं घणुं करीनेंमान ताज मथा, पण छेलीवारे माणस अष्ट के सिंह अष्ट, ए उपर बात नोकळी. त्यारे वे वढवा ला ग्या. माणसनें पोतानुं बोल्युं खरुं करवानें कां ई उत्तर सुजे नहीं त्यारे तेणे तेज ठेकाणे वे पु तळां सिंहनें देखायां. ते एक आरस्याहाणना चोतरा उपर बेसायां हतां. अनें तेमां एवं देखा ड्युं हतुं, जे सिंहनी चोटली झालीनें माणस ते नाउपर बेटो के. ते जोईनें सिंह बोल्यो, थयुं, तारुं साधन तो एटलुंज के, हवे झारुं सांभळ. जे सलाटे आ पुतळां कथीं के. ते माणस हतो, सलाट जो सिंह होत तो, तुं अहीयां एज उळ टुं देखत.

सार

स्वर्धीं के ते पोतानी पक्षना लोकोनां वचन प्रमाणसां आगळ करीनें, पोतपोतानुं खरापणुं हे खाडे

खाडे के. साटे यदि प्रतिवासीनां वचन सांभल्या
विना, एकादि बातना सिद्धांत करवो नहीं.

—*—

बात १४

देव अने गाडीवान

एक मूर्ख गाडीवान गाडुं हाकीनें खेई जतो
हतो. ते एक टेकाणे परईडां कचरासां भराई
नें अटक्युं. एवं जे बाहेर काहाडवानें बळदनुं
पण सामर्थ्य चाले नहीं. ते जोईनें गाडावाळे दे
वनी प्रार्थना करी. हे देव ऊं दीन कूं, छानें आ
संकटमां सहाय था, एटलुं सांभळतांज देवे आ
काशमां आवीनें जायुं. तो गाडावाळो असधो
ज वेढो के, अनें दीन वाक्य बोले के, ते जोईनें
तेनें देव केहेके. अरे मूर्ख, तूं आळशी सरखो
खस्य वेशी रहीश नहीं. उठ अनें बळरोनें सा
री पेढे हांक्य, अनें तारा खभानो टेको परईडांनें

दे,

दे, एटले ऊं तनें सहाय थईश. तारे छारी सहाय
ता जोईतो होय तो एवो उद्योग कर, पछी गा
डावाळे तेवुं कयुं, एटलेज गाडुं कचरासांथी वा
हेर नीकय्युं.

सार

उद्योग करीनें जे देवपासे सहायता मागे के,
ते नेज ते मळे के, पण निरुद्योगीनें मळतो नथो.

—*—

बात १५

मनुष्य अनें हंसी

कोई एक मनुष्यनी पासे हंसी हती, ते नित्य
एक एक सोनानुं इंडुं मेहेलती. ते लोईनें ते मा
णसनी आशा ओछी थई जोईये. ते वत्तीज थ
ती गयी, अनें तेना मनमां आव्युं. जे ज्यांहांथी

आवां

आवां ईंडां नीकळे के. ते डेकाणुं हाय आवे तो घणुं द्रव्य एकीवारेज मळे, पक्षी ते मनुष्ये ते ह सीनुं पेट चीरुं, अनें जीवा लाग्यो तो मांहेथी कां ईंज नीकळुं नहीं. अनें घणो संताप मात्र थयो.

सार

परमेश्वर जेनें खावा पीवा जेटळुं यथास्थित आपेके, तेनें द्रव्यनो संग्रह करवो हाय, तो ते मांघीज थोडुं खरच करीनें करवो. अनें एवं न करीनें जे घणो लोभ राखे के, अनें एकीवारेज श्रीमंत पवानें एकादुं छोटां कारस्थान करवा जा थके, तेनो उद्योग निष्कळ घईनें पोतानुं असल नुं होयके ते पण जायके.

वात १६

कबुतर अनें कुकडां

कोई एके, एक कबुतर झाल्युं तेनी पांखोमां नां कांई पोछां उखेडीनें, जेसां कुकडां घाल्यांह

तां,

तां, ते खडासां तेनें मेहेल्युं. त्यारे त्यांहां कुकडां ये तेनें क्षणे क्षणे चांचो मारवा सांडी, चारा उ परथी हाकी मेहेले. एवं तेणे कोटलाक दाहाडा सुधी सह्युं. एम कोटलाक दिवस काहाडीनें म नसां निश्चय करीया, जे पोतानें घेर आवेला परं णानें सुख नथी देता, अनें उळटा तेनें पोडा क रेके. माटे ए ग्रहस्थ नथी, छोटा निर्दय शठ के पक्षी तेणे एवं दीठुं. जे ते कुकडां दस पांच वार मांहोमांहे लढीनें एक एकनें मारवा ला ग्या. त्यारे कबुतरे विचार करीया. अनें मनसां समाधान पाळ्यो. जे अरे जे पोतानी जातीनें उ पद्रव करवामां चूकता नथी. ते झानें पारका नें करे के एसां शुं आश्चर्य.

सार

जे लोक, पोतानी जातीमां कळह करीनें ए क एकनें उपद्रव करेके, ते बिजी जातीनानें उ पद्रव करे, तेसां तेणे कांई खेद जाणवो नहीं.

वात

वात १७

कस्तूरीयो मृग

कोई एक जातीना मृग है, तेनी नाभीमां कस्तूरी थाय है. माटे ते नजरे पड्यो होय तो, केटलाक लोक तेनी पछवाडे अर्द्धने, तेने मारीने कस्तूरी काहाडी लोके. एक वखत एवो एक मृग नामे है, अने तेनी पछवाडे कुतरां अने पारधी लाग्याके. ते वखत हरणने प्राण संकट आयुं. जीववानो उपाय सुजे नहीं. एटलामां तेने विचार सुज्यो, जे आ मारनारा कस्तूरी माटे हाने मारवाने इकेके, विजुं काई कारण नथी. माटे तेटलो काहाडी नाखुं, तो सुखी थाजं. पक्षी तेणे धैर्य राखीने कस्तूरी काहाडी नाखी, एटले संकट मांथी कुटो.

सार

एकनी पछवाडे एक लागेके, पण तेने घणं

करीने

करीने लोभ विना विजुं काई कारण नथी, माटे जारे एवो प्रसंग पडे, अने विजो काई उपाय चाले नहीं. त्वारे एवं करवुं, जे वस्तूना लोभे करीने दुष्ट आपणने दुःख देवा इकेके, ते वस्तूने नाखी देवी, अने शोभा राखीने आपणो वचाव थाय ते करवुं. शोभा रहे अने सर्व वस्तूनी हानो थयो ते हानो एम मानवुं नहीं.

—*—

वात १८

माछी अने माछलां

एक माछीये नदीमां गळ नांख्यो तेमां एक माछलुं आयुं. ते बाहेर काहाडीने टोपलीमां नांखे है, एटलामां ते माछले तेनी प्रार्थना करवा मांडी. हे धर्मात्मा, तं कृपा करीने ह्यने पाखो नदीमां नांख. माछीये पुच्छं, अरे जं तारा उपर एटलो उपकार कां करुं ते केहे, माछलुं के

हेके,

६

हेके, ऊँ न्हानं बालक कुं, माटे तेवो अज तारा
काममां नही आवं, जेवो छोटा थया पक्षी का
ममां आवीश. माळी बोल्हो हा ए वात खरी,
पण ऊँ मूर्ख नथी जे हाथमां आवेलुं नांखी देई
नें आववाना उपर आशा राखीनें बेसुं.

सार

जे आमळनें भरुंसे हाथमां आवेली वस्तू नांखी
दे, तेनां बेउ जाय, नमळेली वस्तूनी आशा करी
ये, तेमां कांई खोटुं नथी. पण तेनें भरुंसे आ
बेली वस्तू नांखी देवी ए घणुं करीनें संतापनें अ
र्थ के.

—*—

वात १६

बे देडका

कोई एक समये छोटा उन्हाळो पड्यो. त्या
रे तळाव, वायू, कुवा, सर्व सुकाई गया. ते बखत
बे देडका पाणीनो शोध करता करता, एक वा

व्य

व्य आगळ आव्या. ते घणी उंडी हती, तेना कां
ठा उपर बेशीनें अरस्परस विचार करवा ला
ग्या. जे चामां भुसको मारवो के नही, एक के
हेके मारवो, शामाटे जे पाणी उंडुं के. माटे
तळे पाणीनो इह हशे, ते पाणी खुटणे नही. अ
नें कशी वातनी अडचन नही पडे, त्यारे तेनें वि
जो उत्तर करेके, अरे तुं केहेके ए सघळुं खरुं, तो
पण आ जीव उपरनी वात के माटे तारा विचा
रमां ह्याराथी हा केहेवाती नथी. शामाटे जे
आ वायूमां जो पाणी नही होय तो केहे, वा
रु पाशा बाहेर कम नीकळीशुं.

सार

एकादुं दुर्वट काम करता पेहेलांज पेहेलो वि
चार करी मेहेलवो. जे, जो कदाचित् तेमां फ
आ तो आ मार्गे आपणो नभाव थशे.

वात

बळद अने वकरो

बाघ, पळवाडे पड्यो हतो, माटे एक बळद जी व लेईने नाटो, ते एक गुफामां पेसवा सघो. त्यां हां एक वकरो हतो, ते तेनें सांहे जवादे नहीं. अने केहेवा लाग्यो के आ च्छारुं घर के, एमां तुं आवीश तो तनें मारीश. बळदे घणा काला वाला कर्था जे अरे च्छारी पळवाडे आ बाघ लाग्यो के, ए समयमां तारी यहस्थार्इने घटेके जे च्छाने आश्रय आपवो. वकरो कांई तेनुं कहुं सां भळे नहीं. शींगडा सामां करीने सांमो मारवा जायके. त्वारे बळद तेनें केहेके, अरे ऊं तारा थो अनें तारां शींगडांथो वीहितो नथो, पण शुं करुं. जो आवखत च्छारी पळवाडे बाघ न हो त तो, बळदनी अने वकरानी योग्यतामां कोटलो मौर के, ते ऊं तनें तरतज चमत्कार देखाडत.

कोई सकटनां होय तेनें सहाय न घईये, ए मनुष्यनें योग्य नथो. पक्षी सहाय न थईये, अनें तेनें तिरस्कार करीये, अथवा कांई उपद्रव करीये, अथवा तेना दुःख उपर डाघ देईये, ए सखुं पाजी पणुं बिजुं शुं के.

—*—

बलाडो अने उंदर

एक घरमां उंदर घणा थया हता. ते घरमां एक बलाडुं आयुं तेणे तेमांना केटालाक उंदर खाईनें ओझा कर्था. ते जोईनें एक शिबस बाको रहेला उंदर एकटा अईनें, तेमणे निश्चय कर्था जे, आपणे कोईये उपरथो हेठे जवं नहीं. ते दाहाडेथो बलाडाने हाथ उंदर आवे नही माटे. भुखे मरवा लाग्युं. त्वारे तेणे एक खुंटीये पोतानो

पग बळगाडीनें मुएलानें वेश लीधो. ते जोई
नें उपरयी एक घयडो उंदर ते प्रत्ये बोल्यो. भा
ई तं सुखे टंगाई रेहे. एतो शुं, पण तारुं पेट चोरी
नें मांहे पराळ भयुं छे, एवं जो तनें देखोये, तो
ये हवे तारो विश्वास करीये नहीं.

सार

पापी, कपटी, ठग, एमनां मोटां वचनानें खरां
मानेछें, माटेज लोक ठगायछे, पण तेमनुं स्वरूप
ओळस्थं. अनें ते लुचो एम मनमां जेणे दृढ नि
श्चय करीया. तेनें ते वचारो शुं ठगणे.

—*—

वात २२

शियाळ अनें कांटा

कोई एक शियाळनी पछवाडे कुतरां लाग्यां
हतां, माटे ते नाटुं, ते एक बाद्य कुदतुं हतुं, ते
मां एक कांटानुं झांखरुं हतुं, तेनें वळगुं. एट

ले

छे हाथ पगमां कांटा भराई गया. अनें दोडतां
अटक्यं, त्यारे ते कांटानो निंदा करीनें केहेहे, अ
रे ग्रहस्थ जं तारो आश्रय धारीनें आयुं, ते तं द्वा
रा उपर आवुं निर्दय पणुं करछ. ए तनें यो
ग्य नथी. कांटानुं झांखरुं उत्तर कोछे; अरे ते
मनमां धार्थुं हतुं, जे, जं एनें वळगुं, अनें ए कां
ई बोले नहीं, अनें जे करुं ते सेहे. तो आज
पछी खरुंज समजजे जे वळगवुं एते अद्धारोज
धर्म छे. माटे हवे कदी कांटानां झांखरानें रक्षे
जईश नहीं.

सार

दुष्ट छे ते, विजानें उपद्रव करवानें जायछे,
पछी ते तेनाकरतां सवाई होय, तो तेनेंज उळ
टो पेचमां आणे. त्यारे ते तेनी निंदा करे, अ
नें केहे, जे जुगो आ ग्रहस्थनें अमनें आवुं कर
वुं घटे छे. पण पोताना मनमां एवं समजता न
थी. जे विना अपराधे अत्तो लोकोनें उपद्रव क
रीये छीये, तो एलोक अद्धारो जीव लेता नथी,
एज तेमनुं द्योडपणुं.

वात

(२८)

वात २३

पारधी अने पक्षी

कोई एक पारधी पक्षी झालवाने जाळ बांध
तो होता. त्यांहां पासना झाड उपर एक पक्षी
बेटुं हतुं. तेणे पारधीने पुच्छुं. अरे वावा तुं आ
शुं करछ. पारधी उत्तर करेछे. आ तमारे प
क्षीने रेहेवाने माटे सेहेर करुं छं. आमां जे प
क्षी आधीने रेहेणे, तेने कशी वातनुं दुःख पड
नार नथी. अहोथां चारो के, पाणी छे, रेहेवा
ने वासो सारां सारां ठेकाणां के, सुवाने माटे सुं
हाळां अने ऊंफाळां एवां विळांनां के, सारी सा
री खीयो के, पक्षीये ते सघळुं एहं मान्युं. अने
पारधी ते जाळ बांधीने गयं, त्वार पक्षी ते पक्षी
तेमां आव्युं. ते जाळमां बंधायुं अने दुःख पा
मवा लाग्युं त्वारे त्यांहां घणां पक्षी आव्यां तेनें
ते केहेवा लाग्युं जे, अरे संभाळजो आ जाळ के
आमां ऊं अटक्यो के. अने पारधी तमनें मोह
मां नांखणे, माटे तमे तेनुं वचन एहं मांनशो न

हीं

(२९)

हीं अने विजां सघळां पक्षीयेनें आ समाचार अ
रस्परस जणाबजो. वे चार घडीये पारधी पाहो
त्यांहां आव्यो. त्वारे तेनें पक्षी केहेके, अरे ठग
तें छाने तो ठग्यो. पण हवे मनमां निश्चय सम
जजे जे, हवेथी तारा आ सुंदर घरमां विजो कोई
पक्षी आवनार नथी.

सार

धूर्तनें ओळख्यो नथी त्यांहां सुधी ते लोका
ने टगी जायके, पण एकवार तेना स्वरूपनुं ज्ञा
न थयं एटले पक्षी लोक तेनें परकांथे पण उ
भा रेहेता नथी.

—**—

वात २४

सिंह अने देडकुं

एक सिंह सरोवर उपर पाणी पिवाने गयो ह
तो, त्यांहां देडकानो शब्द सांभळीनें अचक्यो, अ

नें

८

नें चारे तरफ जौर्दनें सममां विचार करवा ला
ग्यो, अरे अहीयां तो कोई नजरे पडतुं नथी. अ
नें शब्द तो रहीरहीनें थाय के, ए शुं हशे, मा
टे भयधी कांपवा लाग्यो. पण त्यांहांधी नाशी
न जतां धैर्य राखीनें विचार करेके, एटलामां जे
बोलतो हतो, ते देडको सरोवर सांधी बाहेर नो
कव्यो. तेनें जातांमांज सिंहनें रीस चढी, जे आ
न्हानो जीव थर्डनें एणे मज सरखानें आवो गभ
राथो. पही तेवोज ते देडकापासे गयो. अनें
तेनें पगेवती चांपीनें मारी नांख्यो.

सार

भयनां कारण घणुं करीनें खोटां होयके. ते
जे अविवेकी अनें मूर्ख के, तेमनें उपद्रव करे
के. पण जे विवेकी के अनें धैर्य राखेके, ते ते
नुं मूळ खोळी काहाडे के, एटले जाण्यामां आ
बे के, जे आपणा मनविना विजुं कांई भयनुं
कारण नथी.

बात

बात २५

सिंह अनें बकरो।

एक सिंहे एक बकरो डुंगर उपर चरतां दी
डो. त्यारे त्यांहां पोतानी मती नथी. एवं जा
णीनें तेनें केहेके, अरे तुं आवे वसमे टेकाणे
आखो दाहाडे चरक. एमां तनें शुं सुख के. गो
थां खातो खातो एकाइ वार पडोश, तो जीव
खोईश, माटे छनें तो आ सारुं लागेके जे, तुं हे
डे आव. अनें आ मेदानमां कुळी कुळी घास
के अनें मोटां मोटां झाडनीं पांढडां के, तेखा ब
करो उत्तर करे के, बापा तुं केहे के ए बात
खरी, पण तुं भुख्या सरखो जगायके. माटे तुं
के ते टेकाणे ऊं आवीनें च्चारा जीवनें दुःखमां
नहीं नांखुं.

सार

जे पुरुष बुभुक्षित के. अनें जेनुं लोकमां प्रा
माणिक पणुं नथी. एवे, कांई आपणा हितनी

बात

बात कही ते आपणने खरी सरखी लागी, तो पण तेना उपर विश्वास राखीये नहीं. तेमां कांई पण कपट हशे एवं जाणवुं.

—०*०—

बात २६

शिखाळ अने खहर

कोई एक खहर झाडना घड उपर पोतानी दाह घसतुं, हतुं त्यांहां एक शिखाळ आयुं. ते तेनें पुकेके, अरे तारा उपर कोई शत्रु चढाने आयो के, एवं तो कांई आसपास नजरमां आवतुं नथी. अने अमथो दाह घसक. एनुं कारण शं के ते केहे. खहर उत्तर करे के, भाई ते खरी बात कही. पण तं जाणक, नवरी वेळा पोतानां हथीधार घशी राखीये, ग्रामाटे जे संकट बलत नवराश मळशे एना शो भरसो.

सार

घरमां आम लागे त्यारे कुवो खोदवा नीकळे, स मूर्खनुं काम के. ज्यांहां सुधी बाळ पणुं के, अने

अने माथा उपर पिता के, संसारनो खटलो माथे पडो नथी. त्यांहां सुधामां विद्याभ्यास करवो, जेणे करीनें युवावस्थामां सुख थाय. तेमज युवावस्थामां ते विद्यानो अनुभव लेवो, इद्रोयो खाधीन राखवीयो, दुष्ट व्यसन न राखवुं, द्रव्यनो संग्रह करवो, जे, जेणे करीनें वृद्धावस्थाना दाहाडा सुखमां जाय. एवो विचार जे प्रथमथी करे के; तेनेंज सावधान केहेयो, तेज डाहायो, तेज माणस, अने तेणेज अकलनुं, सार्थक कथुं एम जाणवुं.

—०*०—

बात २७

वे कर्चलां

कर्चलुं एवे नामे जनावर होय के. तेनो खभाव एवो के. जे ते वांकुं चाले. कोई एक दिवसे एक कर्चली पोतानी छोडीनें रीस चडावी

नें केहेके. जे तं या जगतनी चालयो जुदी चाल
छेली दे. छोडी केहेके. मा च्छारी बुडी प्रभा
ए छाने खरी दीसेके, तेवी ऊ चाल चालं कुं.
तारी नजरमां ते जो छोटी लागती होय, तो ऊ केन
चालुं. ते तं छाने चाली देखाड, ते प्रमाणे ऊ चालुं.

सार

जे बातमां विजाने दूषण मेहेले के, तेज पोते
करे के. एथी विजुं शुं आश्चर्य. विजाने शिखा
मण देतां सर्वनें आवडे के. पण जे, ते उपदेश
प्रमाणे पोते चाले के, तेनें शाहाणो केहेवो.

—**—

बात २८

चार अनें होकरो

एक होकरो चोरनें जोर्डनें कुवा उपर रोका
बेटो. चारे तेनें पुछुं. शामाटे रुपके, त्वारे ते
होकरो डचकां खातो खातो केहेके, जे चारो रु

पानो

पानो छोटी देरी तुटी तेथी कुवामां पड्यो. ह
वे ऊं शुं कहं, छाने घर च्छारां मावाप मारणे.
ए सांभळीनें चारे ते वखत पोतानी गांसडी अनें
पेहेरवानां लुगडां कुवा उपर मेहेल्यां. अनें कुवा
मां उतरीनें घणी वार सुधी लोटो खोव्यो. पण
जड्यो नहीं पछी आशा मेहेलीनें उपर आयो.
अनें जएके तो होकरो देखातो नथी. अनें गां
सडी, लुगडां, एपण नथी. ते, ते होकरो लोर्डनें
नाशी गयो.

सार

चार विजाने लुटे के, माटे तेणे एवं जाणवुं न
हीं जे छाने लुटनार कोई नथी.

बात २९

चार अनें कुतरो

कोई एक मनुष्यना घरमां खातर पाडवाने रा
ते चोर आव्यो, तेनें जोर्डनें वारणा आमळ कुत

रो

रा हतो, ते चोरनें सांभो भसवा लाग्यो. त्वारे चारे तेना आगळरोटलानो कडको नांख्यो. ते कुतरे खाधो नहीं. अनें केहेके जे, अरे पेहेलां तो छाने संदेह हतो जे आटली राते अहींयां आ व्यो के, माटे कोई भलो नहीं होय. पण हवे तो ते छाने लांच आपी एटले निश्चय थयो. जे तुं चोर के माटे ऊं वारणा आगळ रहीनें ह्या रा धणीनं घर राखीश. वास्ते आ घरनें आस पास तुं के, त्यांहां सुधी ऊं आवोज भशीश, एमा संदेह नहीं. माटे तुं तारे सांगे चाल्यो जा.

सार

काम करनारा होय के, ते मूर्ख थयवा स्वा धीनें लांच आपीनें वश करेके. पण जे ह्योटुं मा णस, प्रामाणिक, अनें स्वामिभक्त के, ते लांच ले ईनें वश थता नथी.

बात

बात ३०

बकरी अनें कुतरी

एक समये बकरी अनें कुतरी एमनो मेळाप थयो. त्यांहां वेहेलं कोण व्हायके, ए वातनो मां होमांहे वाद थयो. त्वारे कुतरी केहेके, ऊं ए क एक खेपे घणां बच्चां व्हाऊं छूं. अनें छाने व्हावामां घणा महीना पण थता नथी. बकरी बोली ते खरं, पण तुं व्हावामां दर खेपे घणी उ तावळी थायके. माटेज तारां बच्चां आंधळां पे दा थायके. तेवां ह्यारे थतां नथी.

सार

उतावळमां जे काम करीये, ते काचुं रेहेके.

—*—

बात ३१

शियाळ अनें गामडीथो

एक शियाळनी पडवाडे पारधी पड्यो, त्याहां ते

त शियाळ दोडतां दोडतां घाक्यं. त्यारे रत्तामां
 एक गामडीयो उभो हतो, तेनें जोईनें ते शियाळे
 तेनी प्रार्थना करी, जे छानें तारा झुपडाभां संता
 वारे, गामडीयो केहे संता, पक्षी शियाळ तेना झुप
 डाना खुणामां संताय, एटलामां पारधी पळवाडेश्यो
 घायो, तेणे ते गामडीयानें पुळ्युं, ते अहीयां ये
 नें एक शियाळ जतां दीठुं. गामडीयो बोळ्यो, ना.
 एम छोडे बोळ्यो मात्र पण शियाळ संतायुं. हतुं. ते
 टेकाणुं आंळीवतो सांनें करीनें देखाडुं पण पार
 धी तेनी सान न समजतां चाल्यो गयो, ते गयो प
 क्षी, शियाळ हळुवे रहीनें नीकळीनें जवा लाग्युं. ते
 वखत गामडीयो शियाळनें केहेके, अरे आवोज ता
 री रीत, जे जेणे तारो प्राण वंचायो, तेनें पुळ्या
 विना जायके. शियाळे तेनुं दय दीठुं हतुं. ते
 मनमां धारीनें ते जवाप करेके. भाई तारा बो
 लवा प्रमाणे जो तारी कृति हेत, तो तारो उप
 कार वाळवानें ऊं चुकत नहीं.

सार

कोटलाक नीच एवा होयके, जे उपरधी बोलवा

सां

मां आप्त सरला जणाय, अनें मनमां नाश करवा
 नो उद्योग करे. उघाडो शत्रु होय, ते सारो पण
 पोतानो थईनें मांहेथी शत्रुनुं काम करे, ते हित
 शत्रु जाणवो. विश्वास घाती, महापापी, नीच,
 तेनुं छो जावुं ए योग्य नहीं.

—*—

वात ३२

माणस जेनें कुतरे करड्यो हतो

एक माणसनें कुतरे करड्यो. तेनें एक डो
 शीये उपाय बतायो जे रोटलानो कडको लेईनें
 वा उपर बांध. पक्षी ते कडको ते कुतरानें खव
 राव. एटले झेर उतरशे. पक्षी ते माणस ते
 प्रमाणे करेके, एटलामां एक डाहायो पुरुव ते
 मार्गे जतो हतो, तेणे तेनें पुळ्युं. अरे तुं आशुं क
 रळ. त्यारे घाथेले ते वर्तमान कहुं ते सांभळी
 नें डाहायो केहेके. जो एवुं के तो ऊं तारी पा

से

से आटलुं मागी लेजं हूं. जे आ तुं घणं छानं
कर, शमाटे जे जो आ ब्रात सेहेरनां कुतरां जा
णशे, तो एक माणसनें करड्यावना रेहेना देशे नहीं.

सार

घोरनें शिक्षा करवी ए योग्यहे. अनें ते न
करतां तेनी उळटो सेवा करे, तो ते छानो कर
वी. नहीतो शाऊकारनी शोभा रेहे नहीं अनें
घोरमंज माहात्म्य वधशे.

वात ३३

दैव अनें होकरो

एक होकरो कुवाना कांठा उपर सुतो हतो,
तेनें जोईनें दैवे जगाड्यो, अनें कहां. अरे तुं आ
कुवाना कांठाउपर सुतो हे. अनें कदापि कुवा
मां पडीश, तो लोक तारो अन्याय नहीं केहे.
तो झाराउपर दोष मेहेलशे.

सार

सार

सर्व लोकोनी एज रीत हे. जे एकादि वात
सारी थघी तो केहेशे, जे अहो करी. अनें खो
टो थघी, तो दैवे करी. एवो दैवना उपर दो
ष मेहेले, पण पोतानो छतीनें दोष मेहेलता नथो.

वात ३४

लोभीयो माणस

कोई एक लोभीये माणसे पैसा पेदा करीनें ले
तरमां दाटो मेहेल्यो, त्यांहां नित्ये एक वे वार
जतो रेहे. अनें पैसा पुरेलुं ठेकाणुं जोईनें मन
न संतोष पामे. ते तेनुं छत्य चाकरे नजरमां आ
णीनें, ते उपरथी तर्क बांध्यो. जे आयणो धणी
आ ठेकाणे नित्य नित्य झुएके, माटे अहीयां कां
ई हे. पळी तेणे राते आवीनें ते ठेकाणुं खोशनें

जोयुं.

जायं. तो मांहेथी इथ हायमां आयं. ते लेईनें माशी गयो. बिजे दाहाडे लोभीयो नित्य प्रमाणे त्यांहां आवीनें जोवा लाग्यो, तो माहे दा टेलुं इथ हतुं ते गयं. ते जाणनें तेणे माथासां धूळ घाली, व्हाती कुटी, माथं कुट्यं, अनें हाय हा थ करीनें रोवा बेटो. ते कथने घेर जाय नहीं. व्हेली वारे तेना पाडोशी तेनी पासे आय्यो. तेणे समाचार पुच्छा. त्वारे लोभीये सर्व समाचार तेनें कह्या, ते सांभलीनें पाडोशी केहेके, अरे भाई जं एम जाणं कुं जे, तारुं काई गथं नथी, कां जे तं तारा मनमां एम आयिश नहीं. जे ह्यारीपासे पैसो हतो ते गयो. अनें आ ठेकाणे नित्य जोतो हतो तेस जोतो जा एवं धारजे, जे, जे दाव्युके ते के.

सार

लोभीयो के तेनें पैसो के तोपण दरिद्री जाणवो. शमाटे तेनाथी हते पैसे उपभोग यतो नथी, अनें वळी विजुं मेळववाने मरता सुधी के

प्रकारनां

प्रकारनां अनेक पाप निरंतर करे के. व्हेलीवा रे तेना पैसो चोर लेई जाय. तेना कपाळमां दुःख, शोक, संताप, अनें मुग्धा पळी अते नरक प्राप्ति थाय.

—*—

बात २५

कडकडता पयडानी

कोई एक गाडीवान रथ हाकतो हतो, ते रथनुं एक पयडुं घणुं कडकडवा लाग्यं. ते जोईनें गाडीवान विसय पास्यो. अनें पयडानें पुकेके, अरे विजां पयडां कडकडतां नथी. अनें तुंज कां कडकडे के. ते वोख्यं हानें घणुं दुःख थायके. ते ह्याराथी सेहेवातुं नथी, माटे रडवुं आवेके.

सार

जे दुःख सहीनें लोकीनें दीनपणुं देखाडता नथी, तेनें धीरजवान जाणनें लोक ते उपर घ

णी

णी प्रीति राखेके. अने जे हाय हाय करीने लो
को आगळ दीन बचन बोलेके, तेने लोकोपासे
थो काई मळतुं नथो. अने पोतानुं हलकापणुं
मात्र तेमनें देखाडे के.

—*—

बात ३३

डाहाया सिंह

कोई एक सिंहे जनावर मारुं, अने तेनें खा
मारो के, एटलामां ते रखे एक चोर जतो हतो,
ते सिंहना हो आगळ आवीनें सिंहेनें केहेके, अ
रे सिंह, तारे मारे अर्धी अर्ध, सिंह बोव्यो, अ
रे नफट अहीयां तारुं काई नथो, अने निर्लज थ
ईनें भाग मागना आव्योके; तो कानो सानो ता
रे मार्गे चाख्यो जा, नहीतो मार्यो जईण. पळो
ते चोर ओशीयाळो अईनें गयो, तेटलामां तेज
मार्गे कोई एक भलो साणस जतो हतो, तेणे सिं
हनें दीठो एटले विहीनें ते मार्गे मुकीनें विजे

मार्गे

मार्गे जवा लाग्यो. त्वारे सिंह तेनें आदरे करीनें
हाक मारीनें केहेके, अरे विहीण नहीरे, विही
ण नहीं; तुं भलो साणस के, साटे आमांधी भा
ग तारे जोईतो होय तो आव. हमणां आ ज
नावर आपण वे वेहेचो खार्दये; एवं कहीनें ते
सिंहे जनावरना वे भाग कर्या. तेनांनो एक भा
ग ते भलो साणसनें साटे राख्यो; अने विजो भा
ग पोते खार्दनें अरण्यमां गयो.

सार

डाहाया पुरुषनें ए योग्यके, के जे भलो, जे
गुणी, तेनें पासे राखवो; अने जे गळे पडोनें मा
गनारा, मोठुं मोठुं मारना, बळ बोला, दांड,
एवां मनुष्यनें आश्रय आपण नहीं. जे मनुष्य
अधिकार उपर के, तेणे तो गुणी मनुष्य सेळव
वा साटे घणोज अम करवो,

बात

१३

दीपडुं अने मांदी गधेडी

एक गधेडी मांदी पडी हती, ते सरये एवी वा
त उडी, ते सांभळीने वे चार दीपडां तेनी खर
र जोवा आख्यां. ते तेना बारणायां डोकां घा
लीनें हळवे रहाने पके के, जे बाईनी श्री खर के.
ते सांभळीने तेना झोकरा घरमांधी बाहेर आ
वाने उत्तर देके, जे तमें जेवी बाईनी खर इके
के, तेवी मधी.

सार

मांदांना समाचार जावाने जे आवेके तेनां के
ब्रळ समताये आवनारातो थोडा, पण पोत पो
ताने अर्थ आवनारा एवा घणा.

—००*००—

वात ३८

दीपडुं अने बकरीनुं वच्चुं

एक बकरी वारणे चरवा जती हती, ते ब्रळ
त तेणीये पोतानां वच्चाने कहां; अरे मांहेथी क
माडनें

माडनें सांकळ अडकान, ते जं संध्याकाळे पाकी
आवं त्यांहां सुधी कोईने उघाडीश नहीं त्यांहां
पासे एक दीपडुं हतुं, ते तेवात सांभळीने बकरी
गया पकी केटलीक वारे कमाड टोकवा लाग्युं.
अने बकरीना सरखो घांटे काहाडीने, झोकरा
कमाडनी सांकळ उवाड, एत बोख्युं. वच्चुं मा
ना कह्या उपर नजर राखनें खडकी मांधी जो
वा लाग्युं त्यारे ते तेनें केडेके अरे तुं तारे मागे
जा; तुं बकरीना शब्द सरखो शब्द काहाडके ख
रो, पण तारे आकार दीपडा सरखोके, माटे जं
तनें कमाड उवाडनार नधी.

सार

जे झोकरां मावापना कह्या उपर नजर राखेके,
अने तेना कह्या प्रमाणे चालेके, तेनें दुःख पड
तुं नधी. घरडांना कह्या उपर विश्वास राखवे
एमांझोटुं कारण एके, जे आपणां झोकरानुं खो
टुं कोई करापी इहंतुं नधी. शमाटे जे झोकरानुं
खोटुं ते मोतानुंज खोटुं. बिजुं बळीएजे ते वर्षे हो

दां

टां माटे ते सारा खोटासां होकरां करतां घणुं
समजें. एवां जे मा बाप, तेननुं कस्युं जे नदारां
होकरां सांभळतां नथी, ते होकरां वं सारुं पण
थतुं नथी.

—**—

वात ३६

कीडीयो अने तीड

उन्हाळामां कोर्ई एक वखते कीडीयो पोता
ना दर आगळ दाणानो ढगलो करीने ते दाणु
ने तडकामां सुखववानो उद्योग करतो हतोयो.
एटलासां त्यांहां भूखे व्याकुळ एवं एक तीड आ
व्युं, ते रांकडुं ह्या करीने बोळ्युं; जे वेहेनो एक
घोखानो दाणो आपीने ह्यारो जीव बचावो, तम
ने घणुं पुण्य थरो. ते वखते तेमांनो एक कीडी
कोहेके, थरे सुगार्दमां अहो दाणानो संग्रह करीं,
तेवो ते कां न करीं. ते बोळ्यो सुगार्दमां ह्या
रा दाहाडा खातां, पीतां, नाचतां, अने आनंद
करतां

(४६)

करतां गया. ते वखतमां आगळनो चिंता ह्यारा
मनमां एकेवार आवी नही. ते सांभळीने की
डी वाली. भाई एवं हे त्यारे जे आगळनो तज
वोज न करतां लायके, पोथेके, आनंद करेके; ते
हेलीवारे भूखे मरेके, तेमां कोर्ई शुं करे.

सार

जवानीमां जे सावध थईने पैसो एकटो करे
के, ते आगळ घयडपणमां दुःख पामता नथी.
एवं प्रत्यक्ष जोईने केटलाक पुरुब के ते तरुण
अवस्थामां पेदा करेके, तेडलुं उडावी देके. त्या
रे ते पोताना मनमां शुं समजता हशे, जे आ
पणा हाथपण अटकशे त्यारे जे वस्तूये जोईशे
ते आकाशमांथी पडशे शुं? जो होकरां, भाई, के
बिजां सगां, एमणे आपणनें घयड पणमां पाथ्यां
तो पण ते धर्म दाखल. तेमांहे ते होकरां आ
दि लेईने आपणी पासे रेहेशे, अने मातापिता
जाणनें भक्तीये करीने आपणी सेवा करशे, तेनो

पण

पण महंसो शो. माटे आपणी पासे इव्य हसे
तो, ते एद्दावस्थामां कामनां आवसे. एटला मा
हे ते जवानांमां घेरा करीनें एकठुं करी राखवुं.

—*—

वात ४०

होकरो अनें मा

कोई एक होकरो निसालमां लखवा जतो ह
तो, तेणे एक दाहाडो कोई होकरानी जनस चो
री; अनें ते पोतानी माने आपी. तेणी ये होक
राने शीक्षा करी जोईये ते न करी, अनें उळटां
होकराणां बखण करीनें तेनें कांई खावुं आयुं.
ते उपरथी पक्षी ते होकरो छोटी घतो गयो,
त्यम छोटी छोटी चोरीये करवा लाग्यो. को
ई एक बखत ते चोरीमां पकडाये, त्वारे तेनें
सूळीउपर घालवानें लेइ गया. ते जोवानें लो
कोनी घट नळी. त्यांहां तेनी मा पण आवनें वे

मळी

मा लाग्युं ते बखत तेनुं घेर लेवा माटे सयत्री
माखीये ते उपर तुटी पडोये. पण तेना शरीर
मुंचामडुं जाडुं, अनें कठण, माटे तेनें लगार दुः
ख थयुं नहीं. त्वारे माखीये तेना नाक कांन
उपर चटका मर्धा. ते वेदनाये रोंछ घेलुं षई
नें, तेणे पोताने नखे करीनें पोताना नाक. का
ननुं चामडुं उखेडी नांख्युं. एवा अपराधीनें पो
ताने हाथेज शिक्षा थयी.

सार

विजाने जे दुःखदे तेनें कोई प्रकारे शिक्षा या
थज.

—*—

वात ४२

बलाडो अनें कुकडुं

एक बखत बलाडाना मनमां आयुं के कुकडा
नें मारनें खार्ज. पक्षी. एक दिवस संतारनें

परोडमां

परोढमां तेनें आचिंतो पकडो। ते बखत कुक
 ढो तेनें केहेके, अरे अरे तूं ह्युनें मारीश नहीं।
 बलाडे पुछुं, शावाटे? ते तेनें केहेके, अरे लोकोनें
 ह्यारं काम घणुं हे ऊं सवारमां बोलुं तेथी स
 र्व लोक सावधान यर्हनें पोत पोताने धधे बळ
 गेहे. बलाडो बोल्यो अरे एटला माटेज ह्यारे
 तनें मारवोहे; जे तूं कठोर शब्द बोलीनें नित्य
 माणसोनी जंघ मंहेलावळ. ते तनें मारवो ए
 ज योग्यके. विजुं, वळीतुं एवो दुष्ट हे, जे पोता
 नी मा बेहननी साथे संग करवामां आघुं पाकुं
 जोतो नथो. कुकडो केहे हे, अरे ह्यारा धणी
 नें ईडां अनें बचां जोर्डये होये माटे ऊं ते क
 र्म करुं, अनें ते अह्यारो स्वभाव पण के. ते
 बखत बलाडो रीस चडावीनें केहेके, अरे दुष्ट
 हवे बोलवुं, पुरं करीनें शोभ बंध कर, तारा स
 रखा दुष्कर्मीनें जीवाडवो ए योग्य नथो, एज खरं.

सार

सार

दुष्ट मनस्य अधिकार उपर हे, तो ते पोताना
 मनसुं धायुं करेज. तेनी आगळ आपणुं गुणी
 पणुं अथवा निरपराधी पणुं आपणनें राखी सक
 तुं नथो; एवा पुरुधनें पापनुं भय देखाडवामां
 पण कांई फळनथो. तेनुं मन पाप करतां कर
 तां कडण थयुं. होय हे, ते फरीथी पाप करवामां
 विहीतुं नथो; माटे प्रयत्न चाले तो एवा दुष्टनें अ
 धिकार उपरथी काहाडवानो उपाय करवो.

—*—

वात ४३

घासनी गंजी उपरनो कुतरो

एक कुतरो घासनी गंजी उपर बेढो हतो, त्यां
 हां एक भुल्यो बळद घास खावाने आयो; ते कु
 तराथी सेहेवायुं नहीं. माटे कुतरो बळदनें भ
 लवा लाग्यो. त्यारे बळद तेनें तिरस्कार करी

नें

नें कोहेके, अरे नीच आ घास तुं खातो नथो, नें बिजानें खाया देतोए नथो. एवो जे तुं दुई ते तमें सदा बिपत्ति हजो.

सार

मत्सर एठले अरेखाई ए सरखो बिजो दोष न थो. काम, क्रोध, लोभ, इत्यादिक जे मनना दोष ह्ये, ते काईक वार रहीं ओछा थायह्ये, पण मत्सर क्यारे पण ओछो थातो नथो. बत्तो बत्तो थतो जायह्ये. अनें जेम जेम बधेके तेम तेम बत्तो संतापेके. शमाटे जे बिजानी विद्या, धन, प्रतिष्ठा, जोईनें आ सघळुं ह्यारे होय तो सारुं, अनें एनें न होय एवी वासना जे थाय ह्ये, ते कोई दाहाडा पुरी थाय अनें मत्सरीनें सुख थाय ए दिवस आवे नहीं. माटे मत्सरी निरंतर दुःखी रेहे ह्ये.

वात

वात ४४

कुतरो अनें गाडरुं

एक कुतरे गाडराउपर फर्याद करी, तेनो इ नसाफ करवानें चितरो अनें गंध पक्षि ए पंच थया. तेओये कुतरानी तर्फानी साक्षि काईज न लिथी अनें गाडराने अपराधो ठराव्युं. एवो इनसाफ घतांवेतज कुतरे गाडरानें मारी नाख्युं. अनें तेनुं मास ते अधर्मि पंचे मळीनें वेहेची खाधुं.

सार

चोर, लुच्चा, ठग, अनें घातकी, एमनाथी दुःख पामे त्यारे लोक पंचनी पास आवे. ते पंच जारे लांच वाले अथवा वादीनी शरमे तेनो घात करे, एघणुं घणुं पाप थाय. जे पापोपंच एवा दुःखीनो निसासो ले, तेनुं कोई दिवसे सारुं नथाय. लांच लेईनें बिजानो घात करे, ते

णे

५५

ए, ते लांचन खाधी, तो विष खाधुं; ते तेनुं नसंता
न करे. अने जे राज्यमां एवा दुष्टेने शिक्षा य
ती नथी. ते राज्य निष्कांटक हे तो पण बहेलुं
जाय, न्याय होय तो ज जगतमां राज्य रेहे, ते न्या
य नोंज जे नाश करे ते मूर्ख पोते नाश पासे.

—००*००—

बात ४५

बकरानुं बच्चुं अने चितरो वाव

एक बकरानुं बच्चुं एक झुपडा उपर चढुं हतुं.
ते झुपडा तळे एक चितरो वाव उभा होता, ते
ने जोईने वच्चे गाळो देवा मांडो, त्यारे ते चित
रो तेनें केहेहे. अरे नीच तारा आ बोलवायी
झनें दुःख लागतुं हरे, एम तुं मनमां जाणोश
नहीं. ऊं जाणुं कुं जे तुं आ अयोग्य बोलतो न
थी, तो जे झुपडे तनें उभा रेहेवाने आशय आ
प्योहे, ते झुपडुं बोलोहे.

सार

सार

गाळो देके. अथवा निंदा करेके. ते माणस पो
तानुं हलका पणुं मात्र देखाडेके. आशयना बळथी
एकादि बखत गाळो देनारनें अथवा काई दुर्भाषण
करनारनें. प्रत्यक्ष शिक्षा करानो नथी. माटे तेणे ऊं
होटे एम मनमां आणधुं नहीं. तेना शरीरनें प्र
त्यक्ष दंड घया नहीं खरो. पण प्रतिष्ठाने बडो
साग्यो. ते शुं शिक्षा नहीं? माटे जे काई एवा
हलका मनुष्यथी अपमान पाग्यो, तेणे पोताना
जोवमां खेद आणवो नहीं, विचार करवो जे आ
सामर्थ्य अपमान करनारनुं नथी, तो जेणे एनें
आशय आप्योहे ते आशयनुं सामर्थ्यके. तेम जे
काई आपणी पळवाडे आपणी निंदा करे, ते सांभ
ळीनेपण संतापकरवो नहीं. जाणवुं जे ते नीच
होडे बोलवामां विहीयेके, माटे पळवाडे बोलोहे.

बात

शियाळ अने सिंद

एक शियाळे प्रथमज सिंहने दीठा, त्यारे भय पामाने तेने पगे पड्यो. अने केवळ दीन वाणी ये बोलवा लाग्यो. विजो बखत सेळाप घयो. त्यारे घेर्ये राखीने तेना सामुं जोर्डने बोलवा लाग्यो. अने विजो बखत समागम घयो, त्यारे पास जर्डने तेनी साथे बरोबरीशवे मशकरी करवा लाग्यो.

सार

आपणघो जे छोटा के, तेनी साथे वर्तवामां शियाळना गुणमां जे वे गुण दीठा, ते न लेवा. एक भयभीत थर्डने दीन वाणी बोलवी, अने विजो मर्यादा सुकीने बरोबरीये चालवुं. तो आपणो भार राखीने मर्यादाथी छोटा साथे वर्तवुं.

बात

हंस अने बगलां

एक खेतरेमां हंस अने बगलां निघ उपद्रव करतां हतां, ते जोर्डने एक दिवस ते खेतरेनो घणी संतार्द रचीने पोताना चाकरो सुहां घोचि तो तेथो उपर तुटी पड्यो. ते बखत हंस शरीरे भारे अने जड माटे घणाक हंस मार्या गया, अने बगलां शरीरे हलकां माटे झटोझट उडी गयां.

सार

शत्रु पळवाडे लाग्यो होय त्यारे दरिद्रो करतां धनवान् घणं दुःख पामे. लगकरमां खटलो जे वो पडाव उपर सुख दायक के, तेवो विजो बखत नथी. तेम द्रव्यपण, संकट बखत सांभाळवुं ए घणं कटिण के.

बात

खवुतर अने किडी

एक तरशी किडी वेहेळा उपर पाणी पिवानें गयी हती, ते घणा पाणीनां पडानें तणातो तणाती जवा लागी. ते एक खवुतर दोठी. अने तेने दया आवी. माटे तेणे पोतानो चांचेवती एक झाडनुं पांदडुं तोडीनें पाणीनां नांस्थुं. तेने आश्रये ते किडी तेडे आवी. पक्षी एक दिवस एवी वात थयी, जे तेज खवुतर एक टेकाणे वेठुं हतुं. ते न जाणे एम एक पारधी ते उपर जाळ नांखतो हतो. ते ते किडीचे जाण्युं एटले ते व खतज तेणोचे जईनें खवुतरनें पगे चटको भरीं, ते पीडाये ते अकस्मात् हाय पग पछाडीनें उडी गथुं.

सार

उपकार करीं होय तेनें प्रत्युपकार करवो. ए माणसनेो सहज धर्म के. ते करीं माटे कोई ए न जाणे जे लोक ह्यारी प्रशंसा करे एवं ईके तो, तेणे पोतानां मावापनेो प्राण न लीधो, अनें

पाडोशीनुं

पाडोशीनुं घर न नास्थुं, तेमाटे पण प्रशंसा कां न दहे? उपकार करीं होय तेनें प्रत्युपकार क रीं तेनां काई वसुं करुं गहीं. पक्षी जे प्रत्युप कार न करे अनें त्रिजे उपकार करीं होय ते स नमां न आणीनें तेनें दुःखदेवा प्रवर्तेके, तेनुं नो घपणुं कोटसुं वर्णीये. आ किडी अनें खवुतरनो वातसां मुख्यत्वे करीनें आ नोति सुचवी, जे प्र त्युपकारनी द्रष्टा न करतां उपकार करवो, जे स खवुतरे किडी उपर करीं, एवो उपकार कर वानं जेनें मन ते केवळ ईश्वरनेो पुरुष जाणवो. क ह्युंके. विजा पासेथी खेवं ए माणसनेो रोति अमें फळनी द्रष्टा न राखतां विजानें चापधुं ए दे वनी रिति होय.

**

पारधी अनें पक्षी

एक पारधीचे जाळसां पक्षी पकडुं. त्यारे पक्षी पारधीनें केहेके, अरे जो तूं ह्यानें आ वल

त

त जीवत दान आपे, तो ऊं तनें विजां घणां पक्षी
 योनें खेतरनें तारी जाळमां आणी आपुं. पार
 भीये उत्तर कर्यो, अरे दुष्ट तनें होडवो नहीं, ए
 टलुंज ह्ये पुनें धार्युं हतुं. पण हवे आ तारा
 भाषणयो तनें जीवयो मारयो, ए में निश्चय क
 र्यो; जे, जे तुं तारा एकलाना जीवनें वास्ते भाई
 बंध, नात, सुगां, एमनो घात करनारो, ते तनें
 मारवो एज योग्ये.

सार

राजद्रोही होयके, ते आपणा भाई बंध, ना
 त, सुगां, एमनो घात करीनें शत्रूनें मळीनें पोते
 सुखी यवानें दूडेके. पण तेज शत्रु पोतानुं का
 म थयं, एटले पक्षी तेनें जीवतो मेहेलता नयो.
 कृदारपिक मेहेले तो मनमां ते द्वेष पण करेके.

—**—

वात ५०

गरुड अनें कागडो

एक पर्वतनें हेटे गाडरांनुं टोळुं चरतुं हतुं, ते
 पर्वतना

पर्वतना शिखर उपर एक गरुड पक्षी बेटो हतो.
 तेणे ते उपर झडप मारीनें, तेजांना एक गाड
 राना वांसा उपर बेशीनें, तेनें पोताना पवता ब
 धनां लेनिं, आकाश मार्गे लेई गयो; तेनुं संधा
 न जांनें एक कागडो झड उपर बेटो हतो, ते
 पण लेन करवा गया. ते बलत तेना पण गाड
 राना डाळमां मारई रह्या, अनें तेणे बरका पा
 उवा मांड्या, ते शब्द सांभळीनें गाडरां चारनारो
 पासो हतो तेणे धारीनें तेनें पकडो, अनें तेनें प
 ने दोरी बांधीनें पोताना होकरानें रसवा आ
 यो.

सार

विजाना नगनी बरोबरी करवी, तेमां पोतानो
 शक्ति अनें स्थिति एचोनेो प्रथम विचार करीनें क
 रवो, नहींतो तेज दुःखदायक थापई.

वात

लोभी अने मत्सरी

एक वखत लोभी अने मत्सरी ए बेजणा देवी मा मंदिरमां तप करता हता. तेमनें देवी प्रसन्न घईनें बोली. अरे तने जे मागशे ते वरदा न आपोश, पण ते एवं आपोश के प्रथम जे जेट लं मागशे ते करतां वसणुं विजाने मळशे; ते सां भळीनें लोभीये विचार कर्यो. जे ह्यारे पेहेलुं मागवुं नहीं, शाभाटे जे, ह्यारे जेवो लोभ छे, तेवो एमं पण छे, माटे ए घणुं इव्य मागशेज, एटले पछी ह्याने एना करतां वसणुं सहजज मळशे. एवो निश्चय करीनें ते बेल्होज नहीं; ते जागीनें मत्सरीये देवीनी प्रार्थना करी. हे देवी जो तं ह्याने प्रसन्न छे, तो ह्यारी एक आंख फोड पछी देवीये तेवुं हो एम केहेतांमांज मत्सरीनी एक अने लोभीनी बे आंखो फुटीयो.

लोभ अने मत्सर ए केवा खोटा छे, ते आवातां स्पष्ट थायछे, लोभी वत्ता इव्यनी आशा माटे पोतानुं ईच्छुं देवीपासे मागनें सुखी थयो नही, अने मत्सरीये विजाने सुख नघाय माटे पोतानो एक आंख फोडनें पोताना जीवन दुःख करी लिधुं.



घोडो अने गधेडो

एक सिलेशरने घोडो कसबी जीन लेईनें, रुगाम चावतो, फरफराठ करतो, रस्तामां जतो हतो. तेणे त्यांहां रस्तामां भारे चंपाएलो हळवे हळुवे चाले छे एवो एक गधेडो दीठो. तेनें घोडो धमकी देईनें केहेछे, अरे पोईस पोईस. पोईस नहीं थाय तो ऊं तनें हमणाज ह्यारा

पगतळ कचरी नांखीण, गधेडे बघारो नवळो तेणे विचारुं, जे बळामां आपणुं सारुं नथी, एवं समज्जिने उतावळो उतावळो एक कोरे गधो: के टलाक दिवस पळी एवी वात थयी, जे तेज घोडाने लडाईमां गोळी बागी, एटले सलेदारने न कामो थयो. त्यारे सलेदारे घोडाने भाडां करनाराने घेर घेचो. पळी तेपण भार वेहेवा लाग्यो, एक वखत ते पीठउपर छोटी काठाल लोईनें जतो हतो. तेनें ते गधेडे दीडो, गधेडा तेनें वा लावीनें केहेके, जे गोपाळ शेटना, जे गोपाळ ते दाहाडे ह्यानें पगतळे चांपता हता, ते तमेज नही, ह्ये त्यारेज भविष्य जाण्यु हतु, जे एकारे दिवसे त भारो गर्व उतरथे.

सार

जे पुरुष अहंकारे करीनें छोटा पणुं मेळववा जायके, ते बळवान् अथवा छोटाणो आशित के, त्यांहां सुधी लोक तेने बाहेरधी नसेके. पण ते मनो आत्मा तेना उपर हूष करेके. तेज पळी जारे

जारे दैव फरेके, त्यारे नवळो आयके, एटले लोफ तेनाउपर दया न आणतां चेष्टा करेके, वा सो छोटापणुं मेळववानो ए रस्तो नही, ते रस्तो एकेजे. जेनें छोटापणुं मनथी नथी जोईतुं त्यारे तेनी पळवाडे ते बळात्कारे आय के, अनें जेनें छोटापणुं जोईथे छोथे तेनाथी ते वेगळुं नासे के. जे पुरुष मान मानेके, तेनें ते मळतुं नथी, अनें जे सुतीनी द्रच्छा करेके, तेनें निंश मळेके; अनें जे नस्र अनें जेनें अभिमान नही तेनेज छोटापणुं मळेके.

—००*००—

वात ५३

शाऊडी अनें साप

एक शाऊडीचे सापनी प्रार्थना करी, जे तुं ह्यानें तारा दरमां रेहेवानी जग्या आप. सापे कां

ईं विचार कर्था विनाज तेनें आव कर्त्ता, तेथी ते सापना दरमां पेठी. त्वारे ते बखत तेनां कांटा सरखां पिच्छां सापना शरीरमां भरायां, तेथी सापनें घणं दुःख ययं. त्वारे सापे तेनें कर्त्ता; शाऊडी बाई, हवे तनें अहीयांथी जाओ, अह्वाराथी तमारो उपद्रव सेहेवातो नथी. तेणीये उत्तर कर्त्ता, ऊं शमाटे जाऊं; छाने तो अहीयां सारं कमेळे, जेनें अहीयां न गमतुं होय ते जाय.

सार

कोटलाक पुरुष स्वभावथीज एवा खोटा होय हे, जे तेना संगथी दुःखज घाय, माटे कोईनी साथे भाईबंधाई, अथवा रोजगार, अथवा सगाई, करवी होय, तो प्रथम तेनी जात, गुण, रेहेणी, रीत, ए घणी चोक्शीथी जोवां, शमाटे जे, संबं ध कर्त्ता पछी जो तेनें अनें आपणनें बने नहीं, तो पछी घणो पसावो थाय हे.

बात

बात ५४

पारधी अनें खबुतर

एक पारधी बंधुक लेईनें अरण्यमां मृगया रज वा गयो हतो, ते एक झाडउपर खबुतर वेडुं हतुं, ते उपर तकाव करीनें बंधुकनी जामगरी दाबतो हतो; एटलामां तेनें पगे सापे दंश कर्त्ता. ते पीडाये ते व्याकुळ यतामांज हाथमांथी बंधुक हेठो पडी, अनें सवळे शरीरे झेर व्यापी गयुं. ते नो जीव जवा लाग्यो, ते बखत पारधी पोताने कहेहे, जे छाने जे आ शिक्षा यथी ते योग्यज थयो. शमाटे जे, जेऊं विजानो जीव लेनार हतो, ते छाने प्राणांत यथो, ते न्यायज यथो.

सार

विजाने पीडा करनारो वेते पीडा पामेहे, जुथो आश्चर्य, जे परपीडा करनारो पोतानुं मन कठण करीनें लोकोनें हजारो उपद्रव करेके; तेमांनो एक उपद्रव जो तेनें थाय तो एवं लागे जे, हाय हाय, हवे शुं करुं! कम कर्त्तुं! ऊं सुकुमार आ दुःख

कम

कम सह्य, पण जेम आपणची सेहेवातुं नथी, तेम ज विजाथी पण सेहेवातुं नहीं होय, एम ते भूर्खना मनमां आवतुं नथी. लोकोनी साथे वेहेवार करती ब्रह्मत पोताना मननें विचार पुढवो; एटले ते जे नीति हशे ते प्रमाणेज केहेसे; ते प्रमाणे चा लेथी कांई धोको नथी, पण आपण ते न करी ये, अनें आंख्या मीचीनें काम क्रोधादिकनें वश यईनें, दुष्ट कर्म जो करवा मांडीरुं, तो पाप ना घडा भरासे एटले एकादे दिवसे परमेश्वरना कोप यईनें, हरकोई हलका मनुष्यनें हाथे आ यणनें शिक्षा यशे. एनाटे आपणुं सारुं थाय ए वी जो इका होय तो, आपणे लोकानुं सारुं करतां जवुं, तेथी आपणुं सारुं यशे.

—**—

वात ५५

कणवी अनें शाहामृग

हफ कणवीये खेतर्मां जाळ नांखीनें घणा हंस तथा वग लां पकड्यां. तेमां तेसाथे एक शाहामृग पण सहज आव्यो हतो, तेपण पकडायो. त्वारे ते शाहामृग कणवीनी प्रार्थना करीनें केहेके, भाईरे तुं क्षनें मारीश नहीं, जो जं हंस नथी; अनें वगलोपण जं नथी; गरीब शाहामृग कुं, कुं क्षारा धर्म प्रमाणे चालुंकुं, अहो नावापनें वृद्धावस्थानां अक्षारा ख भा उपर बैसारीनें पोषण करीये छीये, कणवी के हेके, भाई ए सघळुं खरुं, पण तुं खोटानी संगती मां क्षारे हाथ आवीके, माटे तनें पण तेभना जेटली शिक्षा करवी जोईये.

वात ५५

सार

दुर्जननी संगतीये सज्जन अप्रतिष्ठा पामेके, अनें जे संकटमां ते पडेके तेमां सज्जन पण पडेके.

वात

बात ५६

भुंडणी अने दीपडुं

एक भुंडणी तरत व्हायी हती, तेनां कुळां कुळां बच्चां देखीनें एक दीपडानें घणी आशा घयो, जे, आमांघो एकादुं जो ह्मनें खावानें मळे, तो सारुं आव, पक्षी ते दीपडुं घणा दाहाडा सुधी खाण जोतुं हतुं, पण कांई लाग फाव्यो नहीं. त्या र पोताना उपर भुंडणीनें विश्वास आवे माटे दीपडुं भुंडणी पास जईनें मीठी मीठी बातो करवा लाग्युं, अने भुंडणीनें केहेके बाई तमे सारां हो, एक ठेकाणे घणी वार सुधी वेशी रहींनें तमे घणां अकळायां हरो, माटे मज सरखं कांई काम काज होय तो केहेजो, मनसां कांई शंका आणरो नहीं, तसारा मनसां होय जे लगार वाहेर फरी आवुं, तो सुखे फरी आवो आ धावणा बच्चांनी कांई फकर कररो नहीं. ऊं एमनें ह्यारा प्राण करतां वत्तां संभाळीश. भुंडणी ते

सघळुं

सघळुं सांभळीनें उत्तर करेके, दीपडा भाई तमे ह्याराउपर घणो उपकार कर्यो, हवे ह्यारे तमे नें केहेवानुं काम एटलुंज के, जे हवे आपण छपा करीनें अहींयांघो जाथो; अनें हवे तमे जो भलाहो तो फरीथो ह्मनें तमारुं ह्यो देखाडरो महीं.

सार

केवळ पारका वास्ते उद्योग करनारा आ सुष्टीमां कोईकज हशे, माटे जे कोई वगर कही विजानुं सारुं करवानें उद्योग करे त्यारे तेनां कांई शंका आणवी. जे दुष्ट के, अथवा आपणो शत्रू के, ते आपणी पास आवीनें घणो स्नेह देखाडे, त्यारे घणी खबरदारी राखवी, एसां शुं केहेवुं.

—**—

बात ५७

भहवाडनो शेकरो

एक भहवाडनो शेकरो गाडरां चरावतो हतो, ते शेकरो एक दिवस वारे वारे चीतरो बाघ

आघोरे!

आधारे। चीतरो बाघ आधारे। एन रमतमां घां
टो काहाडीनें बोलवा लाग्यो, ते सांभळीनें पा
सेनां खेतरोमांथी कणजी दोडता आव्या. जनें
जोयुं तो त्यांहां चीतरो नथी, एम वे चार वार
नें ठगाया. त्यारे तेमणे निश्चय करीया जे, कोक
रो जुटो के, एनी हाक फरीथी आपणे मनमां आ
गवो नही, पक्षी केटलीक वारे एरे ज चीतरो आ
व्यो, त्यारे ते कोकरो घावरो यईनें हाको मार
वा लाग्यो; त्यारे ते पण जुठुं जाणीनें कोई आ
थुं नही. एठले तेनां ते गाडरां चीतरे निश्चि
त मायीं.

सार

जे पुरुष जुटो एवं एक वार प्रसिद्ध थयुं एट
ले तेना बोलवा उपर लोक पक्षी विश्वास राखता न
थी. ते एरा संकटमां होय, तो पण तेनो बात
खोटी मानोनें तेनें सहाय थता नथी.

बात

बात पुद्

साप अनें माणस

एक कोकरो बोडमां रमतो हतो, त्यांहां ते
नें सापे करडो; तेनुं झर चढो गयुं, तेथी ते को
करो ते बखत मरी गयो. ते जोईनें कोकरानो
माप घणो रोसे भरायो. अनें हाथमां शस्त्र लेई
नें सापनी पळवाडे थयो. तेणे ते साप दरमां पे
से पेसे एटलांमां तेना उपर घा करीया. तेथी ते
नो पंहुडी मात्र लगारेक कपाई; विजे दाहाडे, सा
पनें बोलवावोनें मारुं, अनें वेर पूरुं वाळुं, एवं मनमां
आणोनें कोकराना वापे दूध, साकर, मध, एवं द
रना ह्यो आगळ मेहेल्युं, अनें सापनें हाको मार
वा लाग्यो; अनें केहेके; भाई, अरे भाई, बाहेर
आव, तुं हवे काई मनमां संदेह आणोअ नही, जे
बात थवानो हतो ते थयी, हवे तने अनें अहो मि
त्रता करीये. ते सांभळीनें सापे मांहेथी उतर
करीया, भाई हवे मित्रता करवानें तुं फोकाट वेहे

बात

नत करीश नहीं। शमाटे जे जांहां सुधी तमें नु
एलो होकरो सांभरेके, अनें छाने तूटे लं पुंछुंसां
भरेके, त्यांहां सुधी आपण बेजगना भननां एक ए
कृणुं कल्याण थाय एवं आवनार नहीं।

सार

जेणे विजाने अपकार कर्षो के, ते पोताना म
नमां बिहीतो रहेके, जे, ते कोई दाहाडे पण बे
र लेशे, अनें जेनें अपकार यथोके तपण ते अप
कारनें कोई दाहाडे विसरतो नथो। माटे ते बे
जगनें फरीपी हेत एवं घणुं कडीण के। पण ह्यो
टा माणसनें ए योग्यके, जे शत्रु उपरे दया कर
वो। पण तेनी साथे मित्रता करीनें तेनी विद्या
स करवो ए योग्य नथो।

—*—

वात ५६

रणशींगुं वगाडनारो

एक रणशींगुं वगाडनारो। लडाईंसां शत्रुओवे
एकड्यो, अनें तेनें सारी नांखवा मां ड्यो, थारे ते

घणुं

घणुं कारगरीनें बोल्हो। जे छाने मारणो नहीं,
ह्यारो काई अपराध नथो, ह्यारा हाथमां हथो
घार नथो, एथी तमे जाणो जे ह्यो कोईनें मा
यो नथो; अनें आगळे मारी सकनार नथो। एक
रणशींगवगर बिजा कशाने ऊं खड्यो नथो एवं
हे। माटे भाईयो छाने कां हकनाहक मारोके।
ते सांभलीनें शत्रु बोल्हो अरे एटसा माटेअ अ
ह्यो तमें मारनार, जे तुं तारे हाथे कोईनें मार
रतो नथो; पण तुं आ रणशींगुं फुंकीनें लोकोना
अंतःकरणमां वैर प्रकट करइ, एवं के जेणे करी
नें रुधिरनो प्रवाह चालेके।

सार

जेणे कही हाथमां तरवार झाली नथो, अथवा
बंधुक छोडी नथो, अथवा विजां पण काई जीव
लैनारां एवां हथीचार हाथमां झाल्यां नथो; ए
वो पुरुष पण विजानो जीव लोईं सकेके। आ क
ळह उत्पन्न करनारी न्हानीशी वस्तु, जेनें शीम के

हेके,

हेके, एमां जे शेरके, ते, शेरपाधेला बाण करतां
वत्तुं मारनार के; एनुं सामर्थ्यं श्रुं कहीये. एना
लगार हाख्याची लोकोना प्राण जाय, अने ह्यो
टां ह्योटां राज्य उचल पायल वाय; अने लोको
मां अस्परस वेर पेदा वाय, एवं के एकएक
ना प्राण जता सुधी तेना जंत आवे नहीं. माटे
श्रीम हलावीनें जे अनर्थ करेके, ते सामान्य या
पी नहीं. माटे तेनें शिक्षा पण तेवोज करी जा
ईये.

—**—

बात ६०

ससलो अने काचवो

एक ससलो गर्वघो काचवाने तिरकार करीनें
केहेके, अरे ह्यारी आगळ दोडनारो एवो कोण
ह्ये काचवा केहेके, अरे जो तारा मनमां एवं
दुमिनान हे, तो, आव, आपण सरत करीये. जो

ऊं

ऊं ताराथी आगळ ते पर्वत आगळ पोहोचुं, तो
रथिया पांच तारे ह्यने आपवा. नहींतो ऊं तनें
थापुं. ए आपणी सरतमां आ शियाळ साक्षी,
ससले ते मान्य करी. पक्षी ते वे संघाते नीक
ल्या, त्तारे ससलो जाते चंचळ अने वळी दोडो
तथी काचवो घणोज पळवाडे रह्यो; ते जोईनें स
सले मनमां विचार कथो, जे ऊं हमणां थाक्यो
हुं. माटे लगार आशाड आगळ जंघ लोजं, क
दाश काचवो आगळ नीकळी जणे, तो तेनें पोहो
चवामां आपणे कौटलीवार के, एवं विचारीनें ते
शाड आगळ जंघवा गयो. पळवाडेथी काचवो ह
ळुवे हळुवे विसामो लिधाविना एक चाले चाल
तो हतो ते सरतनें डेकाखे जई पोहोच्यो, अने स
सलो पोताना सामर्थ्य उपर विश्वास राखीनें सुतो
ते सुतो ज रह्यो.

वार

११

सार

अपल अने तीक्ष्ण बुद्धीना हे, पण जे कामसां उतावळो यतोनथी, तेनुं ते काम सिद्ध यतुं नथी, अने मंद बुद्धीना हे, पण जे कामसां लाणे हे, ते तेनुं ते काम सिद्ध पायके; अणुं करीने जे बुद्धीना न्हे, ते आळशी, अभिमानी, निश्चिंत. एवा होय हे, ते कामसां अन्न करता नथी. कोठेहे जे अक्षारे शुं अशक्य हे, अक्षी जारे धारीशुं, त्यारे चार दाहाडानुं काम चार घडीसां करीशुं, एवा भ्रंसा उपर रहने वर्षनां वर्ष जायके, पण तेमना हाथथी कांई काम यतुं नथी. अने जे मंद बुद्धीनालो हे, ते ऊं बुद्धिमान् नथी एवं जाणीने उयोय करेके, माटे जे काम ते हाथसां झालेके, ते सिद्ध पायके.

वात ६९

बेवधारी दीपडुं

एक दीपडुं गाडरानुं चामडुं थोडीने गाडरानां टोळामां जईने पेटुं. तेणे ऊं गाडरुं कुं एम कहीने घणां गाडरां सारी नांख्यां. एक दाहाडो ते गाडरां चारनारानां जाण्यासां आव्युं त्यारे तेणे युक्तीथी ते दीपडाना गळामां दोरी बांधीने, तेने झाडने डाळे टांगीने, फांशी दीधी; ते रस्ते विजा कोई गाडरां चारनारा जता हता तेसांथी एके ते फांशी देनारामे पुख्युं अरे ते आ शुं कथुं तुं कांई गांडो ययोके, त्यारे तेणे ते सांभळीने, दीपडाना शरीर उपरथी ते गाडरानुं चामडुं उतारीले ईने, तेना सदेह मटाडो. पक्षी तेणे ते कथुं, तेनुं तेणे बखण कथुं.

सार

बाहेरना आचारथी कोईना स्वरूपनी परीक्षा यती नथी, बाहेर भलो दिसेके; माटे मांहे तेवो

ज हसे, एवं जाणीये तो आपण ठगार्हये एमाटे
डाहाय्य पुरुष हे ते पेहेला माहेतो शोध करे
हे, पक्षी माहे अने बाहेर सरखो पारखामां आ
यो महो, तो ते विश्वास घातो, वेवधारी, एवो
तेने जाणीने तेना उपर द्वेष करेके.

—**—

वात ६२

दीपडां अने गाडरां

दीपडांने अने गाडरांने घणा दाहाडा सुधी ल
छाई चाली हती, त्यांहां कुतरांनी सहायतायी गा
डरां दीपडांयो हार्यां नही. पक्षी तेमनुं अर
स्सरस सल्ला करवा सारू बोलवुं थुं. तेमां ए
वुं ठरुं जे अरस्सरस एक एकनें ओल आपवी,
दीपडांये गाडरांने कहुं जे अक्षे अक्षारां होकरां
तमारे स्वाधीन करीये छीये, अने तसे तमारां कु
तरां अक्षारे स्वाधीन करो, ते वात गाडरांये कबु
ल करीने ते प्रमाणे करुं. पक्षी दीपडांनां होक

रां

रां गाडरां पासे आवतांवांतज पोतानी माओ
बास्ते एकीवारे रोवा लाग्यां. ते सांभळीनें दीप
डां दोडतां आथ्यां, अने गाडरांनें केहेवा लाग्या.
जे अरे दुष्टे तसे अक्षारां होकरांनें मारीनें स
ल्ला भागी. एवं कहीनें ते सघळां दीपडां गाड
रां उपर तुटी पद्यां त्यांहां कुतरां पासे न होतां
एटले ते सेहेज मारीं ग्यां.

सार

शत्रूनी साथे सल्ला करती बखत घणी सावधा
नाई राखवी. जे वस्तुने आपणनें भरसो हे, ते
वस्तुविना आपण नवळा, एवी वस्तु ओल्पमां श
त्रूनें स्वाधीन करवी नही. आपी एटले पक्षी ते
मनें बढवानुं निमित्त काहाडीनें बढवुं कठण पड
तुं नथी.

वात

बात ६३

बे वटे मार्ग

बे वटे मार्ग संघाते चाल्या जता हता, तेसां ना एकनें रस्तामां पडेलो रुपैयानो वाटुवो जड्यो. ते हाथमां खेईनें ते विजानें केहेके, अरे आ जो ह्यानें रुपैयानो वाटुवो जड्यो. विजो तेनें केहेके एम क्यम केहेके? आपणनें जड्यो एम केहे, आपण बे संघाते छीये, माटे लाभ के हानी जे थाय ते बेउनी. ते सांभळीनें वाटुवा वाळो केहेके, हा, ते खरुं, ह्यानें जडेली वस्तूमां जं तनें भाग क्यम आपोश? विजो केहेके. वारु त्यारे न आपोश, पळी ते बेजणा कांईक आगळ ग्या एटलां मां वाटुवानो धणी शोध काहाडीनें, सरकारना शिपाई खेईनें तेमनी पळवाडे आयो. तेनें जोईनें वाटुवा वाळो केहेके, अत्या, आपणे खोटुं काम करुं. तेनें विजो केहेके, हवे आपणे खोटुं काम करुं एम कां केहेके? ह्ये खोटुं क्यम एम केहे, जो ते ह्यानें तारा सुखमां भाग आयो होत, तो जं तारा दुःखमां पण भाग होत.

सार

सार

जे पुरुष एवं इके, जे ह्यानें संकटमां विजो सहाय थाय, तो तेणे प्रथम मित्र करी राखवा. मित्र करवानी रीत एवोके जे, प्रथम आपण कांई तेनें उपयोगमां आवीये, अनें तेनी साथे मन मोकळुं राखीये, कृपणता न करीये, तो ते आपणा संकटमां सहाय थाय.

—००*००—

बात ६४

बाध्यमां पडेलुं शिवाळ

एक शिवाळ बाध्यउपर पाणि पीवानें गधुं हतुं ते मांहे पडुं. एटलांमां त्यांहां एक दीपडुं आयुं. तेनें तेणे विनती करी, भाई जं बुडुं, ह्यानें सहाय था, एकवार दोरडुं अथवा विजो कांई वस्तु मांहे नांख, जे जेणे करीनें जं उपर नीकळी आवुं, ते शिवाळनी दशा जोईनें, दीपडानें दया आवी, अनें तेनें केहेके, अरे बचारा जं तनें जो

ईनें

ईने घणो दुःख पामुंछं. अरे तारा उपर परमेश्वर
आवो क्यम कोथो; हाय! हाय! खोटी बात थयो.
शियाळ उत्तर देके, अरे तं जेवं बोलक तेवं जो
तारा मनमां होय तो ह्यारा सार अमथो अहीं
थां उभोथई रहनें, दुःखो थईश नहीं. तो, ह्य
नें बाहेर काहाडवानो उपाय उतावळो कर, अ
रे जेणे गळकां खावा मांड्यां अनें ते दश पांच
पळमां डुबी मरशे, तेउपर विजाने अमथो दया
आवी ते शा कामनी?

सार

अमथो नरो दया आवी ते शा कामनी, जेथो
विजानं दुःख लगारे ओळुं घातं नथी, जे विजानं
दुःख जोईने पोते अमथो दुःखियो थाथ हे, ते दुः
खीना मननें वत्तुं दुःख मात्र करेके. माटे जे आ
पणनें घणा दुःखशां, काममां, आवेके, अनें हाथ
हाथ करीनें अमथा कधी यता नथी, तेनें आप
णं दुःख लागेके एम जाणवुं. अनें तेज आपणो
खरो मित्र, अनें तेज सारं करनारो, एवं जाणवुं.

बात

बात ६५

माखो

काई एक माखो ह्यो, तेणे नदीमां एक तेड
थो ते विजो तेडसुधी जाळ पाथरी; अनें हाथमां
खाकडानो दंडीको लेईनें, पाणीमां झापटवा ला
ग्यो, मनमां एवं जे माखलां गाभरां थईनें चारे त
रफथी जाळमां पडे, ते बलत ते नदीनो तेडे रे
हेनारो एक जण त्यांहां हतो ते ए माखीनो श्री
घार जोईनें तेनें केहेवा लाग्यो; अरे आ तं थं
करछ, तं तारा मनमां शुं समज्यो हे, तं आ
कुदी कुदीनें पाणी डोहोळी नांखक, एवं पाणी अ
हो भरीथे अनें तनें काई कहीये नहीं, आ तारा
उपद्रवमां अमथो केम रेहेवाशे? बोलतो क्यम न
थीरे? एम ते रोस चडावीनें अडफडीनें बोल्यो,
त्यारे तेनें माखो हळवे उत्तर करेके, अरे, तारा
श्री अहीयां क्यम रेहेवाशे? ए विचार करवानो ह्यारो
रे काई गरज नथी, पण ऊं तनें खसंज कडुं,
जे आवुं कथा विना ह्याराथी रेहेवातुं नथी.

सार

सार

केटलाक पुरव एवा होयके जे तेमजायी लो
 कोनें जोइये एटलो उपद्रव थायो, पण तेना ते
 विचारज करता नथी. लुगारेक जेटलो पो
 तानो खार्थ यवो एटले घयुं. एक उर लुटव हो
 य, माटे सबळां घरोनी थोळनी थोळ बाळता
 चोर थायुं पाळुं जोतो नथी. कळह उल्लव क
 रनाराके ते विचार करता नथी, जे, अहारा
 साचा जुटाथी केटलाकनी भाई वंधाई तुटणे, के
 टलांक कुटवमां विरोध थणे, राज कारभारी पु
 रषेमां केटलाक एवा होयके, जे, ते राज कार
 भारमां चार जणांन एक चित्त यवा देता नथी,
 अनें फुटफाट थाय, लडाईयो थईनें रुधिरना प्र
 वाह चाले, एवं करेके; सर्व राज्यनो नाश थाय,
 अनें पोताने काई द्रव्य मळे तो तेवुं करवामां ते
 अजान करता नथी, रांडीरांडोनां थांसु, हो
 थारांनो रडारड, दुखी लोकोनी हायहाय, ए ते
 पुरुषजा मननें हलावी सकतां नथी, ते पुरुष था

वातमाना

वातमाना माछीनी पेटे मनना कडण थईनें, पो
 तानुं काम करता जायके, अनें कोई पुकेतो के
 हेके, जे एम कर्या विना अमोथी रेहेवातुं नथी.
 हरि हरि शां एमनां दुष्ट कर्म! शी एमनी सम
 जण! जेना न्हयमां नीतीना लेश नहीं, जे लो
 कोनुं साह करनारा के, तेमणे पोतानुं सामर्थ्य
 चाले, त्यांहां सुधी एवा दुष्टेनें मारी नांखवा.

—*—

वात ६६

कांटा खानारा उंटनी

कापणीना दाहाडांमां कोई एक खेतर वाळे,
 माणस लेईनें खेतर मांहेना अन्ननी कापणी कर
 तो हतो; माटे तेनुं उंट नाना प्रकारनां अन्न पो
 ट उपर लेईनें खेतर आगळथी जतुं हतुं. ते र
 त्तामां एक बावळीयो जोईनें, तेना कांटा खा
 वा वळग्युं. तेना खाद लेईनें ते पोताना मन
 मां कोडेके, आ ऊं उचकी जाऊंकुं एवां अन्न खा

ईनें

इनें माणस प्रसन्न चाओ, पण आ वावळीयाना
कांटासां जे खादके, ते छोटां सारां यंत्रां पण
नथी.

सार

साहं नरतुं, अथवा सुख दुःख, ते फलाणुंज ए
म केहेवातुं नथी, जेणे जेवं मान्यं तैवं तेनें ला
गे, एमाटे जे पुरुष एवं जाणे जे छाने जे साहं ला
गेके, ते सर्वनें साहं लागे अने ऊं जेनें खाटुं क
ऊं, तेनें सर्व खाटुं केहे. ते पुरुष आ वा
त मांना उंट सरखो मूर्ख जाणवी.

—**—

वात ६७

सावरी पाणीसां जोती हती

कोई एक सावरी नदीसां पाणी पीती हती, ते
पाणीसां पोतानु प्रतिबिंब पड्युं हतुं, ते जोईनें घ
णुं संतोष प्राप्ती. पक्षी पणथी ते भावा सुधी जु

दा

रा जुरा अथवा जोईनें केहेके, आःहा! ह्यारा मा
या उपरनां शींगडांनो भराव थो संदर के, जे जे
णे करीनें ह्यारा ह्योनो शोभा घणी थयी, ह्यारा
विशाल नेत्र, कमळनें लजवेके, ह्यारं शरीर को
मळ फुल सरखुं के, एवाज आ ह्यारा आ पण सा
रा होत तो ऊं कोईनें गणत नहीं. पण शुं क
र आ पणे छाने लजवी, आ न्हाना ओगळी गथे
ला देखाय के, तैथी सुळगाज म होत ते साहं.
एन ते विचार करेके, एटलासां पछवाडे पारधी
आथ्या. ते जाणतांसांज त्यांहांथी नाठी, तेनें प
छवाडे पारधी पण गया. त्यारे तेणीचे विचारुं जे
आमना हाथसांथी उतावळी नाशी जाजं, माटे
आडी घाटे जवा लागी, तो त्यांहां झाडसां शीं
गडां भरायां तैथी अटकी पडी, एटले पछवाडे पा
रधी हताज तेमणे पकडो, ते वलत ते मनसां
केहेवा लागी, के जे पण छाने छोटा लागता ह
ता तेमणे तो छाने संकटसांथी बाहेर काहाडी
हती, पण जे शींगडांनो छाने गर्व हतो, तेणेज
ह्यारें बंधनसां नांली.

सार

सार

ऊँ सवळा अवयवोथे करीने सारी नथी, एम जीवोथे मनमां खेद जाणवो नही. शमाटे जे खोडोला अवयव हे, ते जेवा वस्तु उपर यति प्रताना धर्ममां काममां आवेके, तेवा सारा अवयव हे, ते आवता नथी. पतिप्रतापणं खोचोना जीवहे, ते जमने नडोय ते खोचो मडरा सराजो जाणवोयो.

—*—

वात ६८

शियाळ अने कागडो

एक कागडो ह्योमां मासना कडको लेईने उद्यो, ते एक उंचा झाडउपर जईने बेडो, तेने जो ईने एक शियाळ ते झाडतळे ग्युं. अने व.पट.घो कागडानुं सुदरपणं वर्णवा लाग्युं केहेके, अरे पधी ऊँ तने सराज कडकुं, के तज सराखा देखाउ

डा

डो विजो पक्षी छारा जोयामां आज सुधी कसे आव्यो नथी. तारां पोछां शां सारां अने कुळां हे, आःहा! तारा शरीरनो, शोकांति कोटली वर्ण न करुं, तारा अवयवनी लटकसामे तो जाता ज रहीये, पण दृष्टी थाय नही. तारे एटलुं सळुं अनकूळ हे माटे तारो स्वरपण सारोज हशे एवं जणायके, अने स्वर जो मीडो होय तो पक्षी तारी बरोवरी कोण करनार हे. कागडो ते स्तुति सांभळीने, ऊँ कोण? ए विसरी गयो, अने पोतानुं शरीर मरडोने विचार करेहे, के आने छारा स्वरनो आंती हे, तेटली मटाडुं. एम मनमां जाणीने, तेणे गावानो आरंभ कर्यो. ते करतांज ह्योमां मासना कडको हतो, ते हेठळ पद्यो. ते लेईने शियाळ तेनी मूर्खताने हसतो हसतो मार्गे लाग्यो.

सार

स्तुतीमां लेवाचो ते फसेज, एवं जाणीने तेमां खेवाता नथी, एवा पुर्वं घोडा, जेसने स्तुति

सारी

सारी करतां आवडती मधी, तेमनी करेली क्षुति
एकाद्री बखल फौण्ट जाय. पण जो करनारा ख
बलदार हे, तो ते छोटा सावध मनुष्यानां पण म
नने हरीलेहे, एवी रीते के जे क्षुतीना लेपनां आ
बतो मधी. तेना तेज गुण बखान करनारा वर्ण
न करे एटले ते लेवाधो, साटे आ क्षुतिघ्न
ना छोटे मार चुकाववाने आवना विज्ञा उपा
य मधी, शे जे आपणा गुणना परीक्षक आपणे
थवुं, विज्ञाना कल्याणपर जवुं महीं. जो आप
णे आपणी परीक्षा खरी करी, तो आपणी योग्य
ता विज्ञा शुं केहेणे? अरे प्राणि मात्रने पोता उ
पर प्रीति एटली हे, जे पोता करतां विज्ञाने
छोटे केहेवा ए कोई इच्छतुं मधी; तेमज एक
नी योग्यता विज्ञाने खरेखरी समजणमां आवती
नथी. साटे जे क्षुति करेहे तेना पेटमां काई
पण स्वार्थ हे एम जाणवुं.

वे कुतरीयोनी

एक कुतरी व्हावानी मधी, त्वारे तेणीये विज्ञी
कुतरीनी प्रार्थना करी. जे वाई एक महिना सु
धी तमारुं घर छाने रेहेवाने आपो, छारी सु
बावडं पुरी थशे एटले जं तमारुं घर तमारुं स्वा
धीन करीश. विज्ञीये वारुं कर्तुं, अने तरतत्र घ
र खाली करीने, तेनें स्वाधीन कर्तुं. बळती ए
क महिना पक्षी घर थगीवाणी व्हायेली कुतरीने
मळवाने गई, अनें मर्षादायी केहेहे. वाई तमे
साजां ताजां नाहाई धोईनें उंयां, एजोईनें हा
नें घणे आनंद थयो. हवे जं एवुं जाणुं जे त
मनें वद्यां सुद्धां घर वाहेर हींडतां देखुं, तेना अ
भिप्राय समजाने सुबावडी कुतरी तेनें केहेहे, ख
रेज वाई छाने पण संकोच आवेके जे हे तमारी
जग्या घणा दाहाडा थया अटकावी हे, साटे त
मनें भीड पडती हशे, पण शुं कर्तुं छारां वच्चां

म्हानां नवजां, हज्जुं च्छारीसाथे फरवा जेवां यथां
 मथी. साटे जो कृपा करीने विजा पंशर दाहाडा
 रेहेवायो तो ऊं तमारो घणो उपकार मानोश. घ
 रवाळी घणो संकोच वाळी हती, तेणोये विजा पंशर
 दाहाडा रेहेवानी रजा थापी. तोपण तेणोये घर
 खाली कर्युं नहीं. पक्षी ते जोईने घरवाळी व्हा
 घेली कुतरीने केहेके, अरे तं हज्जुं घरमांघी ना
 कळती नथी, ते मारा मनसां शुं के? ऊं तनें ह
 वे वळात्कारे बाहेर काहाडीश, च्छारेतो हमणां
 च्छारी जग्या जोईये, ते सांभळीने व्हायेली कुत
 री तेनें केहेके, शुं तं च्छाने वळात्कारे काहाडना
 रीके? तो हवे काहाड बार जोऊं, केवो काहा
 डळ, हवे ऊं तनें खरं कळकुं, जे तु च्छाने वळा
 त्कारे काहाडीश, त्याहां सुधी आ घर तारे हा
 थ आवतुं नथी.

सार

जेना चायसां सखलो ते पारथी. तेम जेना हाथ
 मां वस्तु ते तेमो घणो साटे थापणी वस्तु विजाने हा

थ

घ मथी हशे तो फरीनें थापणे हाथ आवशे, एवो
 खो भसो आव्या वना, हाथमांनो वस्तु आप
 वो नहीं. एटलामाटेज जे पुरुष शाणा, उदार
 के, ते विजाने काई वस्तु आपवी पडेतो वखत उ
 पर आपोरेके, पण जे साख्यनं माणस नथी, अथ
 वा जुठं बोलशे एवी जेना उपर शंका आवेके,
 तो तेनें उछीतुं पण आपवुं ए मूर्खता.

—*—

वात ७०

शियाळ अनें शाहामृग

एक दाहाडो शियाळे शाहामृगनें पोताने घेर
 जमवाने बोलाव्यो. अनें तेनी मशकरी करवा
 सारु एक क्विदी थाळीमां खीर घालीनें, तेमो आगळ
 मेहेली. पक्षी वेमर वे जणा खावा वेडा. त्यारे
 शाहामृगनी चांच लांबी तेणे करीनें खीर लेवा
 सारु तेणे नाना प्रकार कर्या, पण लेवायो
 नहीं. एटलामां शियाळ ते खीर खाईनें थाळी

चाटवा

घाटवा लाग्यो. शाहासुग पोताना मनमां संको
 च पामीने तेवोज भुख्या घेर गयो. ते दाव स
 नमां धारीने कोटलाक दाहाडा गया, पछी ते शा
 हासुगे शियाळने जमवा तेहो. अने एक सुर
 यीमां आंबाना रस भरीने शियाळना आगळ मेहे
 ल्यो. ते सुरयीनुं पेटुं छोटां, अने गळुं लांबुं, अ
 ने सांकडुं हतुं; तेमां शियाळनुं छो पैसे नही, ते
 बखत शाहासुगे सुरयीमां चांच घालीने क्यस खा
 वुं, ते तेने देखावुं. सारांश एजे, शाहासुगे य
 थास्थित पेट भयुं. अने ते रस खाना वाहेर चां
 च काहाडे त्यारे जे रसनां टीपां सुरायी उपर
 पडे ते टीपां चाटोने शियाळे समय काहाडो. पण
 मनमां घणो खटो ययो. पछी पोताने घेर जती
 बखत, शियाळ शाहासुगने केहेवे. भाई ते जे
 कथुं ते योग्यज कथुं हे. छो जेव तने कथुं, ते
 वुं ते छाने कथुं. माटे एमां छाने खोटुं लाग
 वानुं कारण नथी.

सार

विजानी मशकरी करीने राजी थवुं, ए भला
 माणसनुं काम नहीं, जे एवुं करेहे, तेनी पछी
 विजे जारे पाछी उळटो मशकरी करे, त्यारे ते
 ने चीडवुं नहीं, आपणो खोटो रूपैथो आपणने पा
 हो आपे, तो खोळामां खेवो. जेस शियाळे पो
 ताने अपराध खीकार कथी. तेवुं, न करे अने
 विजे आपणी मशकरी करी, एठले तेनाउपर दो
 ष मात्र मेहेले. पण आपणने जेवुं माठुं लाग्युं
 तेवुंज विजाने लाग्युं हसे; एना विचार करता
 नथी.

— ० * ० —

वात ७१

गरुड पक्षणी अने शियाळणी

एक गरुड पक्षणी हती, ते पोताना वचाने मा
 टे कांडे खावानुं सोधती हती, तेणीये एक शिया
 ळनुं वचुं उघाडामां पडुं दीवुं. तेने पणमां घा

छीने

लौनें उडो, एटलामां तेनी मा पासेज हती, ते होडती बावी. अनें छोटे दीन खरे करीनें आं ख्योनां आंसु आणिनें, तेनें करारमा लागो. अरे बाई मज गरीब उपर दया कर, ह्यारा एक नाएक लाडकवाया बच्चानें लेई जईनें, ह्यनें एकली करीय नहीं. आ ह्यारुं वाळक ह्यनें पाहुं आणीय तो, ते ह्यनें वाळकनी भीख आणी; एवं ऊं जाणीय. गरुडपक्षणी निर्दय हती, ते पीये स मनमां आण्युं, जे ह्यारुं घर ऊंचुं झाड उपर हे, त्यांहां आ शिवाळणी जो उपद्रव करी सकनार हे? एवं विचारीनें तेणीये तेनुं काहुं न सां भळतां, ते वखुं पोताना बच्चानी आपळ लेईनें सेहखुं. ते वखत शिवाळणी रीसेकरीनें गांडी स रखी थयो. अनें वेर कस वाळ, माटे आगळ पा हळ जेती हती. एटलामां ते राहाडे पामेना खेतमां, गामना लोकाये याम देवना निमित्त हाम कथी हती; त्यांहां जईनें एक देवतानो अंगारो लेईनें, गरुडपक्षणीनो माळो जे झाडउपर हती, ते झाड तळे आवाने आस पावथी कां

टा

टा घास इत्यादिक आणीनें, ते झाडनें वाळवानो उद्योग आरंभो. ते जोईनें गरुडपक्षणी भयभीत थयो. हवे बचां सुडां आपणी राख थशे एवं विचारीनें अनें उळटी शिवाळणीनो प्रार्थना कर वा लागी. केहेके जे बाई कृपाकरीनें वेर सुकीयो ऊं चुकी, एवं कहीनें तेणीये शिवाळणीनुं वखुं जीवतुं पाहुं आयुं.

सार

पैसे अथवा अधिकारे ऊं वळियो कुं. ए भ संसे कोईनो घात करीये नहीं. आपणे छोटे आश्रय हे, अनें जेना घात करीयेहीये ते केवळ दुर्बळ हे, माटे ते आपणनें काई उपद्रव करी सकशे नहीं, एवं सर्वथा मनमां आणवुं नहीं, ते केवोपण गरीब होय, तोये ते कोई वखत किये टेकासे केथी चुत्तीये वेर वाळशे, ए केहेवातुं नहीं. एकवार वेर थयुं एटले, ते मटवुं कठण पडेके, छोटे जवरां राजा होय, तेनें पण मार नारा मारी सकेके. जे वेर लेवाने पोताना

जीव

जीव उपर जे बादरे ते हजार बुक्तीये पोतानुं वे
र ले. हरकोई डोशी राजाना घरमां पण आ
ग घाली सके. हरकोई एक गरीब छोटा बड
बानना कोकरानो जीव लेईसके. एटला माटे
हयुं कठण करीनें, जे लोकानें दुःख देहे, पण ते
हे लांभी नजरे जावुं.

—*—

वात ७२

सुहर अने गधेडो

एक गधेडो अने सुहर, एमनो अरण्यमां अचा
मक मेळाप थयो. ते बखत गधेडो थडामां ते
में केहेके. जेगोपाळ हो शेटजी, ते तेनुं डोळ
जोईनें सुहरनें आश्चर्य लाग्युं. अने कोधना आ
वेशे तेना मनमां आव्यं जे, ह्मणां एनां आंतर
डां बाहेर काहाडी नांखुं, पण एटलामां तेना म
ननें विवेक थयो, अने गधेडानें केहेके, अरे हल
का जीव तुं तारे मागे जा, ऊं गधेडानें लोहोये

झारी

झारी डाहाड वटाळतो नथी, नहीतो तारो जी
ब लेवानें छाने एक क्षणनी वार नथी.

सार

मूर्ख होयके ते ऊं डाहायो कुं, एवं जाणीनें
छोटानो थडो करवा जाय के, पण ते त्यांहांथी
पोतानो जीव लेईनें पाळो आवे, एटले घणी क
रो, एम जाणवुं. मूर्खे मूर्खे साथे, चाकरे चाक
रनी साथे, नीचे नीचनी साथे बोलवुं. एवं जाणी
नें छोटा के ते रीस न चडावतां, नीच मनुष्यना
एक वे अपराध सहन करे के, माटे मूर्खादिके निः
शक थईनें वारे वारे तेमनी साथे तेवा प्रसंग आ
णवो नहीं.

—*—

वात ७३

वे वायडीयोना थणीनी

एक पुरुषनें वे वायडीयो हतोयो, पेहेली तेनें
बरोबरीनी स्वरुपे साधारण हती, अनें बिजी जवा

३७

ने सोळ वर्षनी घणी रूपवती होती, तेजीये रौता
 ने स्वरूपे अने गुणे करीने घणीने घणे सुखी क
 री; पण ते पचास वर्षनी अवस्थाने पास्या हतो,
 माटे तेथी ते तेवी सुखी नाहती. ते पुरुषना के
 श काई काळा अने काई धोळा घया हता. ते
 थो तेनें वृद्धपणं जणातं हतं. ते, तेखाने घणं
 खाटं लागतं, माटे तेथी जाहारे पुरुषसाथे विवा
 र करवा वैसे, त्वारे ते न जाणे एम हळवे रहो
 में घुक्तीथी निव्व तेसांना काई धोळा वाळ उखे
 ही नांखे; ते एम जाणे जे मांहेली वात जे होय
 ते ही, पण बाहेरथी लोकोनें छारा वरनां घर
 उषणां जेटलां चिन्ह न देखाय, तेठसुंज खरं.
 जे छोटी खी होती, ते एम जाणे, जे या धोळा
 वाळ छारा घणीनें वृद्धावस्थानं भूषण के, माटे
 जाहारे जाहारे तेना वारो आवे, त्वारे त्वारे ते
 पण तेसांना काळा वाळ तोडी नांखे, ए प्रमाणे
 वेजणीघोना उद्योग चाल्यो. तेथी क महीना न थ
 या, एटलासां ते वचारानो साधानो वाळ एक
 सरळो रह्यो नही.

सार

सार

जेनें सारं खाटं ए व्यवस्थानी समजण नथी ते
 नी कृपाथी पण तोटे आवेके, जे खीघो पोताना
 घणानं सारं दळती होय अने घणीनी कृपा उपर
 नजर होय, तो तेजीये जे वात करवी ते घणीनें
 पुछ्या बना करवी नहीं, कोई वात खीनें पोता
 नी बद्दीये सारी लागी, पण ते वात घणीनें पुछी
 में करी होय, तो तेमां वेनें घणं सारं घाय, अ
 ने ते खीघोना धर्म पण के.

—००*००—

वात ७४

देडका अने बे वळद

बे वळद एक तळावना उपली तरफ लडता
 होता; ते तळावसाने एक देडके दीठा; ते विजाने
 केहेके, अरे जो जो ते सामे शुं घायके, ते हा
 थ हाय हवे आपणी श्री गत थाशे, विजो बोळ्यो
 अरे तूं आटलो कां विहक. तेमनी लडाईनें अ

ने

नें आपणें शो संबंध छे, तेमनी जात जुदी, जनें आपणी जात जुदी, रीत जुदी, खारु जुडुं, ते आपणनें दुःख देवानें लडता नथी. एतो एक वि जानें काहाडी मेहेलीनें प्रीते घरनेो धणी थवा माटे लडेके; त्यारे आपण आपणे ठेकाणे मखे स रखा अमथा कां विहीये. तेमें पेहेलो केहेछे चरे ते खरुं, पण हवे एवं थगे, जे ते बेमांथी एक हा रणे ते नाथीनें आ तळावनां आवणे, त्यारे आपणामांथी केटलाकनें पण तळे कचरी नांलग्गे, माटे तुं विचार, जे तेमनी लडाईनें थमें आपणनें केटलो पासे संबंध छे.

कार

छोटा छोटांनी लडाईमां पासेनां गरीब सह ज साथीं जाय, तो जे छोटाणे पक्ष करीनें लडाईमां आगळ थाय तेना नाथ थाय एमां श्रुं के हेवं, जेमां सर्वनं सारं थतुं होय, एवी एकाशी बातमां छोटा साथे न्हाने जावुं; पण केवळ लो

कोना

कोना कल्याण सार उद्योग करनारा, एका छोटो थोडाछे. जे घणा लोकोना सारा सार लडाई उभां करे, तेमां तेमनं लक्ष घणुं करीनें पोताने सार्थ साधवा उपर होयछे, पण ते लोकोवाले लडता नथी. तो आपणे हाथ राज्य आवे, आपण राज्य सुख भोगवीये, आपणी आज्ञामां सर्व लोक रेहे, माटे लडेके, पक्षी ते अधिकार उपर आआ एटले प्रथम प्रजानें पीडवाने आरंभ करे, माटे एवा जे लडनारा छे, तेथी हा हाथो होय तेणे दूर रेहेवं; आपणें चालेतो वे लडनाराचेनी लडाई बंध करावीनें लोकोनी पीडा निवारण करीये.

—**—

बात ७५

पराळ मांनुं सावर

कोई एक सावर पारधीनां कुतरांये झाडीमांथी काहाडी मेहेल्युं; ते नाडुं नाडुं एक गामडानां

ढोरांना

हौरांना वाडामां पेशीने पराळना दगळामां संताई रहुं. ते जोईने वाडामांने एक बळदे तेने पुणुं. अरे तें अहीयां आवीनें शुं धायुं हे? ऊं ए न जाणुं, के जेथकी विहीनें तं संतायुं हे, ते मरण तनें अहीयां रोकडुं मळगे. सावर तेनें के हेहे, भाईयो जो तमे सर्व कृपा करीनें ह्यांना रे हेसो, तो ह्यारो नभाव थगे. लाग जोईनें ऊं अहीयांथो उतावळुं जईस. पक्षी ते सावर सां ज थतासुधी हतुं, ते संध्याकाळ थतांज पेहेलो कडवना पुळा लेईनें गोवाळीयो वाडामां आयो, ते नी नजरे ते पळुं नहीं. पक्षी वाडानो कारभा री आयो, तेणे पण तेनें दीठुं नहीं. ते बखत सावरना हईयांमां हर्ष माथ नहीं. पक्षी ते बळदेनें केहेवा लाग्युं. जे भाईयो तमनें धन्य हे, आज ऊं उगयुं ते तमारे पुण्ये, तमारा सर खा परोपकारी कहीं नहीं होथ. ते सांभळीनें तेमांनो एक बळद तेनें केहेके, अरे तं अहीयांथी कुणळ थोम तारे ठेकाणे जा. एवं अह्यारा न बथीहे. माटे परमेश्वर करे अनें आ वाडानो

थणी अहीयां न आवे तो सारुं, जोते आवणें तो तेनें सो आंख्योके. तेनी नजर आगळ तजथी आ पराळमां संताई रेहेवागे नहीं. एवं बोलेके, ए टखामां वाडानो थणी बाहेर गयो हतो, ते घेर आयो. आवतां वांतज प्रथम वाडामां गयो, अ नें चाकरो उपर तरफडीनें केहेके, अरे रामा, आ बळदेनी आगळ कडव कस नधीरे, ऊं रो ज आटलं कळुं पण तमनें लाज कस नथी आ थनी. हौरा, ते बळदेनी आगळ विजां चारना पुळा आणिनें नांख, शां रांडनां माणस दुःख देनां रांहे. एम तरफडतो तरफडतो आणि सर तेणी सर करेके, अनें सघळे ठेकाणे नजर घालीनें जु एके, एटखामां पराळमांथी सावरनां शीमडां ते नी नजरे पळ्यां. ते जोतांवेतज चाकरोनें केहे वा लाग्यो. अरे आं शुं केरे, आ पराळमां? अ ह्यायो सावररे सावररे धाजोरे धाजो. ते सां भळतां वांत चाकर कुतकां लेईनें आय्या तेमणे तत्काळ तेनो जीव लिथो.

आपण, जेठली आपणा वरना कामनी चिंता राखीये छीये, तेठली चाकर राखना नथी, धाय से बाधो जायते जाओ. एवं जाणानें ते निश्चि म रहेके, पण जेनुं बहू खाईये तेनुं हित धाय ते कावुं. ए जे सेवकोना धर्मके, ते तेमनें स्व भनांहे पण नथी होतो. तेमनुं मन सर्वश पोता ना स्वार्थ उपर होयके, ते स्वार्थ जेनां यतो हो य ते काम ते करे. तेआगळ धणीनुं हित तेमनें दीडामां आवतुं नथी. विचार कर्याथी, पोताना उडाउ पणाथी भाग्या, एवा ग्रहस्थ थोडाज नी कळणे, पण चाकरोना बगाड्याथी धुळ मय्या ए वा घणा. एठला नाटे धणीये पोते सावधानाई राखनी. केवळ चाकरो उपर भरसो राखीनें रे हेवुं नहीं.

कुतरो अनें दीपडुं

कोई एक दीपडुं घणा दाहाडा मुख्यं रहीनें सुकाई गयेलुं हतुं, ते एक दिवस चांदणी राते वा खावा सार फरतुं फरतुं कोई एक कण्डीना वा डा आगळ आयुं. मांहे पेटुं तो त्यांहां तेणे ए क पाळेलो कुतरो दीडो. तेमनुं अरस्परस आगत स्वागत यथा पछी दीपडुं कुतराने कहेके, अरे तुं घणो सारो दीसेके, जं खड्ज कड्डुं जे सारा सरखो ताजो, अनें देखाउडो, ह्ये कोई दी डो नथी. तो केहे वार, एनुं कारण शुं अरे जं सारा करतीं सो तरफथी उधीन वत्तो करुं, तो पण ह्यानें पेट भरीनें खावा मळतुं नथी. कुतरो केहेके अरे जं करुं तेवुं तुं करीश, तो तुं प ण ह्यारा सरखो ताजो यईश. दीपडुं पकेके, तुं शुं करुं? कुतरो केहेके विजुं काई नहीं, धगा नां वारणा आगळ रातनी चौकी करीनें जं चो

रने आववा देतो नथी. दीपडुं कोहेके, ते ऊं पण
मनथी करीश, अरे ऊं अरण्यतां भटकतो पारी
नें टाहाड तडको सऊंऊं. ते छाने घरना छां
बडासां बेणीनें पेड भरीनें अन्न नळे तो विजुं शु
जोईये, ए प्रमाणे ते बेजणा वातो करेके, एटला
जां कुतराना गळ्याजां दोरीना पयो हमा ते उा
र दीपडानी नजर गयो. त्वारे दीपडुं कुतरानें पु
केके, भाई आ तारा गळ्यासां शं के, कुतरो वा
ल्यो अं, एतो काई नही दीपडुं वाच्युं काई न
हां पण जाणवा तो दे. जे ए शं के, कुतरो के
हेके. अरे ऊं स्वभावे लगार खोटो के, ते लोको
नें करडुंके, अनें ऊं दाहाडे ऊंचं तो राते चोकी
सारी करुं; माटे छारो धणी छाने दाहाडे दोरी
ये बांधी मेहेले के, पण जांछां संध्याकाळ थयो
एटले ते छाने कोडे; पद्यो ऊं राजा थाऊं, मन
सां आवे त्यांहां फलं, गारे खावा पीवा जोईये,
ते तो छारो धणी पोताने हाथे भनें एवं खव
रावेके. त्वमज सघळां घरनां माणस छाराउप
र माथा राखेके, सांणागां रोडलानो कडको रहे,

ते

ते मज वना विजा कोईनें नांखे नही; माटे जो
तं छारी पेडे करीश, तो कोटलो सुखी थईश?
ते सांभळतांज दीपडुं पाके पगले नाडुं; तेनें कुत
रो हाकनारीनें केहेके, अरे आवरे आव, नासे
के कां ते केहे? दीपडुं पाकुं फारीनें उत्तर देके,
तारे भाई नथी जोईतुं, छारे तारुं सुख. ए तारे
सदा रहे, छारी साथे तो कृटो रेहेवानी वात
होय, तो ते कर. तारी पेडे बांधी मेहेलीनें छ
नें काई राजा करे, तेपण छारे नथी जोईतुं.

सार

कृटा रहीनें गरीबी होय ते सारी, पण परखा
धीन रहीनें छोटी पदवी सारी नहीं. जे पराधी
न थयो, तेनुं सज्जन पणुं, छोटपणुं धीरज, अथवा
विजा सद्गुण, तेनें कामना नहीं. तेणे तो धणीना क
ह्या प्रमाणे चालवुं जोईये, अनें जे धणी जे काम
केहे, ते नीच कर्म होय, तोपण करवुं जोईये.

बात

गाडहें जेनें बकरीये पाख्युं हतं,

एक गाडरानं वच्चं बकरीये पाख्युं हतं, ते एक दाहाडो बकरीनी साथे जवं हतं, तेनें एक दीप दुं रस्तामां मख्युं. ते केहेके, वच्चानं मलकः वा तारी मा न होयं, तारी खरी मातो पैला सामा गाडराना टोळामां खरेके. वच्चुं उत्तर करेके, बाधा तुं केहे ते खरं, पण जेणीये छाने केडला क महिना सुधी उपाय नहीं माटे पेठमां राख्युं, अनें व्हायी त्यारे आ पृथ्वी उपर निराधार नां छाने पेरते जती रही; तेनें ह्यारी मा एस तं क होय तो केहे, पण ऊं तो आ बकरीनें ह्यारी मा एस कऊं. जे जेणीये छाने दीन अनाय जाणनें, पेठना होकरा प्रमाजे पाख्युं, पोख्युं, अनें रुधळी वाते ह्यारी संभाळ लीधी. दीपदुं केहे के, अरे पण जेणीये तेनें जन्म आय्यो ते तारे पू ज्यं के, अनें तारी समता तेना उपर वती जो ईये. वच्चुं केहेके, तेणीये छाने जन्म आय्यो ए ऊं

केहेनार

केहेनार नहीं. शमाटे जे जेनें ऊं काळुं के गो रं ऊं ए खबरज नथो, अनें जो तेणीये छाने जन्म आय्यो ए वात खरीके, तो तेणीये आ ह्यारा उ पर उपकार करी, ए वात पण खरीज. जे छाने पुरुषने जन्म आय्यो, जेणे करीनें ऊं खाटको ने हाथे पडोश. त्यारे जो वाह जेना कोई प्रकारे ह्याराउपर उपकार नहीं, तेनें ऊं भा कम कऊं.

सार

जे आपणं सारं करे ते आपणां मावाप, जेणे नरो जन्म आय्यो ते नहीं, मावाप अनें होकरां ए वे जणांये अरस्परस उपयोगी थवं जो ईये; होकरां अज्ञान के, त्यांहां सुधी मावापे तेमनुं पाळन पोषण करवं, विद्या भणावची, घणां लाड न लडावीनें तेमनें आपणी आज्ञांमां राखवां; पक्षी ते छोटां थईनें कमातां थवां, एटले

देसणे

तेमणे मावापनें कशीवाते ओळुं पडवा देवुं नहीं.
 एवो ए परसरोनो धर्म हे. घणुं करीनें क्कोक
 रानोज वांक जणायके, जे ते पोतानी जवानीना
 भरमां मावापनुं क्क्यां सांभळतां नथी; तेम केठ
 लांक मावाप पण खोटां होयके, जे ते पोतानां
 होकरानें न्हान पणसां विद्या शिखववा सारु से
 हेनत करतां नथी. पोताना सामर्थ्य प्रमाजे हो
 करानें खावा, पोवा, अनें खरचवा आपतां नथी;
 अहो ह्योटां एटला वास्ते तेमना मनसां ते एम जा
 ने, जे अहो जेटलां वानां होकरानें करीचे, तेठ
 लां वानां एमणे सेहेवां; पक्षी होकरांपण ते जां
 ईनें पोतानी मर्यादा सुकीं देके. माटे बाप हो
 करानें, सगांसगानें, धणी धणोयाणीनें, अरस्य
 रस एक एकनुं साहं करतां जवुं, तोज खेह रे
 हे. जेसां खेह नहीं ते नाम मात्र सगा केहे
 वानीज.

मोर जे पोताना खरनें खोटे

जाणोनें खेद करतो हतो तेनी

एक दिवस मोरनें पोताना शब्द कठोर एवं
 जाणोनें घणो खेद थयो. त्यारे तेणे सरस्वतीनी
 प्रार्थना करी. हे दीन दयाळे, हे देवी, हे जग
 दंब, ऊं तारुं वाहन, अनें ह्यानें खरमां कोल्य
 जोते, ए तनें योग्य नहीं, जो वारु कोल्य बोल
 वा मांडे, एटले सर्व लोकोना कान अनें मन त्यां
 हां जईनें वळगेके. अनें ऊं ह्यो उघाडुं बोलवा
 नें एटले सर्व लोक ह्यारी मगकरी करेके. एवो
 मोरनी प्रार्थना सांभळीनें देवीनें दया आवी. प
 क्षी देवी तेना मननुं समधान करेके. भाई सा
 रो शब्द जाणोनें जो कोल्य सुखी हे. एवं ता
 रा मनसां आवतुं होय तो खरूपे अनें ह्योटप
 णे तुं पण सुखी हे. मोर केहेके; देवी! वाणी जो
 लीठी नथी तो एकला खरूपनें अनें ह्योटपणा

नें शं करीये? देवी बोली अरे परमेश्वरे एक एक कनें एक एक गुण आधोके. तनें सौंदर्य, गरुड नें बळ, कोल्यनें सारोखर, पोपटनें मनुष्य वाणी, खडुतरनें शांति, ए पक्षी जेम पोत पोताना गुण उपर प्रसन्न रेहेके, तेम तारे पण रेहेवुं. न हीतो, अमथो आशा वधारीनें पोताना जावनें एकलुं दुःख मात्र देईश.

सार

एकली पासेज सर्व गुण जोईये एवी देवनी इच्छा नथी. एटला माटे जेनें अनेक गुणनी आशा हे तेनी ते पुरी यती नथी, माटे खेद पासीनें आपणा गुण होय ते उपर अनादर करवो न हीं. मेहेनत करीनें ते गुणनी दही करवी, सघला गुण पेश करीनें तेनुं फळ तो एज, जे मननें आनंद पसाडवुं. ते आनंद जेटलो ईश्वरे आपणनें अनुकूल करीं हे. तेठलासांज करी खेईये, तो आ मनुष्य लोकसां जे सुख हे ते ते पुरुषनें प्राप्त यथां.

वात

वात ७५

किडी अनें माख

एक दिवस किडी अनें माख एमनें पोत पोतानो छोटाई माटे घणी कटकट यथी. माख किडीनें केहेके, अरे ह्यारी छोटाईनी तो कोईनें आंतोज नथी; जो जे यज्ञ थाण इत्यादि कर्मसां जे जे पदार्थ होयके, ते प्रथम जं चालुं, एकी देवनें ते मळे, देवना डेरामां जंजुं डेकाणुं ते ह्या हं. जं डेरामां रज्जुं एटलुं कोई रेहेतुं नथी. ह्यानें राजानी सभामां जवानें कांई अटकाव न हीं. जं राजाना लभाउपर बेसुकुं. ए प्रमाणे ह्यारे जे जे जोईये, ते ते जं मेहेनत कर्था बना खाजुकुं, पीजुकुं, अनें भोगवुं हं. एवी जे जं ते ह्यारोसाथे तुं रांक बरोवरो क्यांहांथी वार करीश? किडीये ते सघळुं सांभळी लिधुं, पक्षी तेनें उत्तर करेके, अरे सांभळक. छोटा छोटाथो नें घेर जईनें जमवुं एमां शोभाके खरी, पण

कारे

३९

बपारे ज्यारे नैतह होय त्यारे; तने तो लोक हीं
 को मेहेले, तोय तुं लाज वनी यईनें अन्न उपरथीं
 उठती नथी. ते राजानी सभानां जवानो, अने
 राजाने खभे बेसवानी बातो छोटीयो वनावीनें
 कहोयो; पण हाने खरी खबर हे, जे एक दाहा
 डो ऊं दाणे खेईनें ह्यारा चरभणो जतो हतो,
 त्यांहां रत्नासां तमारानांनो एक अहस्य, एक
 पदार्थ उपर बेसीनें ह्यो मटमटावतो हतो. ज
 पदार्थनं नामपण ह्योडे बोलतां लाज आवे हवे तं
 केहेके को ऊं डेरामां घणं रज्जुं, तेनं कारण ऊं
 तने कज्जुं, तारे घर बार काईं हे नहीं, माटे तं
 देवना डेरामां रहीं दाहाडा काहाडक, तं अज्ञा
 री पडे मेहेनत करीनें दाणानो संग्रह करती न
 थी. माटेज तारे टाडना दाहाडानां भखेभरवुं
 पडेके, अने अह्यो उद्योग करीये बीये; माटे ते दा
 हाडामां खार्ड पीईनें ऊं पाळा घरनां सुखी रहीं
 बीये.

सार

उद्योग नाना प्रकारना हे, केटलाक एवा हे जे
 जेसां काईं फळज नथी. जे करीनें छोटी बडार्ड
 मान देखाडवी अने विजाने आपणो कांटाळो आ
 णवो विजा केटलाक एवा हे जे जेना करनारा
 ज्यांहां जाय त्यांहां ते सर्वजे गने. जेनें उद्योगहे
 माटे राजानी सभानां जायके, एवं न होय तो,
 काईं उद्योग नथी माटे दाहाडो काहाडवा सा
 ह जायके तेणे राज सभानां जवानो प्रतिष्ठा के
 हीं नहीं. दंभ देखाडवा साह जे देवपुजानो
 आडंबर मांडेके तेनो ते भक्ति शा कामनो, जेनें
 पोताने घर कोदराना रोडला मळता नथी तेनें
 काईं छोटा अहस्यनो पत्तीसां मिष्टान्न मध्यं सा
 टे तेसां काईं ह्योटाई आवो. तो तेज ह्योटां
 माणस जे, जे उद्योगी, अने जे पोते मेळवेलीं सं
 पत्तीनुं सुख भोगवे, अने जेनें उद्योगी माणस गने,
 जेनें आळशी माणसनो कांटाळो आवे, एवा पुरु
 षनें छोटा पदवी न होय तोपण तेनें सर्व लोक
 माने.

घबडो कुतरो

एक कुतरे प्रथम पोतानी जबानीर्मां घणाक शकार मारीनें पोता उपर धणीने खेह पेरा कर्यो, ते समयमां धणी तेनें बचीयो करे, खोळा मां बेसारे, तेनें साहं साहं खवरावे, पक्षी घबडो थ यो त्यारे ते कुतराथी तेवी चाकरी थाय नहीं एवं थयुं तोपण एक दाहाडो ते धणीनी साथे श कारनें गयो, त्यांहां साथेनां कुतरांथी आगळ ज ईनें तेणे एक हरणनेा पण पकड्यो. पण तेना छोमांना केटलाक दांत पडी गयाहता अनें के टलाक रच्याहता ते हालता हता माटे तेनाथी सारी पेठे ते झलायो नहीं, अनें हरण खेचालेव करीनें कुटीनें नाथी थयं, त्यारे धणीनें कुतराउ पर घणी रीस चडी, अनें तेनें मारवा मंड्या, त्या रे कुतरो केहेके, अरे नोच लभारेक हाथ बंध रा ह, जं तारो जनेा चाकर हं, माटे काई विचार

का, छो हरणनें पकडवासां काईं आळस कयु नथो, पण ह्यारो उपाय न चाख्यो त्यांहां जं थुं करुं. हवे घबड पक्षीं ह्याराथी तारी चाकरी घली नथी, माटे तेनें रीस चडेके पण ह्यारी आ गळनो चाकरी उपर नजर राखीनें काई कर.

सार

वणुं करीनें धणी लोकोनी कृतघ्नता एवीज दी ठामां आवेके, जांहां सुधी आपण तेना काममां आवीये त्यांहां सुधी ते आपणो. पक्षी आपणुं काम नथो एवं थयुं एटले ते आपणो नहीं, एव ज आपणे जेना उपर उपकार कर्यो ते पुरुषनो पक्षी आपणथी उपकार न थाय अथवा थोडो था य तो ते पुरुष प्रथमनो उपकार न संभारतां उ छटो आपणनें अपकार करवा इके.

सांसे समझीने होकरो

एक समझीने होकरो घणा दाहाडा सांसे प
हीने मरवा सरलो ययो, त्तारे पातानां पूर्वनां
कथों कर्म संभारीने तने छोडुं भय पेदा थयुं प
ही ते माने केहेके. सा कांई व्रत उपवास दा
न धर्म देवभक्ति करीने देवनीपासे ऊं साजो था
ऊं एवं मान. सा उत्तर करेके. वापा देव त
नें साजो करणे ए भस्मो ज्ञाने आवतो नथी, जे
तुं सवळो जन्म हिंसा करतो जायोके, जने को
ईये देवनें अर्पण करेला पदार्थ ते चोरो खावा
सां ते आवं पाकं जायुं नहीं. जने तेना तने को
ई दिवस संताप पण थयो नहीं, ते तारे साटे ऊं
देवपासे किये छोडे प्रार्थना कहं ते केहे.

सार

मजथी घणां दुष्कर्म थथांहे, हवे छारी शीगत
थरो एवा विचारमां पडोने मरती वस्तु जे छो
टुं भय पासमार. एवं लज्ज सनसां जाणीने जा

जज सावधान कां न थईये. जे हद्द थयो जने
जेनें आगळ पाप करवानुं सामर्थ्य रह्युं नथी, मा
टे जे पश्चात्ताप थयो ते पश्चात्ताप खरो नहीं.
जनें खरा पश्चात्ताप विना परमेश्वर क्षमा कर
तो नथी. शासाटे जे एवा पापी उपर क्षमा क
रीने देव पापनी ह्मी कय करे. एसाटे जे पो
तानो मरण काळ सुखे करीने थवानें इके तेणे
प्रथमज सावध थईनें पाप उपरथी बुद्धि वेगळी
करथी.

—○*○—

सिंह जनें उंर

एक सिंह ऊंहाळाना दाहाडामां अरण्यमां ए
क आंबानी शीतळ जायामां निश्चित सुतो हतो
त्यांहां तेना शरीरउपर थईनें उंररे दोडवा मां
छुं. तेथी ते जायो. तेना पंग्लामां एक उंर

आव्यो तेने तेणे मारवा मांडो. त्वारे उंदरे ते
 नी प्रार्थना करी हे महाराज तसे छोटा को सव
 लां पणूना राजा हो. ऊं तैमारी आगळ केव
 ल रंक कुं ह्यारे हथि तमारे हाथ बटाळतो
 नहीं. अनें ह्यनें जीव दान आपवुं एतमनें या
 ग्ये. ते सांभळीनें सिंहनें दया आवा अनें उंद
 रनें सेहेली दीधो, पछो एक राहाडो तेज सिंह अ
 रण्यमां फरतो फरतो तेज आवा तळे पारथीये
 जाळ बांखी हतो तेमां आवीगयो. तेमां सिंहे
 पोतानं बळ हतुं तेठलुं सवळ खरच कथे पण
 हुटको ययो नहीं, पछो छोटे शब्द करीनें आर
 डवा मांडुं ते सांभळतांवेतज ते उंदर सिंह पा
 से आव्यो अनें केहेवा लाग्यो, राजा भय पामीश
 नहीं निश्चित रेहे एम कहीनें तेणे दांते कीनें जा
 लनी गांवा कातरी नांखीनें सिंहनें जाळमांथी कु
 टो कर्वा.

सार

सार

छोटा हे तेमनुं पण ह्योयुं काज बखते व्हांना
 ने हाथे दापडे, -एटलाभाटे जे आपणी सत्ता
 मां के तेउपर खेहे करीनें छपाज राखवी. व्हां
 नाने हाथे पण उपकार थई सकेहे. वैभव के
 ते सर्वदा सरखो चालतो नथी. एवी बात जो ख
 रीके, तो पछो आपण सर्व लोकोसाथे सारे भा
 वे कां न चालीये. आपणी चालती बखतमां जो
 आपणे लोको उपर उपकार करी मेहेल्यो
 होय, तो लोक पण आपणी पडती वेळामां
 काममां आवे, सवळा न आवे पण तेमांनो को
 ई एवाडो पण गुग जागनारो नीकळेज, जे एक
 जो सहायतावी आपणां सर्व संकट भागे.

—०*०—

बात ८३

उंदर साथे सिंहीनुं लग्न

पहवाडेनी बातमां केहेलो सिंह, जाळमांथी कु
 टो थया पछो राजा थईनें उंदरनें केहेवा लाग्यो.

अरे

अरे ते ज्ञाने छोटी उपकार कर्षी नाटे जं ता
 रो उपकारी यथोकं, हवे तारे जे जोईये ते मा
 ग, ऊं आपीग, ते सांभळीने उंरर फुल्लो अने
 पोतानो योग्यता शुं सागवानी हे अने शुं सागवानी
 लयी, ए विवार्था विनाज सिहने केहके, विनता
 करुंकु महाराज. जेमाटे तसे प्रसन्न थईने गे
 ते माग एत कहोको, तो ऊं मर्थाया सुकाने मा
 गुंकं, जे तजारी कान्या ज्ञाने आयो. ते शब्दे का
 ने पडतांज सिहने अणुं खोटं लाग्यं, पण शुं को व
 चनथी बंधायो एटला माटे कहां, जे आयो, एत
 कहीने तेणे पोतानो कान्या उंररने आपवाने आ
 णी, तेने पोतानी जवानानी धनभां चालतां तेना
 पण उंररउपर पड्या. एटले ते तत्काळ भरण
 पाव्या.

सार

आपणामां सारा नरतानो विचार नहोय तो
 हरयक वस्तूना दृष्टा करीने आपण दुःखी थईय.

सार

सारानरतानो विचार जेने नथी, ते छोटी राजा
 हाय तोपण ते पोताना आत्माने सुखी करीसकतो
 नथी. ते राजा थईने रांकना जेवुं दुःख भो
 गवेहे; अने रांकहे, ते सारानरतानो विचार क
 र्थाथी, इंदनी संपतीना सुखने भोगवेहे. आ सारा
 सार विचारनुं लक्षण एज, जे ऊं कोण; ह्यारी घो
 ग्यता थो; ह्यारी निर्वाह केटलानां थायहे; इत्या
 दिक जोईने जे पगलां मांडवां ते.

—*—

वात ८४

ससलां अने देडकां

कोई एक वखत, घणो वा कुठ्यो, तेथी सघ
 ळां झाड डोलवा लाग्यां, अने भुंइउपरनां पांढ
 डां उडवा लाग्यां, अने धूळ उड्याथी दशेदिशा
 ओ अंधांध थईयो. ते जोईने, एक वामां
 ससलां हतां ते, विहीने गभराईने नाठां, ते घ

णे

शे प्रथमै वाडथी बाहेर नीकळ्यां. आगळ जतां ते
उनें एक नदी आडी आवी, त्यारे ते दुःखी थई
नें केहेके अरे, हवे पुरं थयुं! जांहां जईये त्यां
हां आपणी पळवाडे विपत्तीज आवेके; माटे आ
वा संकटतां काळ काहाडवो ते करतां, नदीनां
पडानें जीव आपीये ते सारु. एवी सर्वेचे निश्चय
कथीं, अनें नदीनी तीरे गयां; त्यांहां देडकां वा
हेर नीकळ्यां हतां तेमणे ससलानें दोटां, एटलां
ते पाणीमां उबकां गारीनें तळे जईनें वेटां. ते
जोईनें तेमानो एक ससलो, देडकां भणी हाव
करीनें, विजां ससलानें केहेके. अरे, आ जुशो!
भय सर्वनी पळवाडे लाग्युं हे; आपण तेथी विही
नें जीव आपीये, तेकरतां धीरज राखीनें जे दुः
ख आवे ते सहानें संकटनें सांभा कां न रहीये?
ते सांभळीनें सघळां त्यांहांज उभां रह्यां. पळो
केटलीक वारे वा शांत थयो.

सार

केटलाक लोक, नाना प्रकारनां भय कळीनें,
हाय हाय क्यम थशे? शुं थशे? एवी चिंता करो
मैज रात अने दाहाडो काहाडे हे. ते एम जा
णे के जे जेटलां दुःख हे ते सघळां आपणीज प
ळवाडे हे. बिजुं सघळुं विश्व सुखीहे, पण ते जेनें
सुखी केहेके तेनां दुःख जो ते जुए तो ते एम जा
णे जे आपण क्हीये ते सारा क्हीये. परमेश्वरे पो
तानी तरफती सुख दुःख सरखां वेहेची आप्यांके.
ते आपणनें वत्तां ओळां लागेहे ए आपणुं गांड पण.

**

वात ८५

देडकां अनें शिवाळ

एक बड्डोलो एवे नामे देडको हतो, ते ए
क वखत तळावमांथी बाहेर नीकळीनें एक उंची
अग्या उपर बेशीनें सर्व जनावरोनें छोटे खरे क

रीनें

रीनें संभळावेके. ऊं छोटी सारो वैद्य छं, मन
मां आवे तेवो रोग होय तो तेनें ऊं मटाडं, ए
वं बोलीनें ते पोतानं जाणपणं देखाडवा सारू कां
ईक शाखनां वचन बरबडवा लाग्यो, जनावरो
ये तेनें अर्थ तो समज्यो नहीं पण एम जाण्युं जे
आ कोई छोटी जाण वैद्य छे. पछी ते जे जे बो
लतो गयो ते ते संभळीनें सर्वेये माथां हलाख्यां.
तेमां एक शिखाळ हतं, तेनाथो ते सेहेवायुं महां,
त्यारे तेणे रीस चडावनें देडकाने कर्ह्यं, अरे ता
हं जडवं फुलेलुं छे, अनें ताहं सघळुं अंग डावे भ
रायेलुं छे, ताराउपर काई तेज दीसतं नथी, ते तं
कोहेके जे ऊं विजानो रोग काचाडोय, एनी तनें
लाज कम नथी आवतो.

सार

जेथो पोताना शरीरना रोग दूर थता नथी, ते
णे विजाना शरीरना रोग दूर करवानी वातमां
पडवुं नहीं. जे विजाने उपदेश करे तेनुं आवर

ण एवं जोईये जे ते वातमां लोकोनें संदेह पडे
ज नहीं, तोज तेमो उपदेश मान्य थाय, जे दोष
विजा लोकोये नांखादेवो एवो आपण चार मा
णसमां उपदेश करीये, ते दोष आपणमां न होय
तोज ते उपदेश मान्यामां आवे, नहीं तो मशक
री थाय.

—*—

वात ८६

कागडो जेणे मोरनां पी
छां शरीरमां खाशां हतां

कोई एक कागडो हतो, तेना मनमां एवं आ
थुं के ऊं छोटी थाऊं, आपणी जात हलकीछे,
माटे एमो संग राखवो नहीं. पछी तेणे काई मो
रनां पीछां एकटां कयां. ते पोतानो पांखामां
खाशामे ते मोरनी मंडळीमां पेटो, तेमणे तेनें
जातांसांज ओळख्यो, पछी ते घणा एकटा अर्दनें
प्रथम तेनें चांदोवती सारीसारीनें अदमुको क

धा, अने तेनी पासेयी पीछां खुंची लिधां, पोता
नो मंडळीमांची काहाडी मेहेल्यो, एवी अवस्था
थया पक्षी ते खेद पामाने पाको पोतानी जातनां
पेसवाने गयो, ते वखत कागडाच्याने एना पूर्व
कर्मानो खबर हतोज, पक्षी तेमणे तेने पासे उभा
राख्यो नही, अने तेमांना एक तेने ह्यो: यु: क
रीने केहेवा लाग्यो, अरे मूर्ख तने परमेश्वरे जे
जातीमां पेश कर्तोके, तेने ते छोडी नहोत तो आ
ज तने आ अपमान कां मळत.

सार

इश्वरे आपणने जे जातीमां जे ठेकाणे पेदा
कथा, तेने छोटी मानोने विजानुं सारापणुं, ह्यो
टपणुं, आपणे ठेकाणे खेची लेवा जईये, तो दुःख
मां पडोये. आपणी बरोबरीवाळाना मनमां आ
पणाउपर कंटाळो आवे एवुं करे, ते पुरुष बे त
रफती अष्ट थाय. परजातना हे ते तेने तिर
स्कार करीने उपहास करेके. अने नातना देधी
माटे नातना पण तेनो अंगीकार करता नथी.

बात

बात ८७

सिंह अने पशु

कोई एक वखत सिंह, अने कोटलांक विजां प
शु एमनो एवो करार थयोके जे, आपणे एक सत्ता
थे एक विचारे चालवुं, जे मळते बरोबर भाग
करीने वेहेची लेवुं. पक्षी एक शिवस सिंह, शि
घाळ, दीपहुं, अने चितरो, ए चार जणे मळीने
एक हरण मायुं. तेना शिघाले चार भाग क
था. ते वखत सिंह आगळ आवीने तेमांना ए
क भागउपर आंगळी धरीने तेमने केहेके, अरे
सांभळोके. आ भाग तो ऊं ह्यारे कर जाणी
ने लेऊं. आ विजा भाग तो ह्यारेज लेवो,
शामाटे जे तने जे पराक्रम कर्तुं ते सघळुं ह्यारा
सामर्थ्यथी, पक्षी विजा भाग सामुं जोईने मायुं डो
लावीने केहेके, आ भाग ह्यारे एटला माटे ले
वो जे तमे ह्यारी रहीयत अने ऊं तमारो रा
जा, माटे तमे ह्याने भक्तीथे करीने आपशोज.

हवे

हवे आ हेलो भागतो तमे जाणोहे? आपणो सन
 व हसणां भीडनो हे, माटे फोजनें माटे आपणो
 पासे काई खावानुं हे नहीं, वालो ह्यारे आ जत
 न करीने संग्रह करीने ह्येली छांडयो घोस्ये;
 कां जे आगळ जेनो भीड पडे तेनी तजवीज आ
 ज करी मेहेलवो एवो नाति हे. कां? जं कजं
 छं ए तमारा विचारमां आवेहे के नहीं. ना के
 हेणो तो तेमां ह्यारुं काई जंतुं नथो, पण तमा
 रो नाश थजे ए मनमां समज जा.

सार

दुर्वळ अने बळवान एमनो एको घणा दाहा
 हा सुधी पांशरो चालतो नथो, बळवान हे ते प्र
 थमज एक थती बखत वचन आपेहे, पण बखत
 पडे तेनें वचन तोडतां वार लागती नथो. माटे
 तेनो साथे योग करवो ए प्रथम मूर्खाई, अने ए
 क वार तेनी साथे योग कर्था पक्षी फशीनें ते ठ
 ने, अने कांहे कहीनें बिजा पासे मगकरी करा
 वे ए तो अग्रंत मूर्खाई.

वात

वात ८८

दीपडुं अने बगलुं

काई एक दीपडे गाडलं मारीनें खाधुं, तेनं हा
 डकुं दीपडाना गळामां अटवुं, तेनी पीडायेते वे
 लो यईनें बरका पाडतो ते अरण्यमां फरवा ला
 ग्यो. तेनें जे जे प्राणी मळे तेनो ते प्रार्थना क
 रे जे महाराज कृपा करीनें ह्यारा गळा मांधी
 आटलुं हाडकुं काहाड्यो तो जं तमनें सारी वि
 दाय आपोश. ते सांभळीनें एक बगलो विदाय
 ना लोभथी आगळ थयो, अने प्रथम दीपडाना
 हाथनं वचन लिधुं, पक्षी तेणे दीपडाना गळामां
 पोतानी लांबी डोक घाळीनें हाडकुं बाहेर का
 हाडुं, पक्षी विदाय मागवा लाग्यो ते बखत दो
 पडुं आंख्यो काहाडोनें तेनें केहेहे, अरे तारा सर
 खो मूर्ख ह्यो बैलोक्यमां दीडो नहीं. अरे तारी
 डोक ह्यारा ह्योमां हतो अनें ते ह्योन करडो अ
 नें तनें जीवतो मेहेल्यो, तोपण तुं राजी थयो
 नहीं.

सार

सार

कैटलाक नीच एवां होयके. के तेनें सहाय
थवामां वे दोष थायके. एक तो ए जे जेनें स
हाय थवं योग्य नहीं तेनें सहाय थवं. अनें त्रि
जं ए जे जेनी साथे सन्ध करीने आपण संकट
थायोये. सारुं करनारनें नरतुं कववं, ए दुष्टानो
जाति खभाव के. एवाना हाथमांथी हांनो न था
अनें कुठ्या एटले घणं मेळव्यु एमं समजवं.

— ○ * ○ —

वात ८९

वे ठग अनें भाजी वेचनारो

काई एक भाजी वेचनारानी दुकामें वे ठग
गया. ते मांहेनें एके तेनी नजर चोरावीनें एक
कोहोळानो कडको चोरीनें सोवतीनें आयो. ते
सोवतीये पोताना जामासां संताड्यो. भाजी वेच
नारो जोवा लाग्यो, तो कोहोळानो कडको न

ही

हीं त्वारे भाजी वेचनारो तेनें केहेके, अरे तने
ह्यारो कोहोळानो कडको चोर्यो ते झट काहा
डो, नहीतो त्वारो शोभा रेहेये नहीं. ते वख
त जेणे चोरो करी हतो ते केहेके, अरे ऊं स
म साज्जुं, जे तारो कोहोळानो कडको ह्यारी
पासे हये तो ह्यारुं नसतान जये. जेणे संताड्यो
हतो ते केहेके, भाई जो ह्यो त्वारो कोहोळा
नो कडको चोर्यो होय, तो सवळा लोकानुं पा
प ह्यारे साथे. ते सांभळीनें भाजी वेचनारो के
हेके, अरे ऊं त्वारा बोलवानो आभिप्राय सम
ज्यो, तो तने वे जगसां एक जलो चोरके, अनें त
ने बेजणा लुच्चा हो, एसां काई ह्यनें संशय नथो.

सार

माणसनुं बचन सम सरखुं, तेनां भलो जेम स
मनें माने के. तेम बचननें माने के. अनें जुटो
समनें मानतो नथी, ते बचननें पग मानतो नथी.
साटे चोर, ठग, जुटो, ए सवळा एक साळाना

रुणका

३६

मणका छे, एमना समउपर विश्वास राखवो न हीं, केटलाएक जुठा एवा होयछे जे, ते जुठुं बा खीनें पोताने जुठामां गणता नथी. ते समन पा व्यामां पापछे एवं जाणीनें जो जुठा सम खावा पडे तो एवा खायछे, के जेमां वे अर्थ जे तरफ लगा बीये ते तरफ लगावी सकाय, एवा जे होय तेनें तो महापापी केहेवो. शमाट जे जेना इका मात्र थी ब्रह्मांड पैदा घायछे, अने लीन थायछे. अने जे मननो साक्षी, एवा परमेश्वरनी आगळपण पर्याय शब्द केहेवामां जे चुकतो नथी.

—००*००—

वात . ६०

माळी अने कुतरो

एक माळीनो कुतरो वाडीमांनो वावनें कांटे कुदतो हतो. ते वावमां पड्यो, अने आरडवा लाग्यो, ते सांभळीनें माळी रोडतो आय्यो, अने

तेनें

तेनें काहाडवाने वावमां हाथ घालतांवेतज कु तरे तेनी आंगळीघोये बचकुं भयुं. त्यारे तेनें माळी रीस चडावीनें केहेछे. अरे दुष्ट, तेनें जी वाडवानो जे हाथ, जे हाथे आज सुधी तारुं भरण पोषण कयुं. ते ह्यारा हाथनेंज ते बचकुं भयुं, त्यारे हवे तुं मर, तज सरखा अपकारी जी व बचवा कामना नहीं. एवं कहीनें ते कुतरा नें वावमां तेवोज बुडतो नांखीनें चालतो थयो.

सार

जे इतन्न छे ते करेला उपकारनें व्यर्थ मानी नें उळटो आपणनें अपकार करेछे. ए माटे जे परोपकारी पुरुष छे, तेमणे जो कोईनें उपकार करवो होय तो पात्र जोईनें करवो. दुष्टनें क र्थो होय तो ते व्यर्थ जाय, अने आपणी हानी अने जगतमां हासी मात्र थाय.

वात

मेहेताजी अने मीसाळीयो

कोई एक मीसाळमांनो होकरो, शीमळानं लाकडं कमरे बांधीनें नदीमां तरबं शीखतो हतो. एक दाहाडो तेनां मनमां एवुं आयुं जे हवे आ पणनें तरतां आवळुं, हवे लाकडानुं शुं काम के, एवुं जाणीनें तेणे ते लाकडं नदीनें किनारे मेहे लीनें नदीमां तरवा पळो, ते प्रवाहना जोरथी उं डा पाणीमां गयो, अने गळकां खावा लाग्यां, त्यां हां दैवयोगथी एक झाडनुं डाळुं नदीमां लटक तुं हतुं ते ठेकाणे ते तणातो आयो. अने ते डा लुं झटकरीनें झालीनें बुडुंकुं रे बुडुंकुं रे एम कहीनें ते णें बुमो पांडवां मांडो के, ते समयमां तेनो मेहेता जी नदीनें कांठे सहज आयो हतो, तेनें काने ते दीम शब्द पळो. ते आयो जईनें जुएके तो नी साळीयो महासंकटमां नजरे पळो. त्वारे तेणे ते लाकडं मीसाळीया अणी मांखुं ते झालीनें ते कांठे आयो. ते बहुत मेहेताजीये तेनें आ उप

देश करीया. अरे हजु तारे आगळ आ संसार हू पी नदीतरवी के, तुं स्वतंत्र थवा जेवो हजु थयो नथी, माटे ताराथी जे छोटां होथ तेमनां वच न मदीमां तरवाना लाकडा सरखां मानीनें ते प्र माणे चालतो जा.

सार

कोटलाक पुरुष एवा अभिमानी होयके जे ह जार तरफथी दुःख सेहे पण विजानी बुद्धि लेईनें ते प्रमाणे चालुं एम तेना मनमां आवतुं नथी. आ सं सारसमुद्रमां रेहेवुं घणुं कटण के, अहीयां एवो कोई पुरुष देखातो नथी के जेनें विजानी सहायता न जोईये. तेमांपण जे जवान के, जेनें सृष्टी जी रीत हजु सारी पेठे समजणमां आवी नथी, तेमनें तो सर्वथा पोतानी बुद्धीये चालवुं नहीं.

घात ६२

कुकड़ो अने रत्न

एक जवान कुकड़ो वे कुकड़ोयाने साथे लेई ने उकरडो खोतरतो हतो। तेमांधो जे सारी वस्तु नोकछे ते कुकड़ोयाने आपीने तेने रीश्वतो हतो। तेमांधो अचानक एक रत्न तेनी नजरे पड्युं, तेनी कांतीथी आ रत्न छे एवं तेणे जाण्युं, पण एने उपभोग कम करीथे ते तेने खबर नहीं, पछी तेणे पोतानो मूर्खई डांकवा सारु ते रत्ननु उपहास करवा मांड्युं, ते पांख उघाड़ने डोक हलाचीने ह्यो वांकुं करीने तेने कहेछे, अरे तं सा हंछे खरं, पण तनें शुं करीथे, ह्यारी बुझीथे तो तने सघळां बड्डी सृष्टीमानां रत्न मळीने एक ज्वारना दाणानी बरोबरी करी सकमार नहीं एवं आवेछे।

सार

दैव योगथी विद्या प्राप्त थयी, सारुं नरतुं नी ती अनोती ए समजवा लाग्या, पण जेने तेनो अनु

भव

भव करतां आवड्यो नहीं, त्वारे ते परूपने ते स घळुं केवुं कहेवाथ, जेवुं कुकड़ाने रत्न, पछी एवा जे पठित मूर्ख छे ते पोतानुं मूर्ख पणुं डांकवा सारु विद्यार्थिकनुं उपहास करीने पोताने गने तेवुं आचरण करवा मांडेछे, अने कहेछे जे तरत फळ आपे एवी वातो रेहेवा देईने विद्यार्थिक गुणने शुं करीथे, एवं कहीने ते विद्वान् थईने हलकां काम करवा मांडेछे,

—*—

घात ६३

दीपडुं अने बकरं न्हानुं

कोई एक दिवस तडकाने तापे करीने एक बकरीमा बच्चाने घणी तरण लागी, त्वारे ते एक बेहेळा उपर पाणी पीवाने गयुं. त्यांहां उपली तरफ दीपडुं पाणी पीतुं हतुं, तेने जोईने ते हेडली तरफ पीवा लाग्युं, ते दीपडानी नजरे पडतांज ते ना मनसां आयुं जे, कोई निमित्तथी कळह करीने ऊं एने मारी खाऊं, पछी ते दीपडुं ते बच्चा

जे

में कोहेके, अरे तें आ पाणी डोहोव्यो हवे ऊं ह्या
री तरफ कयन मटाई, तारे पाणी डोहोळवानं
शं काम हनं, तें उतावळुं कोहे, नहीतो ज. व मे
हेलीनें तारे जवुं पडगे, बच्चुं बच्चारुं घभरायं अनें
नमीनें बोलवां स्याथुं. दीपडा काका तसे को
होके ए संभवेज कयन, तमारी तरफथी पाणी व
हीनें आवेके ते ऊं पीऊंकुं, एवंके तोपण ह्यारुं डो
होळेलुं पाणी तमारी तरफ अवळुं कयन चडां.
दीपडुं बोखुं, ते हो, पण तं लुच्चुंके, तं आजथी
के सहीना उपर ह्यारी पुडे ह्यनें गाळो देतुं हतुं
एवं ह्ये सांभयुं के. बच्चुं बोखुं हरि हरि ए वा
त कयन संभवे, ह्यनें जन्म्यांज चंग सहीना थया
नथी, तो ऊं के सहीना उपर तसनें गाळो कयन
देउं. दीपडुं त्यांचां पण बंध घयुं, पही घणी रीस च
डावनें आंखो काहाडीनें हाथ पण पहाड तं बच्चा
पासे आयुं अनें दांत पीशीनें कोहेके, अरे रांडना
गाळो तें नहीं दीधी होय तो तारे बापे दीधी
ह्ये पण ते सवळुं एकज, एम कहीनें तेणे ते
अनाथनो जीव लीघा.

हार

जे बळोयो अनें घातकी के तेनो आणळ, आ
पणा खरापणानें भरुंसे दुर्वळनें रेहेवं, नहीं.

— * —

बात ६४

कुकडी अनें चकली

एक कुकडीये उकरडे खोतरतां सापनां ईंडां
रीतां, ते उखेरबा माटे दयायेकरीनें कुकडी ईं
डां उपर बेठी, ते जोरनें तेनो पासे एक चकली
आवी ते रीस चडावनें तेनें कोहेके, अरे तनें शुं
कहीये, तं आवा दुष्ट जीव उपर दया करुं पण
ऊं तनें कळुं ते खरं जाणजे जे आ सापनां ब
चां ईंडा मांछेथी बाहेर नीकळये एटले पेहेलां
तारोज प्राण लेये.

सार

दुष्टने दंडज देबो तेनाउपर दया करवी ए आ पणो नाश करे, माटे जे जाते दुष्ट होय ते उपर गमे तेडलो उपकार करो पण ते पोताना स्व भावनें मेहेलनार नहीं.

**

बात ६५

गोवाळीयो अने खंडेराव

कोई एक गोवाळीयानी वाळडी अरण्यमां लो बायी, त्यारे गोवाळीये तेनो घणो शोध कर्यो, पण जडी नहीं; त्यारे तेणे खंडेरावनें मानता मानो, हे देव, जो तं वाळडीना चारनें च्छारी नजरें पाडीश, तो ऊं तनें वकरूं चडावोश. एवं मा नीनें लुगार आगळ गयो एटले, झाडीमां एक वा घ वाळडीनें भारीनें खातो हतो, तेनें गोवाळीये दीडो, ते वखत भयघो गोवाळीयाना गाळा नरम

थया;

थया; अनें घरघर कांपवा लाग्यो. पळी करीनें खंडेरावनें मानता मानवा लाग्यो, हे महाराज, चोर नजरे पडे माटे छे तमनें वकरूं चडाववं मा थुं हतं, ते तो तारूं सही घयूं; पण हवे न्हेनें आ वाचना हाथमांघी जो छोडावोश तो ऊं तनें एक मुरळी चडावोश.

सार

जे अज्ञानी छे, ते मनमां एवं समजे छे जे, लां च माटे परमेश्वर आपणुं कहुं काम करशे; जे थुं अज्ञान कोकरांनें छे जे, खावासार मा आ पणुं कहुं करशे. डाहाया छे ते एवो मानताज करता नथो, जे परमेश्वरे आपणनें पेदाकर्यो, ते उपर विश्वास राखीनें, तेणे जे भोगहानुं स्वस्थुं छे ते भोगवीनें स्वस्थ रहेके. संकट वखत देवनी प्रार्थना करवी पडे तो, ते एवो करेके जे हे परमेश्वर च्छाहं कल्याण अकल्याण सघळं तं जाणहं, अनें ऊं तारो कुं तनें जे सारं गमेते करजे.

बात

शियाळ अने गधेडो

कोई एक गधेडानें सिंहनुं चासडुं जळुं, ते जो डोनें ते वनमां हीं डवा लाग्यो. तेनें देखे एटले रुघळां जनावर विहीनें नाशी जाय, ए प्रमाणे ते ए केटलाक राहाडा सुधी घोळ घालीनें वनच रोनें ठग्यां, एक राहाडो तेना अने शियाळनो स मागम थयो, त्यारे शियाळनें विहीवरावा माटे गधेडो तेनी उपर छोटा आवेशेकरीनें चाल्यो, अने सिंहना सरखो शब्द काहाडवा लाग्यो, पण तेवो क्यम नीकळे? नीकळ्यो नहीं, ते वखत शियाळ तेनें केहेके, अरे मामा हवे एटलुं पुरुं करो, जो तमे एटली जीभ बंध राखी होत तो, जंपण तरुनें सिंह जाणत पण तमारा भुंकवाची तमे कोणको ते हीं पळुं जाण्युं.

शाडनी परिक्षा जेवो पांदडा उपरची थायके, त्य म मनुष्यनी परिक्षा बोलवाची थायके, जे मनुष्यनी परिक्षा करवानी होय तेनें बोलवाची जोईये एटले ते पोतानी योग्यता पोतानेज मुखे करीनें जे वी केहेके, तेवो विजाची केहेवाती नथी. माटे जे पुरुषना मनमां पोतानी मूर्खता लोकोनें जगव वी न होय तो, तेनें जीभ बंध राख्यामां केटलुं सारुं के ते जुओ, पण एवो सेहेली युक्ती हे तो पण मूर्खाची बोल्याविना रेहेवातुं नथी. छीतरी नरी ना लळलळाट घणो, अधरो घडो शब्द करे, त्यम जेमां समजण ओळी, ते कोई वातनो सिद्दांत भट करीनें बोलो जायके, एटले लुगडां, घरेणुं आकती, ए उपरची तेना छोटा पणानो संदेह पडो होयके, तेना झट करीनें निःसंशय थर्डेनें तेना मूर्खता उघाडो थायके.

देडकांघे राजा करवाने

विष्णुनी प्रार्थना करीहतो

एक सरोवरनां सघळां देडकां एकटां थानें तेमणे विचार कर्षो, जे आपण ज्यां हांत्यहां करतां करीये क्षीये, मनमां आवे ते करीये क्षीये, ए ठोक नहीं. आपणा माथाउपर कोई पण धणी जोई ये, जेना भयथो सर्व पोतपोतानी मर्याशथी रे हे. पक्षी ते देडकांघे राजा करवा माटे विष्णुनी प्रार्थना करी, ते सांभळीनें विष्णुनें हसवुं आवुं, अनें आवो तमारो राजा, एम कहीनें तेणे आकाशमांथी एक लाकडुं नांखुं. ते पाणी उपर अयडातांज छोटे शब्द थईनें पाणी उरळुं, मेथी देडकां घणां विहीनां अनें ते लाकडा पासे जाय नहीं. पक्षी केटलीक वारे लाकडुं स्थिर थथुं त्यारे ते हालतुं चालतुं नथी एवं जोईनें हळुवे हळुवे तेनीपासे गथां, ते उपर चहीनें वेडां अ

नें

नें तेनी साधे रमवा लाग्यां, पक्षी तेमना मनमां एवं आवुं जे आ राजामां काई जीव नथी माटे विजो सारो शोभायमान लागवो, पक्षी तेमणे मारीथी विष्णुनी प्रार्थना करी त्यारे विष्णुये शाहास्य आयो, तेणे आवतां वेतज देडकांनें मारीनें खावानो आरंभ कर्षो, ते दुःख सेहेवाथुं नहीं त्यारे, देडकांघे गरुडनी प्रार्थना करी, जे विष्णुनें शरमावीनें विजो कोई सारो राजा मोकलो, नहीं तो पेहेला जेवा हता तेवा राखो. विष्णु गरुडनुं काहुं सांभळीनें गरुडनें केहेके जे हवे ऊं ए करनार नहीं, प्रथम हीं जे राजा आवो हतो ते एमना विचारमां आवो नहीं तो हवे तेमनुं कर्म तेमणे भोगववुं.

सार

ईश्वरे आपणनें जेवी स्थितीमां मेहेल्या तेनी अनादर करीनें नवुं दृक्षीये नहीं, अनें जो दृक्षुं तो पक्षी जेवुं आवुं तेवुं भोगववुं ईश्वरनें दोष देवा नहीं. एक राजा विचारनां न आवो अनें वि

जानी

(१५६)

जानो इच्छा करवि, अने आपण तेने स्वाधीन थ
ईये, पक्षी ते दुष्ट नोकळ्या तो दोन कोने जायेत

—०*०—

वात ६८

वे कुकडा

वे कुकडा एक उकरडामा घणी पणा सारू ल
डता हता, तेनांनो एक हाथी, ते माशीने एक लु
णामां दवी रह्यो. अने जे जीव्यो ते एक उंचे
ठेकाणे जईने वेढो, अने पांखो पाडफडावाने हो
टे खरे ऊं जीव्यारे ऊं जीव्यो, एम बोलवा ला
ग्यो, एटलामां त्यांहां पासेज झाड उपर गरड प
क्षी भुख्यो टांपतो हतो, तेणे हलुवे रचनें हेडे
झडप सांरीने ते कुकडाने उचकीने खेई गयो. ते
जोईने दवी रह्यो हतो ते कुकडा बाहेर नोकळ्यो,
अने भिजां कुकडांपासे जईने पोतानुं पराक्रम व
लागवा लाग्यो.

सार

(१५७)

सार

जय अथवा पराजय अथो होयती हर्ष अथवा
खेद करवो ए मुखता. इत्यनी सपत्नीये करीने उ
न्मत्त यईने अभिमानथो फुलवुं, अथवा विपत्तीनां
धैर्य सुकोने केवळ दीन थवुं, ते पण तेज. माटे वे
अवस्थानां जे मनने समान राखे ते छोटे, तेज
ज्ञानी, ते समजेहे जे, सुख, दुःख, जय पराजय,
ए आगळपाळळ मनुष्यनी पडवाडे बळग्यांज हे.

—०*०—

वात ६९

शीतळवायु अने हर्ष

एक दिवस शीतळ वायु अने हर्ष ए वे ज
णाओने वाड पळो, वायु केहे द्धारं सामर्थ्य व
त्तु, अने हर्ष केहे द्धारं सामर्थ्य वत्तु, एटलामां
एक बटेसार्गु कामळो ओढीने जतो हतो, तेने

जोईने

४०

जाईने वे जणाओये निकाल काहाओ जे, जे आ
 वटेमार्गुना शरीरउपरयी कामळो वेगळो करे,
 तेनुं सामर्थ्य वचुं, अनें ते थोष्ट, ते वखत शीतळ
 वायु आगळ दोहो अनें कामळो उडाडी मांखवा
 सार छोटे वेगेकरीनें वावा लाग्यो, त्यसथम, व
 टेमार्गुये ते कामळो घणो घणो शरीनें लपेट्यो;
 छेलेवारे वायु थाक्यो. पक्षी सूर्य आगळ थयो,
 तेणे प्रथम एवं कथुं जे आकाशमां जेटलां टा
 हाडनां वादळां हतां तेटलां वेगळां करीनें टाहा
 डनें नसाडी, पक्षी हळुवे रहीं पोताना उन्हा उ
 न्हा किरण ते वटेमार्गुना शरीर उपर सुक्या, ते
 ऐकरीनें ते केटलीक वारे बक्षारेयी अकळार्ई
 जे तेजाथी ते कामळो सेहेवायो नहीं एवं थपुं,
 ह्यारे तेणे ते शरीर उपरनें कामळो काहाडोनें
 हटे मांख्यो. अनें पासेनां झाडोमां जईनें झांथडे
 वेठो.

सार

सार

ईश्वरे मनुष्य माचना स्वभावमां एवं कार्ई भे
 हेत्युं के जे, जेणे करीनें आपणथी विजानो वळा
 त्कार सेहेवातो नथी, ते माटेज आपण विजा
 पासे एकादी वात अथवा काम कराववा सार
 जेटलो जेटलो बळात्कार करीये, तेटलो न करवा
 मो आयह तेना हईथानां हड करीये. कडुवा
 शब्द जेन त्हरपनें कडण करीनें हठीलुं करेके, ते
 स मोठा शब्द त्हरपनें कोमळ करीनें आपलुं क
 हां सांभळवासार अनुकूल करेके. जेनें घणा रा
 हाडाना अन्धासथी एकारी वातनें खरो वळोछ थ
 ह थयो होय, ते वातनें आपण अकलात् आय
 ह करीनें खोटी करवा मांडीये, तो ते प्राण आ
 यीनें पण ते वात खरी करवानुं अभिमान राखे.
 सारांय एटलो जे, शीतळ वायु सरखो जे विरोधी
 उपचार ते मनुष्यने स्वमत खरो करवा सार थो
 जीये. अनें हृद्यना तडका सरखा उय नहीं.
 अनें जीवाळ एवा उपचार युक्तीथी योज्या होय
 तो ते आपणुं इच्छेनुं सिद्ध करे.

नीत

मा अने दीपडं

एक हठीलं होकरं राते रोजेने घणो कंकास करतुं हत, तेनें छानुं राखवा साह तेना भाय घणां दानां कर्णे पण ते छानुं रेहे नहीं. छेलीवारे तेणोये होकराने कर्णुं जे जो तुं छानुं नहीं रेहे तो तनें बारणे दीपडं आव्यं के तेनें आपोर, ते वखत वारणे दीपडं खरेज आव्यं हत तेणे ते शब्द सांभय्या, अने तेणोये कर्णुं ते करणे, एवो विश्वास राखेनें वाट जातुं घणोवार सुधी उभं र ह्यं. छेलीवारे होकरं रोजां थाक्यं एटले उंभी गद्युं अने दीपडाने वचराने मुख्यां अरण्यमां जवुं यज्यां. त्यांहां तेनें सारगमां एक शियाळ सामुं सव्यं तेणे पुच्छुं, भाई तजारी शी खयर हे, आज त भारा यग उपडता कस नथी, दीपडं उतर करे हे. भाई आजनी बात तो कांई पुच्छीशज नहीं, जं एवो घेलो जे एक स्त्रीनां केहेवा उपर विश्वास राखेनें भुले मुत्रो.

सार

विश्वास राखवा उपर विश्वास राखवा नहीं, एवोहे पण केटलाक ते मेहेली देईनें केवळ स्त्रीघोना बोलवा उपर लगावे हे, पण ते ठीक दीसतो नथी घणुक करीनें स्त्रीघो चंचळ होयके, जे जेना बोलवामां हंग नहीं पण केटली क एधीघो होयके, जे बोलेलुं वचन मिथ्या नज करे अने स्त्रीघोमां एवो एके दुर्गुण देखातो नथी, जे ते पुरुषमां न होय, माटे आ बातनुं तात्पर्य एटलुंज दीसेके, जे स्त्री हो अथवा पुरुष हो पण ते ना नरा वचन उपर विश्वास राखवा नहीं, जे ते बोलेके ते तेमनाथी थई सकशे के नहीं एवो पण विचार राखवा.

—*—

काचवो अने गरुडपक्षि

एक काचवाने भुईं उपर चालतां चालतां कंटाळो आव्यो, अने तेना मनमां एवो विचार आयो, जे आ

काचवां

कामनां जड़नें सृष्टीना चमत्कार केवो दीसेहे ते
 जाऊं, पक्षी तेणे पक्षीयेनें कहां के जे ज्ञाने चाका
 श मार्गे फोरवे अनें सृष्टीनां कौतुक देखाडे तेनें
 ऊं जे ज्ञाने पृथ्वीमां रत्ननी खाण्यो मासमके, ते हे
 खाडं, गरुड पक्षीये ते हा कहनें काचवाने चाका
 शमां लेई जड़नें सृष्टीना चमत्कार सघळा देखा
 डा, पक्षी काचवाने केहेवा लाग्या, जे हवे तारी
 रत्ननी खाण्यो वहांहां के ते ज्ञाने देखाड, ते वखन
 काचवो घेलानो वेग लेईनें वेष्टा, ते जोर्डनें गर
 डनें रोस चढी अने तेनें तेणे कुंळ ठेकाणे पोताना
 नख देईनें तत्काळ सारी नास्थो.

सार

प्रतिज्ञा प्रमाणे करीये नहीं तो तेसां हानी
 के, छोटा होय तेमनी प्रतिष्ठा जाय अनें जे मध्य
 मके तेमनी तो प्रतिष्ठा जाय, अनें दुःख पण
 थाय, अनें मरा जुठा विजाने ठगवाने इहे, तेमनुं तो
 सर्वस्व जाय, अनें समय पडे प्राणनें पण बको लागे.

वात

वात १०२

वननो देव अनें मार्ग

कोई एक वननो देव हतो, ते टाहाडना दिव
 समां अरण्यमां फरतो हतो, तेनें एक वटेमार्ग
 मथ्यो, ते टाहाडे अदम्यो थयोहे एवो जोर्डनें व
 नदेवनें दया आवी, अनें तेनें तेणे कहां जे बावा आ
 पासेना पर्वतमां ह्यारी गुफा हे, त्याहां आवे तो ऊं
 तारी टाहाडनें काहाडं, पक्षी ते बेजणा गुफानां
 जड़नें वेठा, त्याहां शनडी शळणावी हतो तेना यो
 गयो घणो ऊंक थई हती, तो पण मार्गुनी आंगळी
 यो टाहाडे ठरी गयो हतोयो ते फांकवा लाग्यो,
 वनदेवे तेनें पुछूं, तुं आम घामाटे करह, ते बो
 ल्यो हाप टाहाडा थथाके तेनें ऊंक वळवा साए,
 वनदेव मनुष्यमां करवारी नहीं, तेणे मार्गुना टा
 हाडाने उन्हा करवानो गण जोर्डनें आश्चर्य पा
 ल्यो, अनें तेनें गुणी जाणोनें तेनी आगळ काई कं
 द मूळ फळ इत्यादि शेकीनें फराळ करवा माटे
 सेहेल्यां, ते वणां ऊंहां हतां माटे मार्गु तेनें पण

फुकवा

फुंकवा लाग्यो, ह्यारे वनरेवे तेनें करी पुर्युं अरे
तुं अनें पण शासाटे फुंकक, ते बोल्या जन्हांके
ते टाहाडां करवा सार, ते सांभळीनें वनरेवनें
रीस धडी, अनें तेनें केहेवा लाग्यो, अरे तारा स
रखो दुर्गणी कोई नही, जे तुं एकज चोवतो ज
न्हानें टाहाडुं अनें टाहाडाजे ऊरु क, एवा ता
री साथे ह्यारे संबध जोईये नही, एम कहाना ते
मार्गुनां पांखोटां झालीनें तेनें गुमानें बाहेर नां
खी दीधो.

सार

जे पुरुष एक मुखे निंदा अनें स्तुति ए विरुद्ध
भाषण करेके, तेना सज्जने त्याग करवो ए योग्य
के, बिजा कोटलाक के ते पोतानुं काम करवा सा
र जे सार लागे, अनें जे सांभळ्ये सांभळनारा
नी आशा वधे एवं बोले, पक्षी काम थयुं एटले ते
ज मुखे तेनें निराश करीनें मेहेले ए सार नही,
ए दुर्गणे छोटां छोटां माणस हलकापणुं पामी

नें

नें पीकां पझांके, साटे जे एवं पण बोले अनें
तेवं पण बोले एवा पुरुष साथे जेम थोडो सह
वास होव ते सार.

—००*००—

वात १०३

टाल पडेलो शिलेशर

कोई एक शिलेशरने साथे टाल पडीहती, ते पो
तानी खोड हांकवासार टोपी घाले, एक दिवस
ते श्रुगधा रमवानें गयो हतो, त्यांहां अकस्मात्
वायूना सपाटाथो माथाउपरची टोपी उडोनें
हेडो पडी, ते बलन संघाथे बरोबरीना बिजा पुरु
ष कोटलाक हता, ते तेनी मशकरो करवा ला
ग्या. ते जोईनें शिलेशर पण छोटे शब्दे हास्य
करवा लाग्यो. अनें केहेके जे अरे ह्यारा जन्मना
हता ते ह्यारे साथे न रह्या, पक्षी घालेली टो
पीये कस रेहेवाणे.

सार

सार

लडाई खार माणस विजाने अने पोताने सुख
दायक थता नथी, खोड बनाने कोई माणस नथी,
पण सर्वदा लडाईने कारण खोळे, अथवा लोको
नां छिद्र जोईने विजाने दूषण दे, एवी जेने खोड
हे ते माणस कोईने गमे नहीं, ए एक दुर्गुणथो
तेना सघळा विजा गुण लोपायके, ए माटे जे प
रुष पोताने चित्त खस्थ राखवाने दळेके, अने जे
ना मनमां एवुके जे लोकोये आपणाउपर स्ने
ह राखवो, तो तेणे कळह करवाने कारण खो
ळवुं नहीं, अने तेवुं नजरे पडुं तो तेने ढांकवुं, अ
थवा ढंकाय एवुं न होय ते हशानां काहाडो नां
खवुं, कोटलाकनी एवी टेव होयके, जे विजानो
खोड होय ते केहेवी, पकी ते जेम जेम सं
ताप पासे, तेम तेम ते केहेनारो आनंद पाने, अ
ने तेने वत्त वत्त केहेतो जाय जे जेणे करीने ते
ने घणो संताप घाय, एवा दुष्ट अंतःकरण वाळा
पुरुषोनां ह्यो भागवानो उपाय एज के जे आपण

खोजीये नहीं अने तेने वेखवुं कौतुक मां मणीने
हसवामां काहाडो नांलोये, अने वखत उपर एवुं
पण करीये जे विजा आपणने उपहास्य करे ते पे
हेलां आपणज आपणुं करीये.

—*—

बात १०४

मोर अने वगलो

एक वखत मोरे वगलामे जोईने पोतानां पीं
छां उबां कर्था; अने आ कोई तुह जीवके, ए
वुं मनमां आणीने, तेनो आगळ पोतानां सेजेरो रं
गनां पीडांनो शेभा देखाडवा मांडी. वगलो ते जो
ईने तेनो गर्व उतारवासाह केहेके, अरे, जो सा
रां पीडां उपरथोज छोटापणुं प्रमाण के, तो ता
री मोरनी जात छोटी खरी, पण ऊं एम जाणुं
कुं जे, भुईं उपर चालीने होकरांनो रमत रमी
थे, ते करतां, आकाशमां फरवाने जे समर्थ था
य, तेमां छोटापणुं वत्तुं के.

सार

आपणमां एकादो गुण होय, ते विजातां न होय
 घ माटे आपण तेमें तुळ नगीवे जो, तो विजा
 मां जे गुण हे ते आपणमां नथी माटे, ते पण वा
 पणनें तुळ कां न गणे? सर्व गुण संपन्न कोई हो
 ता नथी; माटे कोई कोईनें हलका लेखामां न
 णे ए मूर्खनी समजण. उपर कहैली वातमां गो
 रे पोताने वाहेरनी शोभा उपरथी छोटापणं मा
 न्युं; पण डाहाया हे ते वाहेरनी शोभातें लेखा
 मां गणता नथी. जे कोकरां, जे अज्ञानी लोक
 छे, तेमनें मात्र वाहेरनी रज ओह पसाडी सुके
 छे; पण डाहाया हे ते मांहेना गुणउपरथी पुरु
 धनं मूल करेहे. जे पुरुषमां अंतःकरणमां सदा
 सना; मेळाप पणं हे; एवा पुरुषेनें ते छो
 टा केहे. शालजोडी, जरीमां सुनडां, रत्नमां घ
 रेणां, एमां जो कांई छोटाई होये तो, तेमां
 ते वस्तुना करनाराने शोभाहे. पण शरीर उपर
 पेहेरनारनें शुं हे? केहेवांगुं तात्यर्थ एटलुंज के,

जे,

जे पुरुष शालजोडी आदि लेईनें सहस्तुना योगथी
 पोतानी तरफ छोटापणं खेंची लेहे ते आपण
 नें ठगेहे एम समजवं.

—○*○—

वात १०५

वे वटेगामुं अनें रीछ

कोई वे पुरुष परदेश जवाने नीकच्या, तेमणे
 अरस्वरस वचन लिधां के, भारगमां जो कांई दुः
 ख अथवा संकट पडे तो, एक एकनें नेहेलीनें ज
 वं नही. पछी, ते एक वनमां थईनें जता हता
 एटलामां, एक रीछ तेमना उपर दोडतुं आळुं;
 ते बखत तेमना एक जण, पातळा शरीरनी अप
 ल हता, ते झट करीनें नाशनें झाड उपर चढी
 गयो; विजा भारे शरीरनी हता, तेनाथी नसाधुं
 नही, त्वारे ते पोताने आस बंध करीनें भई उप
 र अपेतन थईनें सुता. रीछे तेनीपासे आवीनें

तेना

तेना कान आगळ सुधीनें जायं, अनें आ मरेलं मडदुं हे एवं जाणीनें, कांई उपद्रव कर्था विना, ते पाकुं गयं, रींके गवा पळी, झाडउपरने हे ठे उतरीनें तेनी पासे हसतो हसतो आवीनें पु छेके, भाई, ते रींके तनें शं कळुं? जं झाडउपर थी जातो हतो जे, ते तारा कानमां पेशीनें कांई के हेतो हतो. तेणे उत्तर कर्था जे, रींके ह्यानें ए कळुं जे तजसरखा लुचाना वचनउपर आज प ह्यो विश्वास राखीश नहो.

सार

आपणनें अगत्य न होय त्यारे लोक घणी ममता देखाडेके, अनें भहसानां वचन बोलेके, पण तेमां आपटीनी वखतमां काममां आवनार एवो तो म लवो घणो कठण के. माटे जे लोकनी रीतीनें जाणेके ते पुरुष, एवा बोलवाउपर विश्वास रा खता नथी. बोलनारे मिथ्या बोलवु नहीं, अनें सांभळनारे ते उपर विश्वास राखवो नहीं; कांके तेमां बेजजाथीनें दुःख के.

बात

बात १०६

करडकणो कुतरो

कोई एक मनुष्यनी पासे कुजो हतो, ते लो काना उपर दोडी दोडीनें जेनें तेनें करडतो ह तो, माटे तेना धगीये तेना गळामां एक डेहेरो बांध्यो. तेथी ते कुतरो छोटी प्रतिष्ठा जाणीनें, पासेनां बिजां कुतरांनो तिरस्कार करवा लाग्यो; अनें तेमनें पोतानी पासे उभा रेहेवादे नहीं ए वो थयो; त्यारे ते मांहेनो एक दड कुतरो हतो, तेणे तेनें कळुं, अरे भाई, तुं आ गळामांनो व लु पास्योके ए उपरथी, तारा आत्मानें छोटी गण तो होय, तो गण, पण, जेणे आ वस्तु तारा ग लामां बांधीके, तेणे आ प्रतिष्ठानी निशानी एवं जाणीनें बांधी मथी, तो अप्रतिष्ठानी निशानी जा णीनें बांधीके.

सार

सार

केटलाक खोडीला लोक एवा अभिमानो, जे नें ओकी समजणना होयके. जे, तेनी जाणे ली एकादी टेव तेमनामां ईश्वरे सेहेली होयके, तेनी ते पोताना मनमां आवे एवा अर्थ करीने, पोताने अहो छोटा एवं मानेके. जेनें चार मनुष्यमां सारं बोलतां आवडतुं नथी, जेनुं बोलतुं सांभळीनें लोक हसेके, तेनी अभिप्राय ते एवा जाणेके जे, झारी बूढी घणेके, एकी वारेज अने क कल्पनायो सुजेके, माटे आवं यावके. वळी मूर्ख जाणेनें अपवा सारी शिक्षा नहीं माटे कंटाळा जाणेनें लोक तेनी मेळाप करता नथी; त्या रे तेनी अभिप्राय ते एवा जाणेके जे, झारं तेज सेहेवातुं नथी माटे, झारी पासे कोई आवतुं नथी. तेमाटे एवा जे के ते सगार विचार करीने जोशे तो तेथी तेमनुं घणुंज काम थरे.

वात

वात १०७

मस्तान बोकडो

एक मस्तान बोकडो खरुंद घरतो हतो. एक दाहाडो ते बळरनें हळे जोडेलो देणाने, तेनें कहेके, अरे, तुं तारा धणानेबास्ते खांधउपर धुल रं छेईने, आटे पोहार हळ खेडळ, एउपरथी हाने एवं सुजेके जे, तुं कोई अपराधी हलको प्राणी के; तवे पराधीनपणुंज सारं लागेके; नहीं तो तुं एवं करे महीं. जो जं केवो दाहाडा काहा सुंते. जं झारा मनमां आवे त्यांचां जाजुं, श्री मळ हाथमां वेसुं; कुडुं; नाचुं; वराडुं; तर श लागेके त्तारे निर्मळ शरणनां पाणी पीजुं; अनें तनें सारं पाणीपण मळवानो संदेह. वळद ते सांभळीनें नीचे डोके छानोमानो पोताने काम करुंवा लाव्यो. पकी थोडा दाहाडामांज, ते गा मनी देखीनी यात्रा आवी, ते दाहाडे, बोकडाने धणीचे बोकडाना मळामां फुलना हार घालीनें तेनें

अणवारीनें

अण्णारीनें देवीनें बलीदान आगवा सार आण्यो, अनें तेना गळाउपर पाळी मेहळीके; तेवलन, त्यां हां ते बळद आदीनें तेना कांनमां केहेके, अरे मूर्ख, तारा खळ्द पणानो अत केवा अयो ते दो डोनां? तनें आजसुधी जीवना मेहेन्चो हतो ते एटला सार हो. तो तं ह्ये ह्यांमे केहे, जे ता रो अवस्था सारी के ह्यारी.

सार

कोई विपत्तीमां होव तेमें मेहेणां देवां, ए जे नीच, मूर्ख उन्मत, तेनं काम. आ काळचक्र स दा फरतुं के; कोई वखत आनी विपत्ती तेने आ बे, अनें तेनो सपत्ती आनें जाव. अनें विजं पण आ वा तनां जणाचं जे, जे खळ्द पारेके, मनमां आवे ते करेके, तेमनो परिणाम खोटोज थायके. अनें जे उद्योगी हे, ते पोताना उद्योगनं फळ भोग्दीनें सु खी थायके. जे निरुद्योगी, निरंकुश पुरुषके, तेद्यो मो निरबाह अतो नथी; पछी ते लोकोने डगवा मां केहे; बळात्कार करेके; चोरीयो करेके. एवां एवां

कर्म

कार्ग करीनें अहो वैभव भोग्दीयेचो एव कही ने; ते अहस्य लोकोनें हसेके तो हसो, ते तेमना स रळुं करता नथी, अनें पोतानो मेहेनतनं जे मळे तेटला उपरज प्रसन्न वर्दनें रेहेके; पण चोर, लु चा, डग, जुठा, एमना कपाळमां छेलो वारे बंधी खानं, अथवा सुखी. माटे एवो तेमनो परिणाम जोईनें, उद्योगी पुरुषनें पोतानो स्थिती सारी ला गेज, विजं जे स्वतंत्र हे ते, नकामा माटे व्यसन क रे एटले तेमना खावामां पीवामां विजा व्यवहा रमां काई बंध रेहेतो नथी; तेणे करीनें तेमनुं अकाळ मृत्युपण थायके.

वात १०८

चित्रो अनें शिवाळ

एक वखत चोत्राना मनमां एवुं आयुं जे, ह्यारी शरीर उपरनां विचित्र अनें सुंदर टपकां जो तांमां, देखाउडामां ह्यारी बरोवरी सिंह पण क

री

री सकनार नहीं, तो विजानी शी बात? पछी ते पणु मात्रनो तिरस्कार करवा लाग्यो. तेनें शि थाळ केहेके, भाई, तं घणं चुकइ, तो ऊं कऊइं ते खहंज मान जे, जे मांहेला सद्गुणरूपी भूषण ब ना, बाहेरला भूषणनें सृज्जे ते, भूषण केहेता नथी.

सार

जे सुंदर छे, ते, ऊं सुंदर हूं एवो गर्ब न करे, तो तेनं सुंदरपणुं तेनें घणी शोभाने आपे, गुणव ती अनें सुंदर एबीज खीनी कीर्ति बधेके.

—*—

बात १०६

बलाडो अनें शिथाळ

एक बखत बलाडो अनें शिथाळ ए वे जणा, चरपयमां एक झाडनें तळे, राज कारस्थाननो बा तो करता वेदा हता; त्यांहां शिथाळ बोखुं, बला

डाजी,

डाजी, कराखित् अहींयां आपणाउपर काई हो टुं कष्ट आवे तो, ऊं तो छारा देहनें हजार प्रका रेकरीनें नभावी लेजं, पण ताहं छाने घणुं कडण दीरुके. बलाडो बोखो, भाई, ऊं एक युक्तीमात्र प की जाणुं, तेटली जो चुकुं तो पछी छारी गती नही. शिथाळ बोखुं, तो भाई, तारी छाने घणी चीं ताइ, तनें एक बे युक्तीयो ऊंपण शीलवत, पण जाणुं आजनो काळ एवोके जे जेनें माथे पडुं ते तेनं भोगवे. वारु तो हवे राम राम, ऊंतो जाजकुं. एटलुं कहीनें ते जवाने नीकयुं एट लामां, पछवाडेथी हांहां केहेतो पारधी कुतरां नें लेईनें आव्यो. ते बखत बलाडाने झाडउपर चढीजवानो युक्ति सारी आवडती हती, तेकरी नें तेणे पोतानो जीव बचाव्यो. अनें शिथाळनें हजार युक्तीयोमांथी ते बखत एके काममां न आवो. अनें ते घबराईनें ते चारपांच डगलां दोखुं एटलामां धाईनें कुतरांचे तेनें पकडुं.

सार

सार

बिजा करतां ह्यारुं डाहापण वत्तुंके, एवं जा
णीनें जे श्रेणी करे, ते घणुं करीनें जातना मूर्ख
होय. बुद्धीमाने पोतानी बुद्धीने प्रसंग पडे त्या
वे अनुभव लेवो, पण लोको आगळ बडार्ड हाकवी
नहीं. एकज बुद्धि पण ते जेनें समय पडे सुजे तो ते
नें तेणेकरां जे तरवानो उपाय थाय ते हजा
र बुद्धीना धणीनें थनार नहीं, ते विचार करतां
करतां बंध धरनें, केलीवारे फसे, तेम एकज वि
द्या पण ते सारी आवडती होय अनें समय पडे
सांभरती होय तो, ते कामनी; घणी विद्याया आ
बडतीयो होय पण समय पडे तेनांनी एके उपयोग
मां आवती नथी, त्यारे तेथी दुःखमात्र थाय.

—००*००—

वात ११०

बाज अनें बुलबुल

एक बुलबुल एवे नाने पक्षी तमालना वृक्षउ
पर बैशीनें, सुखरे गान करतो हतो; तेणेकरी
नें खवळुं अरण्य नारयुक्त थयुं. ते शब्द सांभ

ळीनें,

ळीनें, त्यांहां पासेज एक भुख्यो बाज फरतो ह
तो, तेणे ते पक्षीउपर झडप मारीनें तेनें पमना
मखोनां भरावीनें खेई गयो, पक्षी तेनें खावानो उद्यो
ण करेहे, एटलांमां ते पक्षी तेनें केहेके, रेरे, ह्यारा
उपर दयाकर; आ दुष्ट कर्म करवुं तनें योग्य न
थी; जो ह्यो काई तारो अन्याय कर्यो नथी; अ
नें ह्यनें खाईनें तारा पेटमां एक कोळीयो पण
पुरो आवनार नथी. माटे काई एकादा छोटा
पक्षीनें नार, जे, तेमां तारुं पेटपण भराशे, अ
नें कीर्तिपण थशे. ह्यनें गरीबनें जवारे. वाज ते
नें केहेके, हा हा बापा, तारे गमे तेटलुं केहे;
पण ऊं आज सघळा दिवसना भुख्योकुं, अनें तुं
हैव धोणथी ह्यारा हाथमां आब्योके, ते तुं केहे
के जे ह्यनें सेहेलोदे, अनें बिजा काई छोटा प
क्षीनें नार! पण जो तेवुं करुं तो लोक मूर्ख को
ऊं केहेशे वारुं?

बार

सार

उद्योगी पुरुषके ते बत्ता ओछा लाभ सारं, जो ता नथी; जे सपाट्यामां आयं तेना अंगोकार क रेके. कालनी गती जगायामां आवती नथी; ह जार प्रकारनां विघ्न आवीने बसे पडेके; मन्ध्ये नो बुद्धि अंबळ; देह क्षणभंगुर; एवं जोईने हाथ मां आयो लाभ सुकीने अप्रस्तुत उपर भस्मो रा खेके ते मूर्ख अते पश्चात्ताप पावके.

—**—

बात १११

बांडो शिवाळ

एक शिवाळ लोहोडाना पांजरामां पंहुडं भरा ईने अटव्या, ते ते तोडीने नाटो; अने मनमां घ णो राजी थयो जे, जीव जवानो समय हतो ते पंहुडं गयेथी मध्ये. पकी ते पोताना मंडळमां ज वा लाग्यो, ते बखत, ते बांडापणानो छोटो खेद

मनमां

मनमां आणीने विचार करेके जे; ऊं सुखो हो त तो सारं घात; पण आ अप्रतिष्ठा घणी खोटी. हसे, जे थयं तेना उपाय नहीं; पण हवे आ सो भीतं क्यन घाय? एवो विचार करेके एटलामां, तेनें एक युक्ति सुजी, के, ऊं सर्व शिवाळ मंडळा नें एकठी करीने कऊं जे, ह्ये ह्या पंहुडं तोडी नांखीने आ शोभानी नवी तन्हा काहाडोके आ घणी प्रतिष्ठितके, माटे तमनें सर्वनें आ लेवा थो ग्यके. एवो विचार धारीनें पकी शिवाळनी म डळी मेळवीनें तेमनी आगळ नवी तन्हानुं घणुं व खाण करवा लाग्यो; केहेके अरे, आ पंहुडं आ पणनें कशा कामनं नथी; तेमां वळी शिवाळ नं पंहुडं एटले केवळ भारज; ए माटे पंहुडावना हईये, तेमां एकतो शोभा, अनें विजुं नासवुं प ह्युं तो उतावळुं नसाय. ह्ये पेहेलुं ए सवळुं म नमां धारीनें, पकी अनुभवमां पण आण्युं, तो ख रेज. पंहुडं तोडी नांख्युं, ते दाहाडेथो ऊं घणो सु खी थयोके; एवं सुख ऊं कोई दिवस पाग्यो न

होतो.

होता। एवं बोलीने सर्वना छो सारुं जोवां लां
म्यो, जे आमांथो द्वारा चेला कोटला बायहे; ए
टलानां तेमानो एक वड्ड शियाळ, चोरीना का
मनां घणो हाहायो हतो, ते तेनी डग विद्या जा
णीने, डोकुं बांकुं करीने, तेने उत्तर करेहे; पंडि
तजी, हवे तमारुं पांडित्य पुरुं करो; तमनें पुंछ
डुं काथ्यामां सारुं यधुं हणे, एमां संदेह नयो, ते
न अहो पण कापीणुं, जारे तेवी बखत अक्षारा
उपर आवी पडणे.

सार

सर्व लोक जो शियाळ सरखा सावधान होत
तो, कोई कोईनी काहाडेली तहा खेत नही.
घणोक तह्यो लुगडां, घरेणां, एमांहे; अनें खा
याना प्रकारमां कोटलीक दीठामां आवेके, तेनुं
खरुं कारण जोवा मांडीये तो, साणसोये ऊं प
ण सेळववा सारुं अथवा पोतामां कांई एकादी
होड होय ते डांकवा सारुं करीथेहे.

बात ११२

डोसो अनें मृत्यु

एक घघडो डोसो लाकडां आणवाने अरण्य
भां गयो हतो; त्यांहां कांई कांटा, झांखरां, ला
कडां, एकडां करीने तेणे तेनी एक भारी बांधी;
ते साथाउपर लेईने घणे कष्टे करीने पगलां मां
डतो मांडतो घेर आवेके, पण वाट लांबी, अनें
साथाउपर भार घणो, तेणे करीने ते थाकीने भा
र हेठळ नांखीने बेडो. ते बखत ते मृत्युनें कडेके;
हे प्राणि मात्रना विसामां, तुं आव, अनें क्षणे ए
कवार आ दुःखमांथी काहाड. मृत्यु ते सांभळतां
वांतज, ते डोसानी आणळ आवीने उभो रह्यो; अ
नें तेनें पुकेके भाई, तें क्षणे शानाटे संभार्यो हतो?
ते बचारा डोसाने खबर नहोती जे, मृत्यु आटले
पासेके: तेनुं ते विकाल स्वरूप जोईनेंज, डोसा
नी शुद्धि गयो; पक्षी कोटलीक वारे सावध थईनें,
थरथर डूजतो उत्तर करेके; मृत्यु वापजी, ऊं अ

शक्त हूँ, द्वारा माघाउपरयो भारी ओचंतो पडी गयी; ते उचकीनें छागे साथे मेहेलवासारु तनें छे संभार्या हतो; विजुं काई काम नथो; खरे खा त. एटलुंज बापजी काम हतुं; अनें एसां छे तनें मेहेनत दीधी, माटे तनें रीस चढी होयतो ऊ न नें पगे लागुंछुं जे, द्वारा उपर क्षमा कर; अनें जे बो आथो तैवो पाडो जा.

सार

लोकोनी एवी रीतज पछेलांके जे, मृत्युनी सा थे पण मशकरी करवी; काई लगार दुःख पद्युं के मृत्यु आवे तो सारुं थाय; एवं बोले पण ते, सषळुं मृत्यु बेगळुं छे त्याहां सुधी केहेवायके. जो पासे आव्युं होयतो, ते केहेनाराज पाखा संसारना भार साथे लेवाने तैथार थायके; अनें काई विजा दाहाडा जीवाय तो सारुं एम आशा वधारके. हाडकानुं पांजरुं मात्र रछुंके, अनें हजारो विप नीचे भोनवेके, एवा डोसाने पण जीववा सारुं

एटलो

एटलो हर्षके; तो पछी, जवानीना भरमां होय, तेनें केटलो जोईये? सारांश, मृत्यु निश्चय बनारके एवं जाणीनें, ते प्राप्त थयुं होय अनें जे तैथी विहीये नहीं अनें तेनें अनुसरें; तेनें जाणतो पुरुष केहेवा.

—○*○—

वात्त ११३

सकाम सिंह

कोई एक अरण्य वासीनी छोकरी घषी सुंदर हती, तेनें जोईनें एक सिंह मोह पाय्यो; अनें ते नें एवा दाहण काम उत्पन्न थयो जे, ते खी ते नें मळे तोज ते जीवे; नहीं तो मरे. पछी तेणे बार न लगाडतां मन मोकळुं करीनें ते वात ते खीना बापनें कही. अनें कह्युं जे, तुं छाने ता रो जमाई कर; एवं तेनुं गांडुं बोलवुं, सांभळीनें, तेणे मनमां विचार कथो जे, जो ऊं आनें ना क

ऊं

ऊँ, तो आ छाने हमणां मारीनांखमे; माटे, हा कहीने एने युक्तीची फांसामां नांखीये पळी तेणे सिं हने कहुं, सिंहीजी, तमे सारी वात कही; ऊं त मने छेडो परणावुं; पण छारे तमने कांई केहे वुंके. छारी होडो घणी नाजूक, अने तमारा दां त, अने नख, घणा तीखाहे; तेथी तेने घणी पोडा थारे, माटे तेनुं शुं करवुं? तमे केहेशो जे ऊं सं भाळीने चालीश, पण ते तमे तमारी तरफथी क र्थुं, पण तेना मननो भय जनार नहीं; तेना मनमां भ य होय तेथी तमने वे जणाने विलासनं सुख घनार नहीं; माटे एना कांई विचार को. छारा मन मां केहेवानुं एटलुंजके के, तमे तेटला दांत अने नख छाने काहाडीने आपो, एटले ऊं तमने दी करी आपुं. सिंह काने करीने घेला थया हतो, तेणे कहुं हा काहाडो; पळी, तेणे तरतज तेना दांत अने नख उखेडो लोधा नंतर एक छोटा घा को आपीने सिंहना कपाळमां मार्यो; तेथी सिंह तत्काळ मृत्यु पाव्यो.

सार

जे कामने स्वाधीन थयो, ते पुरुष छोटे व्हा रोहो, बळीयो हो, पण ते माश पासेज. तेमज जे शत्रूनां मिठां वचने करीने मोह पासीने पो तामी जीवार्दनो वस्तुयो तेनें स्वाधीन करेहे ते प ळी सर्वस्व हारेहे.

—**—

घात ११४

सिंहण अने शियाळणी

एक दिवस सिंहण अने शियाळणी ए वे एकठां थयां. ते वखत चोपगांमां केई जात वत्तीवार बच्च्यां जणे, एउपर घात नोकळी. ते वखत शि याळणोथे सिंहणने संभळाथुं जे, बच्च्यां जणवामां तो शियाळनी बरोवरी कोण करी सकनारहे? अ छी वरसमां वक्तुं नहीं तो पण, एक बार तो ज णीयेज; अने एक एक वारे घणां बच्च्यां मेहेलीये.

पण केटलीक जातीयो एबीयो होयके जे, सघळा जन्ममां एकवार जणे; तेपण एकज बच्चु: एवं होयके तोपण, तेने अभिमान केटलुं होयके जे, ते तेटलाचपर नाक चडावीने, बिजा कोईने गणेज नहीं. सिंहेण मनमां समजी जे, शियाळगी छ्वा राउपर बोली. पक्षी ते सिंहेण शियाळणीने के हेके, अरे, सांभळके? तसे बचां बचां जणोहे ए जोतामां खरुंके, पण ते कोण? शियाळ, अने अहो एकज जणीयेकीये; पण मनमां समज के ते बचाने सर्व जनावरोनो राजा; एवं सघळा लोक कोहेके.

सार

जे वस्तु आपणथी नीपजेके, तेनुं मुल तेनी स ख्याउपरथी करवा मांडवुं नहीं; जातीउपरथी करव. आपणे थोडोकज उद्योग कर्यो, पण ते जो एवो होय जे, हगणांके ते लोकोने, अने आ गळ धनार तेअने पण, तेथी घणो गुण थगो तो, तेज स्तुति करवाने योग्य थायके. नहींतो, घणां

शियाळकुतरांनां बचां थईने लोकोने उपद्रव मा च जेम थायके तेवुं ते थायके, बिजुं आ वातने तात्पर्य एके जे; केटलाक कविहे ते, घणा ग्रंथ करवामां पुरुषार्थ नामेके ते तेमणे मानवो नहीं. हजार व्यर्थ ग्रंथ करीने लोकोने वांचवानो अम मात्र देईये, ते करतां; एकज करीये जे सर्वने मान्य थाय एवो कर्षामां पुरुषार्थ घणोके.

—००*००—

बात ११५

जवान अने घोषजपक्षी

कोई एक जवान उडाउ हुतो, तेनो बाप घणुं द्रव्य मेहेलीने मृत्यु पाव्यो. ते द्रव्य हाथमां आवतांज तेणे ते अमल करवामां, जुवुं रसवा मां, पात्रोना संममां, अने पोताना जेवा निहयो गो अस्नी एवानी सोबतमां, सघळुं उडावी मांख्यु;

तेथी

तेची दरिद्री घयो. एक दाहाडो ते भिवारी स
रखो नदीनी तारे फरतो हतो: ते दाहाडे बहि
ने पोसने, पण सुख सारो तरोने, कांई उहा
ळाना दिवस सरखो दिवस जणानो हतो: त्या
हां भुलीने आवेलो एवो एक शोषमपक्षी पण ते
णे पाणीउपर तरसां दीठो. तारे तेने व्यसननी
धुनमां एवु आव्युं के, उहाळो खरेज आयो:
हवे ह्यारे लुगडांनं काम नथी. एवु विचारने,
तेणे शरीर उपरनां लुगडां घरेणे सहेल्यां; यनें
ते उपर पैसा खेईनें, सोवती साये, फरीशी एक
जुवानो दाब रमवा गयो, ते हार्या; पक्षी तनें लु
गडां घना टाहाडनी पीडा घमी थयी; तारे म
नमां आशुर्थ पासीनें ते पाळो नदीतारे जईनें जु
एके तो, पाणी ठरीमयुंके अनें ते शोषम पक्षी टा
हाडे मुत्रो, ते तेडे पड्योके. ते सघळं जोईनें ते
नें शुद्धो आयो. अनें ते पक्षीनें माथे शब्द सेहे
लीनें केहेके, अरे पक्षी, ऊं मूर्ख, जे ह्ये ताराउप
र विश्वास राख्यो; अरे, में ह्येनें उग्यो अनें तुं प
ण उगायो.

सार

जे पुरुष कोक करेके, अनें जुवाना अखाडामां
जायके, अथवा व्यसनीनी सोवतमां फरेके, अथ
वा छिनाळवानी संगती करेके, तेणे पोतानो पै
सो उतावळो कम थई रहयो; अनें ऊं दरिद्री क
म थयो; ए वातनुं आशुर्थ आणवुं नहीं. एवा व्य
सननी पळवाडे जे बळग्या, तेमनें, ते व्यसननी के
फसां कांई आंख्यो आगळ दीसे नहीं एवा घाय
के. जेमनें रात अनें दाहाडो एवो ज कंइजे, आ
द्वयके ते उडावीये अनें ते थई रहया पक्षी पाळुं
उडावदाने जोईशुं ते पेदा करीशुं; केलीवारे क
रज काहाडनें पण उडावे; एवा पुरुषोनें दरिद्र
ए शिक्षा घणी थोडीके. ते विजा लोक जेवो वि
चार करेके तेवो करता नथी, व्यसननें स्वाधीन थ
या होयके साटे, ते सघळी वाताने उळटी देखे
के; जेनी आंख्यमां कमळो थयो होय तेनें सघ
ळी बलुयो पिळी देखायके. उपरली वात मांहे
नें जवान पुरुषे जो लुगार विचार कथो होत तो,

तेनें उन्हाळो आयो एवं जाणीनें, रहेजां हतां ते व
 स्र पण तेनां जात नहीं. पण अचनयो तेणे उन्हाळो
 नहोतो अनें उन्हाळो जाण्यो, अनें आगळ कोर्
 दिवस शियाळो आवशे महीं एवं जाणनें लुगडां वे
 च्यां; तेपण शुं करवा? रमानें पैसा उडाववा. पकीं पै
 सा पण गया, अनें वस्र पण गया, त्यारे तेनी आ
 ख्यो उवडीयो; पकीं विचार करीनें फळ शुं?



वात ११६

सावर अनें वस्र

कोई एक सावर पोतानी जवांनीना भरमां
 आयुं एटले, ते विजां सावरनें घणी पीडा करवा
 लाग्युं. ते भुईं उपर पण पकाडे; शिंगडां हलावे;
 अनें छोटे शब्दे बरका पाडे; एवं के सघळां भय
 पानीनें कांपवा मांडे. एक दीवस तेनं वस्र आ
 वीनें तेनें पळेके, अरे, तसे कोहाहो जे जं छोटे

बळीधुं,

बळीधुं, जं कोर्दयो जोताउं नहीं, एवी शेखी करो
 हो, ते तसे कुतरांनो शब्द सांभळताज भयथी जी
 व होईनें काल नाशी जाओहो एतुं कारण शुं. ते ह्या
 नें कोहेयो? सावर कोहेके, वचा, तुं बोखुं ते खरुं; प
 ण ते कसम थायके एनी ह्यानें पण सलजण पडतो
 नथी. जं आयणी मंडळीमां बळीधुं, पराकामी, तेज
 खीकुं खत; अनें जं वारे वारे ह्यारा मनमां नि
 सय करुंके के, कोर्दनाथी भय पानीनें हवे जं
 डरनार नहीं; पण शुं कतं कुतरांनो शब्द ह्या
 रे काने पडो, एटले ह्यारा गाळा शिथळ था
 यके. पकीं ह्याराथी जेटली उतावळ थायके तेड
 ली करीनें नाशी कुटुं.

सार

जे फांकडा, लडाईखोर पुरुष, ते अबसान घा
 तकी, होयके, ते, पोताना सोवतीयोमांज मात्र
 शेखी करे; पण ह्यारा पुरुषनी आगळ तेमनाथी
 टकातुं नथी. दीठामां एवं आयुंके के, जेना लु

खनां

४८

सुनां रात्रि अनें दिवस थिपाईगरोनीज रातोके;
 एवा पुरुषनी आगळ एकादेा सुरो पुरुष आघोनें
 आंखो काहाडीनें जुए, एटले तेमनी धोरज गयी
 ज. पक्षी एवा छोटा पुरुषमं पाणी उतरे ते जो
 घामांज घमत्कारके. एवी बलतनां पक्षी ते अ
 घ, लाज, अनें रीस, ए चणेना घामेळामां पडेके
 ते जो धैर्य राखीनें घाडुंक पराक्रम करेता, पो
 नानी शोभा राखी सके; पण तेना उपाय नही; अ
 संग पक्षी एटले तेमनी धोरजज जती रहेके. ए
 माटे छोटा आटाटोप कोई नमे तेडलो करो,
 पण जेना जे स्वभाव होय ते सहजज आगळ अ
 गट थयेज.

घात ११७

गधेडा अनें सिंह एमनी पारध

कोई दिवस सिंहनें एवं मन थयं जे गधेडाने
 संघाते लोईनें पारध करवा जईधे, पक्षी तेणे ग
 धेडाने कहुं के, तुं एक झाडीमां जईनें संताई

रेहे;

रेहे; अनें फलागी वेळाये आचिंता छोटी भयंकर,
 शब्द करवा मांड, ते बंध करीत नही; एटले भ
 यक्षी घामरां थईनें सघळां जनावर नाशी जवा
 मांडये; ऊं नासबानी जग्या उपर वारी झालीनें
 रजांके; ते मागे थईनें जे आवशे तेनें मारतो ज
 ईश. पक्षी ते गधेडे तेम कथं एटले; सर्व जनावर
 नासबा लाग्यां; सिंह वारी आगळ हतोज, ते एक
 एकनें मारतो गधे; अनें पेड भरयं एटले, गधेडा
 नें हाकनारीनें केहेके, अरे गधेडा, ते भली करी
 छेरे भली करीके; हवे एटलं, पुरुं कर, अनें अहीं
 यां आव. ते सांभळीनें गधेडा सिंहनी पासे आ
 वी; अनें पोते काम सारुं कथं एवं मनमां आ
 णीनें, लाडमां तेनें पुडेके, सिंह, ह्ये कथं ते तनें
 मनमां गथं ना? सिंह केहेके, गथं एमां शुं केहे
 वं? अरे घणंज गथं; अरे गधेडा, ते एवं कथं जे,
 जो ताहं स्वरुप ह्ये न जाण्युं होत तो, ऊं पण ते
 तारे शब्द सांभळीनें नासबा मांडत.

घार

सार

कैटलाक आ गधेडानी पेठे छोटी छोटी नर्तनायो करीनें, अजाण्या लोकोनें मो पेदा करेहे; तेनं, स्वरूप ओळखेहे, तेसनें ते कौतुक मात्र लाणेहे, माटे एबा पुरुष ज्यांहां मल्ले त्यांहां तेने लुमार सारी पेठे शोध मात्र करवो, एटली दीशीं आवग्रे जे, एनाची भय पानवानुं प्रयोजन नथी.

—*—

बात ११८

डाहाये गधेडो

एक डोसो, पोताना गधेडानें चरावतो हतो, ए टलामां, शत्रू आवोनें पळवाडे उभो रह्यो माटे गधेडानें नसाडवानी उतावळ करवा लाग्यो. ते बखत गधेडो तेनें पुळेहे, अरे धणी, ह्यारा बांसा उपर तारो शत्रु गुण मांखणे के नहीं वाच? डोसो केहेके नांखणेज, एमां संदेह शो? गधेडो केहे

हे

हे एवुं हे तो, जं अहींयांची एक तसुभर आगळ चालनार नहीं. ह्यारा कपाळमांची जो गुण कुट तो नथी, तो ह्यारो धणी काई कां नयाय; तेने ह्याने हर्ष के शोक शो?

सार

गरीब लोकोये राजाओनी उळटांपाळटमां चित्त चालवुं नहीं, घाले तो ते पेचमां मात्र आवे. बाकि तेसनें तो उळटपाळट एटलीज जे, एक नामनेो राजा हतो ते बिजा नामनेो थयो तेणे करीनें ते घणो गरीब थये, के आगळ काम करतो तेथी वतुं करवुं पडणे, एवुं तो काई के नहीं. तो पण चार स्वार्थ साधक लोक होयके ते, तेनें अभिमान मां नांखीनें युक्तीये लडाईंमां आगळ करेहे पळी लडाईं पुरी घईनें यश थयो तो, तेनां तेनें तो काई लाभ थतो नथीज; पण पेचमां आवेतो खुळीये चडवुं पडे.

बात

शेखीदार प्रवासी

कोई एक पुरुष, घणा दाहाडा प्रवास करी
नें, घेर आयो; पक्षी तेणे, ह्यें देशांतरमां शां शां
कौतुक दीठांके ते पोताना जोळखीना जोनें वना
बोनें कक्षां; तेनां आ पण एक नव शीकीजे, ऊं
खलका पुरीमां गयो हतो; ते त्यांहांना लोक पं
दर पंदर हाष करता. पण जारे तेमनें अनें
ह्यारे वार पळो त्यारे, ह्यारा कुरवानें कोई पो
होतो नहीं. पासें हता तेमनें ए वात खरी भा
शी नहीं, ते जोईनें, तेथोनें ते वात खरी जणव
वा माटे ते पुरुष सम खावा तैयार थयो. ते वख
त ते मांहेनो एक पुरुष तेनें केहेके, भाई, तूं ए
टला संकटमां कां पडक? हायना कांकणनें आ
रशी शुं करवा जोईये? अहानें ते ह्मणां प्रत्यक्ष
ज कां देखाडतो नथी? तूं एम जाण जे के, ऊं
आ वखत खलका पुरीमांज कुं; अनें तूं त्यांहां कुं

थो

थो तेम एकबार अहींयां कुडी देखाड एटले ते
कह्युं ते खर. ते बडार् खोरनें ते गम्बुं नहीं अनें
ओशीयाळो यईनें अमथो हानो रह्यो.

सार

जे कोई प्रदेशमां फर्घाके अथवा नथी फर्घा, ते
मणे पोतानी बडार्नेो संबंध जेमांके, एबीवात,
पोताने ह्योडे केहेवी नहीं; आपणे ह्योडे आपणी
कुतीनी वात लोक खरी मानता नथी; एटले, आ
पण सम खावा मांडोये, तेम तेम तेमनें वत्तो सं
देह आवे. खरी वातनी ए अवस्था, तो पक्षी
आपण कोटलीक जुठोज बनावीनें कहीये तेनी तो
शी वात? चार माणस वच्चे बाहेरनी जुठी वातो
केहेके, तेनी जुठार्ड पकडार्ड जायके. ते मंडळी
मां कोई एकाशे ते देशमां गयेलो होय, ते ते
वखतज तेनुं जुठापणुं खोळामां घालवानां चुक
तो नथी.

बात

गहड़ पक्षीणी, बलाडी, अने भुंडणी,

एक गहड़ पक्षीणीये, एक छोटा झाडनी ये
 ये माळो कथो हतो; अने एक जंगली बलाडी ते
 झाडने वचे बखोलमां रहेतो हती; अने एक भुं
 डणी पण, पोतानां बचां सुदां ते झाडना थडमां
 पोलाणमां बसि करीने रहेतो हतो. ते अस्थ
 रसगो पाडोस तेमनें सुख दायक यईनें घगा दा
 दाहाडा चाल्यो होत, जो, तेमणे ते दुष्ट बला
 डीनी चाडी सांभळो न होत तो. एक दिवस ब
 लाडीये एवं कर्णु के, पेहेलां गहड़ पक्षीणीपासे
 उपर गयी, अने तेनें केहेवा लागी; पडोशी बाई;
 श्रुं कज्ज? आपणनें छोटी अनर्थनी बसत आवी
 के; ते नठारी भुंडणी, रात अने दाहाडो झाडना थ
 डमां खोतरके; तेना मनमां एवंके के झाड उखनी प
 डे एटले आपणां बचां तेना हाथमां सेहेजज आवे.
 साटे ऊं तो बाई हवे हनें सगो मार्ग सुजसे ते

करीम.

करीम. मूं ताई संभाळजे. ए प्रमाणे तेना न
 ममां भय पैदा करीने, ते न जाणे एम, हळुवे
 रहींनें ते बलाडी हेटे भुंडणीपासे गयी. अने
 छो म्लान करीनें केहेके, बाई, तसे आज क
 हीं बाहेर तो जतां नथी? भुंडणी बाली, एम शा
 साटे पुक्क? बलाडी केहेके, काई नही, सेहेज
 पुक्कं. तमनें गने ते करो, पण गहड़पक्षीणी
 आज एमां बचांनें केहेतो हती जे, भुंडणी वाहे
 र जशे एटले ऊं तमनें तेनां बचां खावाने आ
 णी आपोग. अने एक बलाडीनुपण बचुं खवरा
 कीम. एवं बोली ते, ह्यारे काने पद्युं. तो हवे
 ऊं जाऊंऊं; ह्यारां बचां एकलां के; तेमनें ह्यारे
 संभाळीनें वेटुं जोईये. एम कहींनें पाकी उपर
 पोतानां बचांपासे जईनें तेमनें संभाळीनें वेठी.
 ए प्रमाणे तेणीये केटलाक दाहाडा कर्णु. खावा
 नें जोईये साटे, ते राते छानीमानी बाहेर जाय,
 अनें आणे: दिवसे बचांनें संभाळीनें वेसे, अनें उ
 पर हेटळ भयभीत जोती रहे. एवं तेनुं चरिच

जोईनें

जाईनें, गहड़पक्षिणी अने भुंडणी एमना मनमां
अरसरस पको होष थयो. पछी ते एक एकना
भयथी ठेकाखुं मंकीनें कहीं गयीयो नहीं. हेली वा
रे तेमनी एवी अवस्था थयी के, ते, अने तेनां
बच्चां, अन्न बना भुले मरीगथां; अने ते बलाडी
नें घणुं खावानुं मर्युं.

सार

घाडीया घोघे, आ जगतमां छोटा छोटा अने
थं कर्षाके. केटलाक सारा पुरुषोना कुटममां डे
व कराव्याके, ते केवा के, कोई दिवस मज्याज
नहीं. केटलाकना मनमां संदेह घाल्याके, ते
नोकव्याज नहीं. केटलाकनें धूल मेळव्याके, ते
फरीथी ठेकाणे आव्याज नहीं. जे पुरुष पाडो
शीसाथे सह राखवानें इहेके, तेणे अमथुं को
ईनुं कहेलुं सांभव्या उपरथी पोताना पाडोशीनी
वातनुं मनमां बाकुं घाणवुं नहीं; सांभलेली वात
उपर कल्पना करीनें पोतानुं धारेलुं विजानी डा
गळ केहेवुं नहीं; आमाटे के, जेनी आगळ कही

थे

थे तेनें जो चाडी करवी होय तो, ते किडीनी हा
थी करे, राईनें पर्वतजेबडी करीनें देखाडे, जे पु
रुष भलोके तेनी आगळ कोई कोईनुं गमे तेवुं के
हेके, पण ते ते वातनें पेटमां वांशीनें राखेके; ए
कनी वात विजानी आगळ केहेतो नथी; तेनुं फ
ळ एके जे, पछी ते बे जणा तेउपर सरखुं हेत
राखेके; ते शत्रु होय तो पण तेनें वारणे आवी
नें ते भिन्न घायके; तेणे करीनें ते पुरुषनुं मन आ
नंद पामेके.

—○*○—

घात १२९

बेहेन अने भाई

एक पुरुषनें बे न्हानां होकरां हतां; एक हो
करी अने एक होकरो, तेमां होकरो घणो सुंदर
हतो. अने होकरी साधारण हती. एक दिवस
ते बे जणां खापना तकता आगळ रसतां हतां,

व्यांदां

त्यांहां होकरो वेहननें कोहेके, अरे वेहन, आ. तकता
 मां जो आपण वेमां सारुं कोण दीसेके, ते कोडी
 नें घणुं खोटुं लाग्युं. ते समजी के, एणे ह्मनें ह
 धे थोळी जणववा सारुं कह्युं. पक्षी तेणीथे बाप
 नी पासो जईनें भाईनी फर्याद करी; अनें कह्युं
 जे, बापा, तकतामां रूप जोईनें प्रसन्न थवुं एतो
 स्त्रीथोने धर्मके. तेमां मन घालवुं ए पुरुषनें वो
 म्य नथी. बापे वे जणानें छाती सरसां चांपोनें ते
 मना मननुं समाधान कर्युं. अनें कह्युं जे कोक
 रां तमे लडशो नही. हवेथी तमे वे जण रोज
 आरसांमां जातां जजे; होकरा, तं एटला माटे
 जोजे के, तारा आ सुंदर ह्मनें दुर्गणेने मेल ला
 ग्गरे तो तेनी तनें खबर पडशे; अनें कोडी, तं ए
 टला माटे जोजे के, तारा रूपमां जे थोळुंके ते,
 तारा गुणे करीनें पुढं थयुं के नहीं ते तनें ख
 बर पडशे.

एथी कोई वस्तु आ सृष्टीमां नथी के, विचा
 रनें अते जेमां कांई थोळुं दीसतुं नथी. ए माटे
 बुद्धीनें आरसा रूपी मानीनें, तेमां पोताना गुण
 अवगुण नित्य जाता जईयेथो, तेमां आपणुं हो
 टुं हित थायके; ए आवाळ दृढ सर्वनें करवानें थो
 म्यके. जे रूपाळा पुरुषके; तेनें पोताना अवथ
 व आरसांमां सारा दीसो; पण तेखे विचार करी
 नें जावुं के, जेवो ऊं बाहेरथो वस्तुं, तेवो मां
 हेथी कुं के नहीं. कामदेव सरखो सुंदर रूपवान्
 के, अनें आंतर्ध गुण जो खोटाके, तो, ते पुरुष
 लोकोने अप्रिय थायके; अनें तेज पुरुष जो मिष्ट
 भाषण, सारो स्वभाव, एवा गुणे करीनें युक्त हो
 य तो, ते लोकोनें घणो प्रिय लागे. रूपाळाके,
 अनें सारा गुण नथी, तो, ते कोईनें कामतो न
 हीं; अनें जेना गुण साराके, तेनुं रूप केवुं पण
 हो, ते रूपउपर लोक नजर राखता नथी, खो

टा पथरानो चमकारो घणो होय माटे ते शुंख
रा रत्ननी बरोवरी करणे? रत्न बाहेरची बंडाळ
होय तोपण, ते जाते रत्नज; माटे जे पुरुष सां
हेथी सारो, जेनी बुद्धी निर्मळ, करणी सोखी, स
न पवित्र, अने डाहायो, तेनें रूपनं काम नथी.

—००*००—

बात १२२

शियाळ अने सांकडं

कोई एक काले, सघळां पशुओथे सांकडाने
राजा कर्था; तेनें राज्याभिषेक यतांज, तेणे पोता
नेविणे चोकसपणानीं अने शाणपणानीं बडाई
करी. ते पशुनं मुखपणं जोईने शियाळनें खो
टं लाग्युं. तेणे मजसां निश्चय कर्था के, एकार
दिवस, जं आ सांकडाने खेतरीनें सवळां पशुनें
नोचुं जोवरावीश. पक्षी केटलाक दीवस गया
पक्षी कोईथे एक जनावर पकडवाना पांजराना
खिल्लामां रोटलो बांधीनें पांजरुं मेहेल्युं हतुं, ते

जोईने

जोईने शियाळे सांकडाने कर्तुं के, ह्यां एक डे
काणे कोईना थापण दीठी हे; तेना घणो कोई
जगानो नथी, त्यारे ते राजानी एवं ह्यारा मन
सां आवे क. सांकडाने कपट एवं मालुम नहीं,
माटे ते उतावळो त्यांहां ते लेवाने मथो; ते रो
टलाने हाथ अडाडतांज पांजरुं बंध थयं; अने
सांकडं सांहे रहुं, त्यारे सांकडाने घणी लाज
आवी, अने ते शियाळउपर चडफडवा लाग्युं;
के, न घानकी, राजद्रोही, पातकी, हे, कांई चिंता
नहीं, जं तनें छोटी शिक्षा करीश. ते सांभळीनें शि
याळ खडखड हसवा लाग्यो; अने जती बखत पा
कुं जोईने डोकुं हलावीनें सांकडाने केहेके. कां
रे, तुं राजा केहेवाचके अने तनें आ पांजरुं हे
ए कस खबर न पडी.

सार

थोडी समजण वाले पुरुषे राज्यकारभार सा
थे लेवो नहीं; लीघो तो ते, आपणो अने लोको
नो स्वार्थ दुबावे. माटे एवी छोटी पदवीनें योग्य

तो

शौ तेज पुरुष, जे स्वतः दक्ष घणो; प्राणाणिक; स
त्य वचनी, जिजानें ठगे नहीं, अने पोने विजाथी
ठगाय नहीं, जे लोकोउपर राज्य करेके तेसनी
रीतीनीती जाणनारो, ज्योगी, स्तुग, पण क्रोधी नहीं;
भलो पण पोचो नहीं; स्तुतीनी दूखा करे पण ख
रा गुणनी स्तुतीनी, जुडी स्तुतीनी जेनें निरस्तार,
आ काम करवुं, के न करवुं, एनी जेना मनमां
संदेह पडतो नयी; जेमां दंभीपणुं नयी, एवा एवा
गुण नहोय अने जे राजा यथा, तेनी दशा केवी
षयी ते उपली वात जोथाथी उघाडी जसायके.
तेथी लोकोनें उपद्रव थया; अने जे धूर्त हतो तेणे
तेनी स्वभाव ओळखीनें, तेनें वश करीया, अनें लो
कनुं साहं थवाना उद्योग उपरथी तेनुं चित्त का
हीनें विषय भागमां चाखुं; अनें पोतानो स्वार्थ
साथी.

सार

वात १२३

खचरनी

एक खचरनें घणुं चरवानुं सळे अनें काम थो
डुं करवुं पडे, तेथी ते कांडक दिवसे साहं पुष्ट
थयुं, अनें खळंद कुशकारा मारवा लाग्युं, तेनें को
ईथे काह्युं के, तुं घोडानुं बचुंके, ते पण घोडो के
वो के जेवो तेवो नहीं, सरत जीतनारो, ते सां
भळीनें खचरे पोताना मनमां निश्चय करीया जे, प्र
संग पडो होय तो ऊं छोटी मजल करुं. पछी
थोडाक दिवस गया एटले तेनी धणी ते खचरउ
पर बेगीनें कहींक सारे उतावळे कामे जतो ह
तो, तेणे तेनें उतावळुं दोडवा साहं घणी कमची
थो मारीयो, ते वखत, ते खचर दोडतां दोडतां
घणुं थाक्युं, अनें पोताना मनमां पोतानें केहेवा
लाग्युं, अरे, आ वखत ते ताहं घोडानुं पराकम
क्यांहांके. माटे ए उपरथी निश्चय कर के तारो
बाप घोडो नहोतो गधेडो हतो.

सार

सार

जे घयडां उपरथी पोताने छोटे मानेके, तेनें गधेडे जाणवो, जे खरो छोटे मानेके ते, पोतानी कीर्त्तिये करीने पोते छोटे होयके. खत: जे अपराक्रमी तेज, वृहना नामथी पोताने छोटापणं आणवा जायके; ते तेनें यत् नथी अने हलकापणं मात्र आवेके.

बात १२४

सागनुंझाड अने कांटानुंझाड

एक उंचुं सागनुं झाड अरण्यमध्ये थयुं हतुं, ते रोज पोतानी छोटाईना गर्वथी पोतानां छेडळ थयेलां न्हानां झाडनें धिक्कार करे; ते झाडमां एक कांटानुं झाड हतुं, तेथी ते न रहेवायुं त्यागे, तेणे एक दिवस ते सागना झाडनें मुछ्युं जे, भाई, तूं झाटलो गर्व शासार करू ते केहे? साग के

हेके.

हेके. ऊं सघळां झाड मध्ये थेष्ट, अने शोभायमा नथुं; ह्यारुं मायुं मेघ संडळ भेरीनें गवुंके; ह्यारा खभा सर्वदा लीला रहेके, अने तमे केवां के के घणांज नीचां; जे आवे ते तमनें पगतळे चगरीनें जाय ह्यारा पांढडा उपरथी जे टपकानो प्रवाह पडेके तेणे करीनें तमे डुवी जायेके, कांटानां झाड केहेके ते सघळुं खरुं पण ऊं तनें कडकुं ते खरुंज जाणजे के, अरे लाकडां कापनारी तारा खभा उपर कोवाडाना वा सारवाने आवणे, ते वखत अह्यारामानुं जे एकाडुं केवळ निरुष्ट हल कुं झाड ह्ये तेनी साये पण तूं छोटे हर्ष करीनें तारी छोटाईनी बदला बदली करवाने इच्छीश.

सार

छोटाथीनी पडवाडे घणी उपाधीके, तेडली न्हानाने नथी. ए माटे छोटे अने न्हानो एमना सुख दुःखना विचार कथो होय तो, तेमां छोटा

एगुंज

कहें जे हाई एम केहेवु वणु कडण पडे. एवंके तो पण, जे पदवीये अथवा संपत्तीये छोटा यथा, ते नणे गर्व करीने न्हानानो तिरस्कार करवो एसां वणु मूर्खपणु हे.

—*—

बात १२५

इंद्र अने गणपति

कोई एक दिवस देवोना मनमां एवं आषु के, वृत्तु लोकां मांहेनां झाडोमांथी एक एक झाड आ पणो पौत पोतावी कृपानुं करीने राखवुं. त्वारे इंद्र बेस्यो जे, शाल्मलीनुं झाड च्हारं. कामदेव हेहे मुखपासनुं च्हारं, चंद्रमावे तमरानुं कहुं, वा घुये करेणानुं, अने वरुणे पारंगानुं, ए प्रमाणे ते मनें ते निष्कळ झाड गन्यां; ते जोईनें गणपतीनें आश्चर्य थयुं, अने कहुं जे, तमारी इच्छासां आवे ते झाड तमे तमाहं करो पण, नाळीधरी ए च्हा

रुं

रं झाड; जेनां फळ देव अने मनव्य एवेनें प्रिति कर, अने जे सर्व प्रकारे कामनुंहे, ते सांभळीनें इहे डोकुं हलावीनें कहुं, गणेश एउसा माटे ज लोक तमनें ज्ञानना देव एम केहेके. अने ए रंज के, उषयोगवना अमथुं जुटी सुतो माटे एका दी बस्तुनुं अभिमान राखवुं ए मूर्खता.

सार

जे काई करवुं ते नरी सुतो माटेज करवुं न हीं, जनें आश्रित करीने राखीये तेनी पासेपी कां ई फळ जावुं, नरी शोभा जावी नहीं.

—*—

बात १२६

घुड अने तोड

एक वृद्ध घुड झाडनी पोलाणमां उंचतो हतो ते झाडनी हेठे एक तीडे गावा सांझुं, ते बखत घुडे बे त्रण बार तोडनी प्रार्थना करी जे, भाई,

तुं

तुं अहींधांधी जा: ह्यनें उपद्रव करीश नहीं. ता
री कटकटे छारी उंव जायके. ते उपर ते ती
ड तेनें धिक्कार करीनें गाळो देवा लाग्यो. केहेके
के, अरे, तुं लुचो पोरहे, रातनो वाहेर जईनें
घोरी करीनें पेट भरक; अनें दाहाडे झाडनी पो
लांगमां आवीनें संतार्ई रहक. घुडे तेनें कहां, भा
ई, बापा, तुं तारी शीभ संभाळ; नहींता वळता
प्रस्तार्ईश: तोपण ते तीड सांभळे नहीं, वत्ती वत्ती
निंदा करीनें पाहेो गावा लाग्यो. त्वारे घुडे ते
नी कपटधी स्तुति करवा सांडी. बावा, श्रमा क
र, मजघी अनर्थादा थयो. पण हवे छारा अ
नुभवमां पक्कं आव्युं के, जो जागवुं तो, ताहं सु
खर गांन सांभळतांज जागवुं; तारा मधुर खरनी
आगळ सारंगी तो गणनामांज नहीं. ताहं गावुं सां
भळीनें कोकिला तो लज्जाज पामशे. भलुंज थयुं,
जे सांभयुं. छारीपासे एक अश्रुतनी शींशीके; ते
ह्यनें छारा देवे आपीके, ताहं गळुं गावे करीनें
सुकार्ई वयुं हशे नाटे, ऊं एम जाणुंकुं जे, तेमां

थी एक प्यालो भरीनें जोईवे तो ऊं तनें आपी
श. तीड तरशो हतोज, माटे घुडपासेथी अ
श्रुत लेवानें छोटी आशावे तेनी पासे गयो. ते
पासे आवतांज घुडे उचकीनें छोसां नांख्यो.

सार

प्राणीमात्रनी प्रकृतीयो जुदी जुदीयोके. एकादी
नी प्रकृतीमां विजानुं करेलुं आवतुंज नथी. ए मा
टे तेणे एक वे वेळा प्रार्थना करीनें कसुं होय
तो, तेनें उपद्रव करवो ए योग्य नथी. अनें उ
पद्रव करीनें उळटुं लडवुं, गाळो देवो, एतो के
बळ दुष्ट पणुज, पक्षी जे एवं करेके तेनें ते शि
क्षा करे तेमां कार्ई आश्चर्य नहीं.

—**—

बात १२७

एक आंखेकाणुं हरण

एक काणुं हरण समुद्रनी तीरे नित्ये चरतुं ह
तुं; तेना मनमां एवं के, चरती वखत कांणी आं

ख समुद्रनी तरफ अनें सारी आंख देगनी तरफ होय, तो, सारो आवरो तो ते जगाये. एवो बंदोबस्त करीनें ते पोताना मनसां पोताने निर्भय गणतो हतो. तेउपर एक पारधी घगा दाहाडा सुधी टांपतो हतो; पण ते हाथमां आव्युं नहीं; त्वारे ते एक नावमां बेगाने ह लुवे रहीं पाणीनें रस्ते घईनें तेनो पासे आव्यो; अनें गोळीमारीनें तेनें पाखुं. पकी ते प्राण ज तो बखत आ शब्द बोखुं; हे प्रारब्ध! तारी गरी अकळके; जे तरफधी ऊं चिंता करतो हतो, ते तरफती हाने उपद्रव थयो नहीं, अनें जे तरफ थी भय नथी एवं हाने सुजतुं हतुं ते तरफथी हारो अंत आव्यो.

सार

आ जीववानी पळवाडे नाना प्रकारनां भयके. तेथी आपण गसे तटला बिहीनें चालीये तो पण, सर्व प्रकारे निर्भय एवं कोई दिवस थनार नहीं. आ संसारनां आववानो मार्गतो एकजके; पण अ

हींयांथी

हींयांथी जवाना मार्ग तो अनेक के. त्यांहां आ पणी चोकशी कोटली चाले? जे घातो आपणा जाण्यानां आवेके, अथवा जे प्रत्यक्ष देखायके, ते क दापिक जळवाय. पण जे आपणी आंखोथी बे गळी, अनें जे जाण्यानां आवे नहीं, एवोयो घातो आपणे आसपाश सैकडांके ते कम जळवाय. ए मां एटलुं जणाव्युं के, आपण निर्भय छीये एवं को ई दिवस मानवुं नहीं; अथवा सभय छीये माटे निर्भय थवा सार घणे अम करीये नहीं. जारे निर्भय थवुं आपणा हाथमां नथी त्वारे रात दा हाडे भयनी चिंता राखवी ए मूर्खता, मनुष्य स रखा विवेकीनें योग्य नहीं.

—००*००—

घात १२८

ब्रह्मण अनें कवाडी

एक कवाडी एक नदीना कांडानुं झाड कापतो हतो; तेनी कोडेवाडी अकसात् तेना हाथमांथी

कुटीनें

हुटीने घाणीमां पडी; माटे ते घणो शोक करवा लाग्यो. तेना विलाप सांभळीने वरुणदेव त्यांहां प्रगट यथो; तेने कवाडीचे पोताना शोकनुं निमित्त कर्ह्युं. ते वखत वरुणदेव पाणीमां डपकी मारीने एक सोनानी कोहोवाडी खेईने उपर आयो, अने ते कोहोवाडी कवाडीने देखाडीने पुळे के, अरे आज तारी कोहोवाडी? ते बोळ्यो एतो ह्यारी नहोय. पळो वरुणे फरीयी डपकी मारीने एक रुपानी आणी, ते जोईने पण कवाडीचे कर्ह्युं ए पण ह्यारी नहोय. त्रिजी वखत तेनी जे गयो हती ते खेईने आय्यो, त्यारे ते कवाडीचे छोटे हर्षे करीने लीधी; अने वरुणनो घणो उपकार मान्यो. ते वखत कवाडीने साचाईनो व्यवहार जोईने वरुणे प्रसन्न थयीने ते सोना रुपानी बे कोहोवाडीया तेने वधीस आयीयो. ते स माचार कवाडीमा सोवतीचे जाण्यो. त्यारे तेणे पण नदीउपर जोईने तेमज हाथसांणी कोहोवाडी पाणीमां पाडी, पळो कोई खणं जाणे ए प्रकारे ज, विलाप करवा लाग्यो. ते सांभळीने पूर्ववत्

वरुण

वरुण त्यांहां आय्यो, अने डपकी मारीने सोना नी कोहोवाडी उपर काहाडी, अने ते कवाडीने पुळ्युं के तारी कोहोवाडी गयीके ते आचरे, ते सोनुं जोईने कवाडीनुं मन चंचळ थयुं, अने ते वरुणने केहेके, हा महाराज एज ह्यारी. एम कहीनेते घामरो थईने वरुणना हाथसांणी लेवा गयो, एटले, वरुणे तेने तिरस्कार करीने तेने सोनानीतो आपी नहीं, पण तेनी मूळनी हती ते पण तेना हाथसां आवी नहीं.

सार

घणुं करीने लोकानुं अन्याय मार्गे चालवाउ पर चित्त थायके, आ जगतमां डगपणे करीने चालनारा केटलाकके ते अनेक कारण केहेके ते कोहो; पण जातामां आ लोकमां प्रामाणिक पणा सरखो त्रिजा गुण नथी. जुषो के, आपण, साचो ग्रहस्थ होयके तेउपर सघळां कामनो विश्वास राखीये छीये, अने तेने छोटे मानीचे छी

ये;

ये, तेमज परलोक प्राप्तीमां पण प्रामाणिकपणा सरखो गुण नथो, जायाथी कोई लोकोना शा खनां साचाईनी प्रशंसा नथी करी एवं नथी; मा टे साचुं बोलनारो पुरुष बे लोकमां सुख पांमेळे.

—*—

वात १२६

दीपडु शिवाळ अने वांदरो

एक वांदराने पंच करीने, तेनी आगळ, दीपडे शिवाळ उपर चोरीनी फर्दाद करी. ते पंचाई तनुं कौतुक जोवा सारु विजां पशू पण सुभामां आयां हतां ते त्यांहां दीपडानुं बोलवुं थई रह्या पळी, शिवाळे एक वातमां जनाय दीधो के, छे दीपडानी जन्म चोरी नथी. पळी ते तंटा नो विचार करीने वांदरे सारांश हतोते कह्यो. दीपडाने कह्युं के, अरे, तारी एवी जन्म काई थयो नथी. अने शिवाळने कह्युं जे, तें थापण खा

धीके

धीके खरी, एमां काई छाने संदेह नथी. ए प्रमा णे ते बे जणाने लुचा एवं ठरावीने सभा उठी.

सार

जे एकवार लुचा कोहेवायो तेनुं खरुं कोई मानतुं नथी. दीपडुं ए विजानुं विन्न केई जनाहं, अ ने शिवाळ पळुं ठग, एवं सर्व जाणे के, माटे, ए वो न्याय थयो.

—*—

वात १२०

मदीनो मळ अने समुद्रनो मळ

एक नदीमानुं माळलुं पूरना तणावमां तणाई ने समुद्रमां गयुं. ते नवा देशमां जतांवेतज, त्यां हांना रेहेनाराओनें तण सरखा मानवा लाग्युं अने कोहेवा लाग्युं के, छारो देश, छारी जात, अने छारं कुळ, तमारा करतां सारं के. ए माटे छाने तमे सर्व मळीने उंचे ठेकाणे बेसारीने मा न थापो. त्यांहां पासेज एक विजी जातीनुं माळ

लुं

सु हतुं लेणे ते सांभळीने उत्तर दीधो अरे, हवे
थी एवा वात बोलीश नहीं. कदापि क तं अनें ऊं
एक जाळमां पकडाया तो, तनें खबर पडणे के उं
चुं ठेकाणुं कोणुं: गने तेटलं मूल आपीनें ताले
वंत लोक, छानें खावानें लेई जणे; अनें तुं तो
हलके नूले गरीव लोकोनें घेर बेचाईश, अधवा
मफत पण अपाईश.

सार

पारके ठेकाणे जईनें ते ठेकाणानी निंदा, अनें
पोताना देशनी सुती कोछे तेनें अनाडी पुरुष जा
णवो. जेनें तेनें पोताना देशउपर प्रीति स्वभा
थीज होय. आपण परदेशनो तिरस्कार करीनें
पोताना देशनु वर्णन करवा सांडीये तो, ते देश
वा लोक आपणी अवगणना करीनें ते पोताना
देशनी प्रशंसा करणे. वस्तुतः आपणे देश सारो
माटे आपण छोटा एवं कांई नथो; तेनें तो गुण,
बिद्या, जोईये. ए माटे कोई देशनो रेहेवासी
हो पण गुणवान् अनें विद्वान् होय तेज सर्व ठेका
णे प्रतिष्ठा पाने.

वात १३९

देवशर्मा पंडित

एक दिवस देवशर्मा पंडित रगतो हतो, ते जो
ईनें कोई एक विजे पंडिते तेनो मशकरी करी.
त्यारे तेनो गर्व उतारवा सार देवशर्माये एक ध
मुष्य मगाथुं; अनें तेनी पण्ड उतारीनें पांशहं क
रीनें भुईंउपर मेहेल्युं; पक्षी ते पंडितनें पुच्छुं के,
आ छारा कोहेडानो अर्थ कहीश तो तुं विद्वा
न् खरो. पंडितनें ते कांई सुज्युं नहीं, त्यारे ते
णे देवशर्माने कहुं, के, एनो अर्थ छानें तो कां
ईं सुजतो मथी, माटे तुंज केहे. देवशर्मा बो
ल्यो, तनें सुजतो नथी तो ऊं कऊं सांभळ. जो
वा धनुष्य सदा चडावेलुं होय तो, उतावळुं भा
णी जाय; अनें ज्यारे काम पडे त्यारे चडावीये
तो, घणा दिवस टके अनें घणुं काम करे.

(३२४)

सार

समुच्चयन मन या धनुच्चयना सरलुं छे, ए सदा
धीधी मेहेल्युं होय तो, एनी शक्ति ओझी आयके;
पछी ए तेषुं काममां आवतुं नथी. माटे हास
विनेर रसवुं ए, समने विद्यांतीजां देकाणांहे; अ
ने बुद्धीने वधारनारांके; ते निर्दोष माटे छोटा
पुरुषोपेपण ते सुखे करवां.

—**—

वात १३२

कागडो अनें खबतर

एक खडानां खबतर रेहेतां हतां; तेनी मंडळी
मां पीछां धोळां करीनें एक कागडो पेटो; तेणे
मौन राख्युं हतुं, माटे ते खबतरोना जाण्यामां
आयो नही, एवुं कोटलाक दाहाडासुधी घाल्युं;
पछी कागडानें पोतानीं छतीनुं भान न रेहेतां ते
का, का, करवा लाग्यो; तेउपरधी आ कोणहे

ते

(२२५)

ते जाणीनें खबतरोये तेनें शिक्षा करीनें काहाडी
मेहेल्यो, ते फरीनें पोतानी मंडळीमां गयो, त्या
रे तेनां ते रंग वैरंग पीछां जोरनें, आ आपणामांने
नहीं; एवुं कहीनें कागडाओपेपण मारी काहा
झो. ए प्रमाणे ते कागडो पोतानामां जे यो
ग्यता न होती ते लेवा गयो ते पोतानी हती ते
नेपण मेहेलीनें आय्यो. ते नहीं कागडो अनें
महीं खबतर एवो थयो.

सार

बेष धारीहे तेसनं एटलुं एक सारुं छे के ते व
ण दाहाडासुधी लोकीनें ठणी सकता नथी; ते
मनुं बोलवुं अथवा आचरण एकादी वखतपण ते
आ बेषधी जुदुं पडेहे तेणे करीनें तेसनं खोटाप
णुं उतावळुंज सृज्ज पुरुषना जाण्यामां आवेहे.

वात

५७

वात १३३

चकली अने ससलो

एक गरुड पक्षी, ससलानें पकडीनें तेनीउपर बेटो हतो. त्यांहां पासिज झाडउपर एक चकली होती, ते ससलानें कोहेके; अरे, तूं पुरो मूर्खके. धिक् तारा जीववानें. अरे तूं छानोमानो बे श्री रक्षीनें मिथ्या कां जीव खुवळ. उड अने ना शी जा. ऊं एव जाणुं, जे जो तूं चळ करीश तो, जातोना चपळके माटे, शत्रूना हाथमांथी सह ज नाशी जईश. ए प्रमाणे चकली ससलानें तिरस्कार करीनें बोलेके, एटलायां, एक बाज आथो; तेणे झडप मारीनें ते चकलीनें उचकी लीधी; ते वखत चकलीचे घणा विलाप कर्धा, पण ते बाजे कांई गणकार्या नही, अने तेनें लोईनें गणे, ते जोईनें, ससलो मरती वखत पण समाधान पासीनें चकलीनें कोहेके; अरे, तूं पोतानें निर्भय सानीनें ह्या नें धमकावती हती, ते तज उपरज ते प्रसंग आ झोडे, तो जोईचे तूं कोम निर्बाह करके.

सार

सार

जे पोतानी उपर बोने त्वारे तो बभराय, अने विजानें माच शास्त्री वाता कोहे, ते पुरुष उ पहासनें योग्य थायके.

—○*○—

वात १३४

बृहस्पति अने मूर्तिकरनारो

एक दिवसे बृहस्पतीना मनमां आव्युं को, ननु म्य लोकमां ह्यनें कोटलुं मानेके ते जीवुं, माटे ते भूलोकउपर आथो; अने मनुष्यमं रूप लेईनें मूर्तिकरनारानी दुकाने गयो. त्यांहां अने क देवानी मूर्तियो वेचवानें मांडीयो हतीयो, ते मां तेणे इंद्रनें, कुबेरनें पोतानें पण, दीडा. ते वखत पोते मूर्ति वेचाथी लेवानें आथोके एवं दे खाडीनें, इंद्रनें साने आंगळी करीनें वेचनारानें पुहेके; अरे, आ मूर्तीनुं शुं लेईश? ते बोल्थो बे

यैसा

पैसा अने आ कुबेरनुं? एनं काई वस्तु बेसरो, ते सांभळीने वृहस्पति माथं डोलावीने तेने पळेके, वा र त्यारे, आ वृहस्पतीने मूल सवळा करतां वस्तु हरो नहीं वारु? मूर्ति बेचनारो बोल्हो, जो तू आ वे मूर्तीयो लेईश तो, वृहस्पतीनी तो ऊं त ने ते वेना मूलमां मफत आपोश. ते सांभळी ने वृहस्पति आशीधाळो घईने पाळो गयो.

रार

जो आपण सव्यागे चालीयेछीये, अने योग्य आचरण आचरीयेछीये, अने आपणा देशनं, मित्र नं, अने पोतानं पण कल्याण घवासारु उद्योग करीये छीये; तो पछी लोक मनमां आवे तेवुं बो लीने! आपण ते सांभळवानो उद्योग शं करवा करीये; जो पुरुष पोतानो प्रशंसा विजाने होाडेथी सांभळवानो उद्योग करेहे, ते बुद्धि मानेना लक्ष सां पोतानं हलकापणुं मात्र देखाडेके. पछी ते मने वृहस्पतीनी पेटे लाजवुं पडेके.

वात

वात १३५

राजा शूरसेन अने तेनो दास

कोद वखत जन्हाळाना शिवसमां, शूरसेन रा आ नगरने बाहेर फारीने पाळे आवतो हतो, ते पोतानो सुंदर वनबाडीमां गयो. त्यांहां नाना प्र कारनां वृक्ष हतां, तेनी शोभा जातो जातो आ णीमर तेणीमर फोके, एटलामां, त्यांहांनो एक दा स, सारो वनीठनीने हाथमां एक पाणो झांटावानी झारी लेईने, राजा हतो ते ठेकाणे रस्तो झांटावा आथो; मनमां एधुं के, ऊं बेचाण लीधेको दासकुं ने ह्यारी आस्था पूर्वकनी चाकरो जोईने राजा प्र सन्न घईने ह्यारो दासपणामांथो कुटको करे. प छी ते राजा जहां जहां फरे, त्यांहां त्यांहां तेनी आगळ ते आडे अबळे रस्तो जोईने कुटकाव क रे. राजाये तेनुं गरज जेटलुं आर्जव जोईने, तेने बो लाथो; एटले ते दास दोडतोकने राजा सरसो

आवीने,

आवीनें, आशा भरो उभो रह्यो। त्वारे राजाये ते
नें कह्युं; अरे, तूं तारुं काम रेहेवा देईनें तें जो
आटली वार परिश्रम कर्यो, एनुं काई काम न
होतुं, आटली वार तारे विजुं काई काम करवुं
जोईतुं हतुं, तो हवे ऊं तारो संदेह लागुं, के,
तारी आशा क्षारीपासेची सफल बनार नथी।

सार

मरज जेटलुं आर्जव, आगळ आगळ पडीनें क
रनारा घणा पुरुष के; ते आपणी तरफती विजा
नें प्रसन्न करवा सारु जेम जेम वत्तो उद्योग क
रेके, तेम तेम, सुख पुरुषनें तेनो कटाळा आवे
के; तेथी तेनो स्वार्थ घतो नथी, अनें उद्योग नि
ष्फळ जायके।

—००*००—

वात १३६

कोयला बेचनारो अनें धोबी

एक कोयला बेचनारो एक मगरमां धंधो क
रवा सारु श्रयो हतो, त्यांहां तेना गामना धो
बीना मेलाप यथो, त्वारे बे जाणाये एक एकनी

खबर

खबर अंतर पुढीनें रेहेवानां ठेकाणां पुढ्यां; त्या
रे कोयला बेचनारे धोबीनें कह्युं के, तारुं ठेका
णुं सारु नथी माटे, क्षारा घरमां आवीनें रेहे.
धोबी बोळ्यो, भाई, तें कह्युं ते खरुं पण, तारी
जोडे आवीनें जो ऊं रऊं तो ऊं जे लुगडां सवा
रमां धोईनें आणुं तेनें तारा कोयलानी रज स
ध्याकाळ घता पेहेलां काळां करे.

सार

आ जगतमां कोईनी साये समागम करवो, तो
ते छोटा विचार करीनें करवो जोईये. आपण
छोटा गुणी छीये, पण निरंतर जो दुष्टनो समा
गम रेहे, तो, ते आपणनें तेना सरखा करेज. ए
माटे जे विचार करनारा अनें पोतानुं सारुं इ
हनाराके; तेमणे कुमनुष्यथी वेगळेज रेहेवुं. तेनी
संगती समूळ नाश करे. तेनो समागम करीनें
आपण निर्लेप रह्या तोपण, लोक तेवुं जाणनार
नहीं. समागमना योगथी तेनुं अनें आपणुं एवुं
एकटुं मळीजाय के, तेसांनुं काळुं, ते, तेनुं, अ

ने

नें मोरुं, ते, आषणुं, एटलुं जुहुं पाडवानो अम
लोक करता नथो. प्रतिष्ठाछे ए निर्मळ झरणना
याणी सरखीछे, ते जेम कचरा कादवमां भळीनें
वेहेवा मांडे त्यारे डोहोळो थायछे, तेमज दुष्ट स
जागमथो विद्या मेळी थायछे.

—०*०—

वात १३७

गवई सारंगीवाळो

एक गवईसारंगी लेईनें कलालनी दुकामे गान ता
अ करीनें मयणे लोकोनें घणा प्रसन्न करतो. तेमनी
ते वाहवाः सांभळीनें तेना मनमां एवं आयुं के
एक दिवस ऊ नाटक सभामां जईनें, ह्यागे गुण दे
खाडीनें, इथ, अनें कीर्ती, पेदा करुं. एवो तेना घणे
आयह जोईनें गान करनारा तेनें सभामां लेई गथाः
त्यांहां जग्या विशाल, अनें लोकनी भोड, तेणे
करीनें तेना स्वर अनें सारंगीना नाद ढंकाई गयोः

ते

ते कोईथी संभळायो नहीं; अनें जे कोई लोक, पासे
हता तेमणे सांभळ्यो, पण तेमणे ते डेकाणे छोटा
छोटा गानारा, वगाडनारा, एमनं गावुं, वगाडवुं,
सांभळ्युं हतं, माटे तेणुं ते एमनें कठोर लाग्युं; ते
थी ते वलन तेमणे नाक मरडीनें रीसथी तेनें आं
छो आंछो करीनें ते गवईनी फजेती करी; अनें तेनें
सभानी वाहेर काहाडो मुक्यो.

सार

जे प्रशंसक अथवा अजाण लोकोना मुखथी
प्रशंसा सांभळीनें पोताने छोटे मानेछे, ते पुरुष
लोकोमां उपहास पामेछे. एकादो विनादी हो
यछे, ते चार अनाडी लोकोनें प्रसन्न करी सकेछे,
माटे, ते शुं पंडित लोकोनी आगळ ह्यो उघाडी
नें तेमनें प्रसन्न करी सकशे? ए माटे नरुं प्रसन्न
करवा उपरज मन न राखीनें, पोतानी योग्यता,
सांभळनाराथोनी योग्यता, अनें जे गुणे करीनें अ

सुख

५६

सन्न करनार ते गुण आपणामां पुराहे, ए सघळें
विचार्युं जोईये. नहीं तो कर्षो अत मिय्या था
य, अने उळटो लोकमां उपहासतानें पामे.

—**—

बात १३८

कृतज्ञ कुतरो जेणे गाडरां खाधां

एक रवारी पोताना कुतरा उपर घणो विश्वा
स राखतो हतो. बाहेर जाय त्यारे पोतानां गा
डरां ते कुतरानें सुणे. अने तेनाउपर सघळो वि
श्वास राखीने निश्चित रेहे; अने ए कुतरो उल्ला
हथी चाकरी करे माटे तेने ते नित्य मांखण, रो
टलो, खवरावे. अने तेनीसाथे मीठुं मीठुं बोलें.
एटलं करतेंपण ते कुतरो धणीनी पळवाडे एकां
हुं गाडहं मारीखाय. पळी केटलेक दिवसे ते र
वारीने खवर पडो, त्यारे तेणे ते कुतरानां प्राण
खीवा मांखो; ते बखत कुतरो तेने केहेके, अरे ख्या
रा धणी, तुं ह्यारो जीव लेंईय नहीं, जो! ऊं ता

रो

रो असल जेणे चाकर हें; एक अन्याय चुकीने
हो कर्षो हसे, ते उपरधो तुं आवडो निर्दय अई
ने ह्यने मारी नांखवानुं शासन करके ए तने घो
र्य नथी. दीपडुं ताहं नित्य शत्रुपणं करेके, तेनुं
बैर तुं कां लेंतो नथी? रवारी उत्तर करेकेअ
रे लुचा, तने दीपडा करतां सोगळुं वत्तुं शासन
करवुं थोग्य के; शामाटे जे, दीपडुं अपकार करे
ज, ए ऊं पळुं जाणुंकुं, माटे तेनाथी ऊं नित्य सा
बध रेहेतो. पण तुं ह्यारो विश्वासु चाकर, अ
ने ऊं तारे भहसे रेहेतो, तने सारी रीतीये पा
ळतो, ते तजथी जारे ह्यारो अपकार थयो ए, ह्य
ने घणुं दुःसह लागेके. माटे तज सरखा कृतज्ञ
ने जीवतो राखवो ए थोग्य नथी.

सार

जेनुं आपणे सारुं कर्षुं; जेउपर आपणे विश्वा
स राख्यो; जेनी साथे आपण नित्र बुद्धीये चाल्या;
तेनाथी आपणो अपकार थयो तो ते सेहेवातो
नथी. तेनी क्षमा थती नथी. तेना अपकारथी

जे

जे दुःख थायके तेना प्रताप पण प्रवृत्ता अपका रवी थतो नथो. माटे एवा अपराधीयानें शिक्षा करवी ते, अपराध प्रमाणे करवी नहीं; तो, आ पणी अघा प्रमाणे करवी.



वात १३६

इंद्र अने गंधेडा

एक धोत्रेना गंधेडा भार वहीवहीनें अकळा थो, त्त्यारे तेणे, इंद्रनी प्रार्थना करी. हे देव, ह्या जें विजो धणी आप, त्त्यारे इंद्रे तेनें कुंभारनें स्वाधीन कर्यो. पकी त्यांहां इटोनां भार वही वही जें त्यांहांथो पण अकळाथो. पकी फरोधी इंद्र नी प्रार्थना करवा लाग्यो जे, कुंभार करतां विजो सारो धणी आप. त्त्यारे पकी इंद्रे तेनें चामडीयानें स्वाधीन कर्यो. तेनी पास रहीं ते घ खोज दुःखी थयो, अनें केहेवा लाग्यो, अरे, ऊं

सुखी

केवो जै, आ चामडीयो तो ते बेकरतां घणो ज दुष्टके, जीवतां काम करावीनें मुशापकी ह्यारं चामडुं पण काहाडनार एवा धणीनें स्वाधीन थयो.

सार

होय ते चाकरी अथवा ठेकाणाची अकळाईनें विजो ठेकाणामां सुख थरो एवं मानेके, ते अज्ञां नी जाणवा, सुखदुःख ए सर्व ठेकाणे हे; एमाटे आ पण होय ते ठेकाणामां रहीं संतोष पामीचे, शा माटे के, नवा ठेकाणामां सुखज थरो एना निश्चय नथो. कदाचित् अधिक दुःखपण थाय.



वात १४०

गामडीयो उंदर अनें सेहेरनो उंदर

एक सारो भोळो गामडानो उंदर हतो; तेनें घे र त्दष्ट पुष्ट एवो एक सेहेरनो उंदर आयो. ते मुं अनें एमुं जुनुं ओळखाण हतुं, तेथी ते गामडी

थे

ये तेनी घणोज पहंलागत करी. जे पदार्थ पोतां
ने घेर हता ते, अने पामेना खेतरेसांथी काई कु
ळी कुळी बटाणानी शीशे, अने वज्रतां जश्या, अने
काई रोडलाना कडका, ए सर्व तेनी आग
ळ मेहेल्यु, अने ए प्रमाणे गामडामां जेटली ज
नसो मळतीयो हतोयो तेटली तेणे सेळवीयो; प
ण सेहेरीने ते काई भावीयो नहीं. पछी ते ग
मडोयाने केहेवा लाग्यो छोटा भाई, जो तमे ह्य
ने रजा आयो तो, ऊं मन मोकळुं करीने बोलुं;
जे, तमे आवी या नठारी जग्यामां कपम रहेका.
या अरण्य, अहीयां आसपास चार, झाड, डुंगर,
अने पाणीनां व्हेळा, ए विना विजुं काई नत्रे प
डतुं मथी, तो या पक्षीयोना कलबलाट करतां
माणसोना शब्द सारा के नहीं वाह? या उजड
अरण्य करतां राजधानी सारी के नहीं? माटे ऊं
कळुं ते तमे खरं मानो, अने सेहेरसां चालो:
त्यांहीं तमे घणुं सुख पामशो. हवे विचार क
रशो नहीं, उतावळा चालो. या मृत्यु लोकनी
बस्ती क्षणभंगुर, माटे जेटलो काळ जाय तेटलो

आनंदसां

आनंदसां काहाडयो. एवी तेनी बडाईनी वातो
सांभळीने ते डोसाने मोह लाग्यो. पछी ते वे जणा
त्यांहांथी नोकच्या, ते रात पडी एटले सेहेरसां
गया. आगळ जायके एटलानां तेणे एक छोटा
घर दीतुं. त्यांहां पेहेले दिवसेज विवाह यथो
हतो, तेनी जमणवार थयी हती; ते घरसां जई
ने ते वे जणा एक ओरडामां पेठा. त्यांहां ना
ना प्रकारनां पक्कान्न भयीं हतां, अने त्यांहां को
ई मनुष्य हतुं नहीं; ते जोईने गामडोयाने घणो
आनंद यथो, पछी सेहेरी तेने केहेके, छोटा भा
ई, तमे ओरडा वचे वेसो, ऊं तमनें एक एक प
दार्थ आपुं ते चाखीनें ह्यनें तेनी खाद केहेता जा
ओ. पछी ते सेहेरी उंदर जेटलां पक्कान्न, फळ,
हतां तेसांथी एक एक पदार्थ अनुक्रमे पोताना
परुणाने आपे, ते पहंणो चाखीनें, आंख्यो मोची
नें, आहा! शा मोठा पदार्थके, वा: एम कहीनें ग
मडोयो तेनी खाद वर्णन करे, ए प्रमाणे एक
घडी तेसणे आनंदसां काहाडी. एटलानां को
ईचे ओरडानां कमाह उघाडवा मांझां, ते जाणी

नें

में वे जणा नाशीनें एक खुंगामां जना रक्षा. ए
टलानां वे छोटा मातेला बलाडापण त्यांहां आ
था; तेमणे छोटा शब्द कर्था, ते सांभोळनें गाम
डोया उंरनं हर्दय धाके थडकवा लाग्यं. पक्षी ते
हळुवे रक्षीनें सेहेरीनें केहेके, भाई, चावं जो ता
रा नगरं सुख के, तो ताहं तनें अक्षय रहो. प
ण च्छारेतो च्छाहं गामडुंज साहं. त्यांहांनो खेतर
नी शींगो सारी, पण रात दाहाडो जीवनें धरवरा
ठ राखीनें, अहींयां या पकात्र खावां न जोईये.

सार

खावा पीवा जेटलं द्रव्य, अनें उपद्रव विनानं ए
कांत स्थळ जो मळे, तो, अरण्यमां वास सारो; पण
सेहेरमां रक्षीनें नाना प्रकारना शरीरनें अनें मन
नें उपद्रव भोगवीनें, श्रीमंताईमा डोळमां रेहेवं कां
ई साहं नहीं. केहेशो के, विजन वासमां एटलं सु
ख के त्यारे लोक नगरमां क्यम रेहे के? तो ते
मां कारण घणांके; केटलाकनें वाद प्रतीवाद सार

रेहेवं

रेहेवं पडेके. केटलाकनें राजकामसार, केटलाक
नें उद्यमसार. केटलाक गुणवानना समानम सा
र रेहेके. केटलाक पोताना वृद्ध रेहेता आव्या मा
टे, केटलाक खेही संबधीसार, केटलाक नगर द्रव्य
सेळववानुं ठेकाणुंके ते सार रेहेके. केटलाक वि
द्वान कुशलके ते नगरमां रक्षीनें एवं इच्छेके के
अनुक संख्या द्रव्य सेळवीनें, पोताना गाममां ज
ईनें, सुख भोगवीं. विजा केटलाक, जन्मसुधी नग
रमां दुःख भोगवे के; तेमना मनमां एवं के वृद्धा
वस्थामां नगर सेहेलीनें एकादी नदीनी तीरे अथ
वा तीर्थमां जईनें सुखेकरीनें आयुष्य पूर्ण करीं.
एटले, नगर वासी लोकोमां घणुं करीनें एवो को
ई जणातो नवी के, जेना मनमां विजनवास कर
वानी इच्छा नथी. छोटा छोटा जुना कवीयोपेप
ण वर्णन कथुं के के, मन स्वक राखवाने, पुण्य
करवाने, अथवा आरोग्य भोगववाने, विजनवा
स जेवं विजुं साधन नथी.

वात

बात १४१

उंदर अने सापनी माशी

एक बभुक्षित दुबळो उंदर हतो, तेणे घणे अ
मे करीने एक फाडीयाना कोठारमां लुंणाभणी
दर पाळुं, अने मांहे पेटो. त्यांचां कुटलाक दी
वस यथेष्ट दाणा लाईने जाडो घयो. पही एक
दिवस तेने बाहेर नोकळवानी इच्छा थयी, तारो
बाहेर नोकळवासारु घणो अम कर्यो, पण शरी
र जाडुं थयुं हतुं ते दरमां मायुं नहीं तेषी नी
कळायुं नहीं. ते जोईने पासे एक सापनी माशी
हती ते तेने केहेहे, भाई, जो तूं तारो कुटको क
रवाने इच्छतो होय तो, तेनो उपाय आ एकज के;
जे, तूं जेवो पेहेलां दुबळो हतो तेवो था; एटले
ऊं जाणुंकुं जे दैव योगथी तूं अहींयांथी कुटीश.

सार

जे गरीबार्थांथी श्रीमंतयनो तेने वसुं करीने गरी
बार्थनां सुख भोगववाने मळतांनथी. गरीबार्थां जे
सुखहे ते श्रीमंतार्थां नथी; श्रीमंतनी पडवाडे घ

णाक

णाक तंटा आवेडे, ते गरीबने नथी होता, मा
टे जे ते तंटाथी अकळाय तेणे संपतीधीपण अक
ळायुं जोईये, तोज सुख पामे, जिजा उपाय नथी.



बात १४२

पेट अने विजा अवयव

कोई एक दिवस हाथ, पण, इत्यादि अवयवो
ये विचार कर्यो के, आपण छोटा अमकरीने पे
दा करोये, अने आ पेट नकामुंवेठुं वेठुं लाय, ए
शुं? माटे आजसुधी जे थयुं ते थयुं, पण आज प
ही ए पोते उद्योग करीने एनुं पोषण करे, अह्यारे
एनी काई गरज नथी. एम कहीने सर्व अवयवो
ये सम खाधा. हाथ केहे अह्ये जो आजपही पेट
ने माटे एक आंगळी हलावीये, तो अह्यारी सव
ळी आंगळीयो तुटी पडो. ह्यो केहे ऊं सम लाजुंकुं
के, जो ऊं एने माटे एक कोळीयो लेजुं तो ह्य
ने कोडा पडो. दांत केहे जो, पेटमाटे अह्ये एक

कोळीयो

कोळीयो चावीये तो अह्मार्हं सद्यानास जाओ. ए प्रमाणे सम जोर्डनें निश्चय करीं ते सर्वनें महा कष्टे करीनें पाळवो प्राप्तवयो. छेलीवारे एवा अ वस्था आवी जे, सघळा अवयव सुकाई गयो; हा डकां अनें चर्म मात्र बाकी रह्यं. ते वखत सर्वनी आंस्थो उघडीथो के, आपणे काम खोटुं कर्युं. पेट वना आपणो उद्धार नथी. पेट पोत उद्योग क रतुं नथी लहं; पण जेटलुं आपणा योग्यो तेनुं पो षण, तेटलुंज तेना योग्यी आपणुं पोषण थायई.

सार

कोई एक समयमां एक राजधानीमां एवुं थयुं के, घणा दिवस सुधी राजाओनें परस्पर ल डार्ई चाली; तेथी सरकारमां द्रव्यनो तोडो आ थो; माठे राजाये पोतानी रचीवत पासैथी वा रे वारे बेरो लीथो. ते उपद्रवथी अकळार्ईनें सघळी प्रजा सेहेर मेहेलीनें नीकळी गथी. त्यांहां सघळा लोकोथे एको कर्था के, आपण मेहेनत

करीथे

करीथे, अनें सरकार अमथुं वेठुं लाय ए शुं? तो आजथी आपणे सरकारनें काई आपवुं नहीं. ए वो तेमनो निश्चय जोर्डनें राजाये पोतानो प्रधा न तेमनी पासे मोकल्यो. तेजे तेमने आ पेट अ नें अवयवनी वात कही. ते सांभळतांवांतज प्रजा राजानें अनुकूल थथी; अनें राजा प्रजा बे सुखी थयां. तात्पर्य एटलुं के, सरकारनें द्रव्य आपो ये नहीं तो, ते सरवंदीनुं खरच सहजज ओळुं क रे, एटले, धाडां एकठां थर्डनें दीवसे लुटे, को ई कोर्डनुं सांभळे नहीं; अनें बंड उभां थर्डनें उ पद्रव करे; तेथी राजा अनें प्रजा एमनो एक का ळेज नाश थाय.

वात १४३

गधेडो सिंह अनें जुकडं

एक गधेडो, अनें जुकडो, ए बे जणा, एक डे काणे चरता हता; एटलासां सामेथी एक सिंह

आवतो

आवता हतो तेने जोईने तेवखत कुकडे छोडो
शब्द करीया. सिंह कुकडाना शब्दयो घणुं विही
येके, ते शब्द सांभळतांज, सिंह घणी उतावळ क
रीने पाहो नाडो. ते जोईने गधेडाना मनसां
आयुं के, हाने जोईने सिंह नाडो. माटे ते दावी
ने सिंहनी पळवाडे धायो; ते कुकडाना शब्द सं
भळाय नहीं एटले वेगळे गयो एटले सिंहे पाहो
करीने तेनी गर्दन पकडी. ते वखत गधेडा मनसां
केहेवा लाग्यो के, हरे हरे! ऊं मूर्ख केवो के पो
तानुं घंढपणुं जाणोने आ उछीतुं मोत मागोने
काळना ह्योसां पळो. नहींतो आ वखत ह्यो
रा कुटंबनां निश्चित वेढो होत.

सार

शरीरनं सामर्थ्य न होय अने जे, ते उछीतुं ले
वाने जायके, ते पाशनां पडेके. ठेकाणाना अथवा
संगतोना साहाय्ययो एकादी वखत आपणयो कोई
विहीना, तेउपरथी ते आपणयो दवेके एवो निश्च

य करीने तेनी संधाये एकाएकी प्रसंग पाडवा ज
ईये नहीं. तेनु अने आपणुं सामर्थ्य जोईने चा
लीये.

—००*००—

वात १४४

वांदरो अने शियाळ

एक वांदरो शियाळनी प्रार्थना करीने केहेवा
लाग्यो के, तारुं लांबुं अने गुळा सरखुं पंखडुंके; ते
सांथी न्हानोक कडको हाने आपीश तो, ऊं ह्यो
रो वांसा हांकीश; एटले हाने टाहाड, वायु, ए
नो उपद्रव नहीं थाय; तारी पंखडी तारे जोईये
ते करतां वत्तीके; अने तेपण तुं धूळसां मेली क
रुह, तो तेसांथी थोडोक हाने आपीश तो तेसां ता
रुं कांई अडतुं नथी; अने ह्यारुं काम यश. शियाळ
उत्तर करेके, अरे, तुं पंखडी वत्तीके एम केहेके,
पण, जे छे तेके, तुं समजतो नथी पण ऊं तने क

ऊँहूँ के, ऊँ महं त्यांहां सुधी ह्यारी पुंऊडी एम
ज हलावीश पण एमानो एक वाळ सरखो तने
आपनार नथी.

सार

केटलाक लोकोनी पासे घणुं द्रव्य होयके जे,
तेनो निर्वाह पुरो थडनें घणुं उगरेके, एवके तो
पण, तेनें लोभयो एव आवेके के, विजुं जो मळे
तो घणुं सारुं; पकी एवा विचार आवे एटले ते
मांथी एक कोडी पण, तेनो परोपकारमां आवे
नहीं.



वात १४५

गधेडो अने कुतरो

एक दिवस गधेडाना मनमां आयुं के, विला
यती कुतरा उपर आपणो धणी घणी प्रीति करे
के, माटे ऊँ पण ए कुतरानी पेठे कुदुं, भसुं, पुंऊडी ह
लावुं, अने खोळामां चडीनें बेसुं, तो, धणीनो वा
हालो

हालो थाऊं. एवो विचार करेके एटलामां, ते
नो धणी खेतरमां गयो हतो ते आच्यो; अने घर
ना उंवराउपर वेडोके एटले, गधेडो तेनें सामे
आबोनें, प्रथम तो आणीसर तेणीसर कुत्कारा मा
रवा लाग्यो; पकी लांबो खर काहाडीनें भुंक्यो;
ते जोईनें धणीनें खडखड हसवुं आव्युं अनें छोटे
कौतुक सरखुं लाग्युं. दस पांच पळे तेज कौतुक
एनाजीव उपर आयुं; ते गधेडो पोताना पाह्ला प
गउपर उभो रहीनें, तेणे आगळजा बे पग छोटे ह
धंकरिनें धणीनी छातोउपर मेहेल्या; अनें हन
णां छातोउपर बेसनार एटलामां, तेणे वन पाडी,
ते सांभळीनें घरमांथी एक चाकर हाथमां धोको
लेईनें होडतो आच्यो; तेणे ते गधेडानें मारीनें हा
डकां जुदां कथीं, अनें गधेडाना मनमां आणि आयुं
के, धणीनी छपानो थवुं ए सर्वथी थतुं नथी.

सार

केटलाक पुरव विलायती कुतरासरखी चेष्टा
करीनें पोताना धणीनें प्रसन्न करेके. ते तेवा हो

थके

पक्षे तेथीज थायके, पण विजो जाणे जे ऊं करण
ते, गधेडानी पेठे शिक्षा पामे. शा माटे जे, ना
णस सागसनी प्रकृती तन्हे तन्हेनी होयके: तेनें आ
नंद पलाडवाना प्रकार पण जुदा जुदा होयके.

२२२२२

वात १४६

पशु पक्षी अनें वागेळ

एक दिवस पशु अनें पक्षि ए वेमां परस्पर
झोटी खडाई लागी. त्वारे वागेळोये विचार क
र्था के, आपणा शरीरना घाटउपरथी आपण प
शु के पक्षि, एना लोकोनें संदेहके, ते, आज आ
पणनें कामलो के. माटे आपण वेगळे रक्षीनें शुं
थायके ते आगळथी जोईथे आवो, पक्षी गत
शे तेनी पक्ष खेईशे. एटलामां वे सैन्य एकठां
थईनें घणीज मारामारी चाली. ते जोईनें प्रथ
म वागेळोये एवं जाण्युं जे, पक्षीनी जीत थशे;
माटे पक्षीनी तरफ आवोथो. अनें वेगळथी आं

स्थो

स्थो चडावीनें जोती हतोथो के, वचुं ओळुं देखी
शुं तो ते प्रमाणे करीशुं. पक्षी केटलीक वारे,
पशुनुं सैन्य जीत्युं एवं तेनी नजरमां आयुं; त्वारे
पशुनी तरफ जईनें तेमनें केहेवा नांजु के, जुओ,
उंदरनां झो, अनें अक्षारां झो सरखां के, माटे,
अक्षो पक्षी नथी पशुक्षीये; अक्षानें तमारी मंडळी
मां ल्यो, अक्षो निरंतर तमारुं कल्याण मनमां इ
च्छीशुं, अनें तमारी साथे कोई दिवस बगाड क
रीशुं नहीं. पशुये ते मान्य कर्युं. पक्षी डेली ख
डाईमां गहडे छोटां पराक्रम करीनें पशुनें सर्व
प्रकारे हराव्यां, पक्षी ते वागेलो पोताने प्राण वंचे
अनें ज्ञातीना हाथमां जईनें आपणी फजेती न था
थ माटे त्यांहांथी नाठीयो ते, ते दिवसथी हजु
झाडनी वखोलोमां, पर्वतनी गुफाओमां, पेशीनें रे
हेके. ते हजु रात पडेके अनें सघळां पक्षि पो
त पोताने ठेकाणे सुवानें जायके त्वारे ते बाहेर
नीकळेके.

वार

सार

शत्रुनें मळोनें पोतानी नातना घात करवा ए सरखुं नीच कर्म विजं नथी. अनें ते जे करेके ते उघाडं पडे तो, तेनें मरवुं पडे अनें कदापिच जीवे तो, संसारमां ह्या देखाडवानुं टेकाणुं न रे हे. ते पाणी जाहां जाय त्यांहां सवळा लोक तेनो तिरस्कार करे.



वात १४७

कुकडो अनें शियाळ

एक कुकडो एक उंचा झाडना डाळा उपर ने शीनें ह्योटे शब्दे करीनें बोलतो हतो; एवो के तेना शब्दना सवळा अरण्यमां परडेो उद्यो. ते ब खत एक शियाळ खावानुं सोधतो त्यांहां पासेज फरतो हतो, ते, ते शब्द सांभळोनें ते टेकाणे आवीनें जुएके तो उंचे टेकाणे बेंडोके माटे ते

हाथ

हाथ आवे एवं दोठुं नहीं; पक्षी तेनें खेतरोनें हे टे आणवा सार तेणे कपट आरंभुं; झाडनी पा से जईनें तेने केहेके भाई, तनें जोईनें ऊं घणो राजी घयो; पण शुं करुं तुं जहां के, त्याहां आवी नें मजथी तनें आलींगन अपातुं नथी, माटे ऊं जा णुं कुं, जे तुं उतावळो हेटे आवीनें ह्यानें आलिंग न आपीश, नहींवाह? कुकडो केहेके. शियाळ काका ऊं तनें खरुंज कऊं कुं जे, हेटे आववुं ह्यानें निर्भ य देखातुं नथी; कदाचित् आवुं तो ऊं विजा को ईनें हाथ आवुं तो ह्यारी दशा कठिणज के नहीं? शियाळ उत्तर करेके, अरे ह्यारा प्राण, हमणाज बशुनेो अनें पक्षीनेो मेळाप घयोके तेमां एवं ट युंके को, हवेथी कोई कोईनें नारे नहीं; अनें सर्वे हेते रेहेवुं, अनें जे आ ठराव भागशे तेनें ह्योटी शिक्षा यशे. आ वात सर्वत्र प्रसिद्ध थयी के अनें तें हजु कस जाणी नथी ए ह्यानें घणी न बाई लामेके एम शियाळ बोलेके ते कुकडो का न देईनें सांभळतो हतो एटलामां, डोकुं बाहेर

काहाडीनें

काहाडीने कुकडो वेगळेयी जोवा लाग्यो, त्यारे तेने शिवाळ पुहेके भाई, तं आटलो मन घाली में शुं ज्येके ते ह्यने कहीश? कुकडो केहेके ते वे गळे पांच सातेक पारधीनां कुतरां आवतां होय एवं ह्यने दोसेके; शिवाळ केहेके एवं देखायके तो भाई तारे ह्यारे रामराम ऊं जाऊं. कुकडो के हेके अरे काका हांहां जशो नहीं; ऊं हमणां उ तावळाज हेटे आवुंकुं, ऊं जाणुं कुं जे आज सघळां जनावरोये सखा करीके साटे, कुतरानो तमा रे भो नथी; शिवाळ उत्तर करेके, नारे बावा, स खानी घात सघळे प्रसिद्ध थयीके खरी पण ते, ते कुतराओने खबर थयीके के नहीं ते कोष जाखे.

सार

ठग ठगनें ठगीनें घणो आनंद पाने; धूर्तनुं वोल वुं चंदनना सरखुं शीतळ, पण, तेना ह्येसां पाळी होयके साटे, काई कारणवना घणुंज समता नुं भाषण नजरसां आवे त्यांहां घणी सावधानी राखवी. जे काई पोताने डाहापणे करीने एवा

धूर्तनुं

धूर्तनुं माया पाश ओळखीने तेना हाथमां आवे नहीं, अने तेने उळटो चिंतामां घाले ते पुरुषनें छोटा चतुर कहीये.

—————

घात १४८

कणवी अने तेना होकरा

कोई एक कणवी मरवा पड्यो हतो तेना मन मां आयुं जे, ह्यं आज सुधी धंधो करीके तेवो ज ह्यारी पछवाडे निरंतर होकरावे चलाववो. पछी तेणे आ युक्ती करी; सघळा होकराओने खाटलापासे बोलावीने कह्युं. जे होकराओ ह्या रुं जे काई के ते आ खेतर, अने वाडी, के एना घणी तमे सघळा मळीने होज; विजुं जे काई ह्या रुं भुईमां हशे ते खेतरमां कहीक एक हाथ नी चे डाटेखुं हशे; साटे ते खेतर तमे विजा काई ना हाथमां जवा देशो नहींहो. ते सांभळीने हो कराराओचे निश्चय करी जे होसाये काईक इव्य खे

तरमां

तेरमां दाटी मेहेल्युं हे, पछी, ते कणवी मुवा प
छी तेमणे ते खेतर खेडवानें मग्ने हाथ हाथ भर
खोदी जायुं; तेमां तेमने धांपण तो जडी नहीं,
पण अंड सारी खेडाची, तेथी ते खेतरमां वावेला
दाणा दशगणा आध्या अने तेमने घणा द्रव्यने ला
भ थयो.

सार

शरीरे साजार्द, अने उद्योग, जहांहे त्याहां द्रव्य
लाभ अवश्य थायज; उद्योगमां उद्योग खेती समा
न विजो नथी, ते उद्योग जे पोताने हाथे करे
हे तेमनां शरीर कुंटां रेहेके. तेथी एकतो रोग
थाय नहीं अने लाभ थाय. विजुं आ संसार च
खववाने जे जे वस्तुओ जेईये तेनी खोठ नहीं.
ए माटे खेती थयवा वाडी डाहाये पुरुषे छोटे
हर्ष करवी; तेमां जे मेहेनत करी ते निशे व्यर्थ
जाय नहीं; एना लाभमां मनमां काई धोको न
हीं; एवो आ एकज धंधो हे, एनां साहित्याने
चोर पण चोरी सकतो नथी.

वात १४६

घोडो अने सिंह

एक ताजा वडेराने जोईने सिंहने घणी तपणा
थयी जे, एना मासने एक कडको जो खाने
मळे तो सारुं थाय. पछी ते वडेराने हाथमां
आणवा सारुं सिंहे वैद्यने बेश लीधो. अने सघ
ळां पशूने जणांयुं के, ह्ये देशे देश फरीने नाना
प्रकारनां औषधोतो अने बनस्पतीयोने अनुभव
लीधोहे. ह्यारे हाये पशूने एके रोग सारो थवा
बनो रह्यो नथी. वडेर तेनां पगलां ओळखीने, स
ममां विचार कथां के ऊपण ठग विद्या करीने
एने ठगुं. पछी ते वडेरों भोळापणुं देखाडीने सिं
हनीपासे लंगडतो लंगडतो आयो अने केहेवा ला
ग्यो के, वैद्यराज ह्यारे पाइले पगे कांटे भाग्यो
हे, तेथी ऊं घणो दुःखी कुं, माटे कृपा करीने त
मे काई उपाय करो. सिंह बोळ्यो वेडा, पासे
आव. ह्यने तारो पग जोवादे पछी वडेरें सिंहनी

पासे जर्दनें पाछला पगनी खात मारी तेहे करी
नें सिहनें जडबं फुटी गयं अनें वुमो पाडतो रह्यो.
वहेरो चारे पगे कुरीनें नाशी गयो, अनें मनमां
घणो खुशी ययो के, ह्ये भलो एनें ठग्योहे, जे ह्ये
नें ठगनार हतो.

सार

ठगनें ठगीनें घणुं समाधान थायके. यद्यपि कप
ट करवुं, ठगवुं, ए सर्वथा नाचनुं कर्म हे, छोटा
अनें घोरय नथो, तो पण आपणनें ठगवाने जे या
थ्यो तेनी आगळ कपट करीनें तेना मनोरथ सि
द्ध न थवा देवो ए नीतिजके.

वात १५०

सिंह रींक अनें शियाळ

एक अरण्यमां सिंह अनें रींक ए बे जणा बे त
रफथी दोडीनें एक हरणना शवआगळ एक का
ळेज आवी पोहोता पळी तेसां ते बेना बेलाबो

ली

श्री घईनें घणीवार सुधी घुइ थयुं. त्यारे बे ज
णा घायल घईनें थाकीनें भुई उपर पडा; एट
लामां अकखात् ते रस्ते एक शियाळ जतो हतो,
ते तेमनी अवस्था जोईनें निर्भय घईनें ते बेनी व
घमांथी हरणनें लेईनें गयो. ते बे लडवईया प
ण ते जोताज रह्या, शानाटे के, शरीरमां शक्ति
नहीं, ते माटे शियाळनें काई प्रतिबंध करी स
क्या नहीं. ते बखत बे जणाअनें विचार ययो,
ते, पोत पोताना मनमां केहेके, अरे, जुआ आ
फळ अह्यारा वडवानुं, ते लुचो अह्यारुं भक्ष्य ले
ईनें चाल्यो, अनें अह्यो एकमेकनें एवं कर्णुंके के,
तेना हाथमांथी पडाववानी पण शक्ति राखी नथी.

सार

एकाशी वस्तुसार लडीनें लोक अदालतमां न्या
य करवा जायके. त्यांहां वकीलनें फावेके. ए
बे लडीनें थाके, अनें तेमनें लाभ थाय. न्याय ए
शब्दनेो अर्थ विचार कर्थाथी केवळ नीतीज. पण
तेज न्याय मनुष्यना दुःखनुं कारण थयोके. आ

न्यायनें

न्यायनें भइसे कोटलाक भौख मागता दीठा है, के
 टलाक घरबार बेचीनें देवुं करीनें पोताना आत्मा
 नें संकटमां नांखेके; मनमां एवुं के, आपणी व
 रोवर विजो पण विपत्तीमां पडे तो सारु एवा
 लोक पैसो खरचीनें विपत्तीमां पडेके; ते करतां
 चार भला माणसनें तेडीनें तेमनी पासे तटो कां
 न चुकवावीये, कह्युंके के, जो माणस नीतीवाजे
 अनें भक्तिमान् एवा होय तो, तेनें सवार्ण देखाड
 नारानुं शुं कामके; थोडुं खानारानें बैद्यनुं काम
 पडनार नहीं; जे न्याय मार्ग चालेके अनें प्रामा
 णिक पणं केहेवरावेके तेचनें परस्परमां कांई
 बांधो पडे तो, ते बांधो पोताने मेळे एकादा
 चायितनी उपर नांखीनें ते कहे ते सांभळे तो ते
 नें अशालतना वकीलनुं काम पडनार नहीं. चा
 यितनी पण जहां तटो चुके नहीं एवी एकादी
 बातके तो, जे धर्मशास्त्र जाणेके, भला अनें जे हा
 हायणमां प्रसिद्धके, एवा एकादानें ते बात सम
 जावीनें तेना कक्षा प्रमाणे चले ए योग्यके. ते

मनें पण जे ठेकाणे सचज्ञण पडे नहीं एवी संदेह
 युक्त बात होय त्यांहां तोडजोड काहाडीनें सांडे
 सांडे तटो चुकव्यामां सांके.

वात १५९

उंदरनी सभा

एक बसत सघळा उंदर पोतानी मंडळी मेळ
 बीनें विघ्न करवा लाग्या के, बलाडीने आपण
 नें भो घणोके साटे, तेथी आपणो जीव राखवा
 नी सारी युक्ति शी करवी? एवा विचारमां नाना
 प्रकारनी कल्पनाओ नोकळीथो अनें घणी हा ना
 थयी, ते बसत एक जवान उंदर आगळ आवीनें
 तेणे घणुं पांडित्य कर्णुं केलीवारे ए सिद्ध कर्णुं के
 एमां एकज युक्तिके जे बलाडीनें गळे घंटडी बां
 थवी एटले ते लगार हाले के आपण सावध थ
 ईनें पोतपोताना दरमां नाशी जईये, ते सांभळी

नें सघळा उंदरोये वाहवा: सारी युक्ति काहाडी
 एम कहीनें माथां हलाव्यां, अने तेमांथी केटला
 क उंदर केहेवा लाग्या के, आ उंदरनें सर्वनी पा
 सेथी एक आवरुपत्र आपवुं योग्यके, त्यांहां एक
 डाहायो घरडो उंदर हतो ते ते सघळुं सांभळी
 नें उभो थडनें केहेके भाईयो, कल्पना तो घणी
 सारी काहाडीके, अने तेनो काहाडनार पण वणो
 डाहायोके खरो, एमां काई संदेह नथी, पण ए
 कल्पना करनारना मुखकी द्वारे एटलं हजुं स
 मजवुं जोईयेहीये जे, ते बलाडीनें गळे घंटडी वी
 म बांधवी, अने कियो उंदर ते काम करणे एट
 लुं ऊं जाणुं त्यांहां सुधी तमे तेनें आवरुपत्र आ
 पणो नहीं. ते सांभळीनें सघळा उंदर ते जवान
 उंदरनें हभा.

सार

झोये बोलवाने तो घणी वातो सेहेलीयोके प
 ण ते करवा मांडीये त्वारे खबर पडे के करवी

घणी

घणी कटणके ए नाटे जे पुरुष एकारि युक्ति के
 हेवाने आगळ थायके पण तेणे ते काम करीये ए
 समजावी देखाव्याविना तेनें सेवाशी आपोये नहीं.

बात १५२

सिंह गधेडो अने शियाळ

एक वखत सिंह गधेडो अने शियाळ ए चणो
 ना करार थयो के, आपण वृगया रमवा जईये
 अने जे मळे ते वेहेची लेईये, पक्षी तेमखे एक पु
 छ सावर मार्या; तेना भाग करवाने सिंहे गधेडा
 मं कहुं, तेउपरथी गधेडे चण भाग बरोबर कर
 तावेतज सिंहेनें रीस चढीनें तेणे एक क्षणवा
 रमां गधेडानां आंतरडां बाहेर काहाव्यां; पक्षी
 सिंहे ते काम शियाळनें कहुं त्वारे, शियाळ डा
 हायोज ते तेमानो एक न्हानो कडको तोडी खे
 ईनें सिंहेनें केहेके राजाधिराज, द्वारे तो आड

खुं

सुं घणुंके, अनें रह्युं ते सघळुं तसे अंगीकार क
रो. ते जोईनें सिंहे घणो प्रसन्न थयो अनें तेनें
पुकेके अरे तनें आ राजनीति कोणे शीलवो, ते
बोल्हो महाराज खरंज पुळ्ळो तो आ वातसां तो
द्वारो गुरु आ सामोळे ते गधेडोज.

सार

जे पुरुष मन देईनें शीखांमण लेवा सांडशे ते
नें लोकोना आचरणनां फळ जोईनें घणी वातो
समजायानां आवणे. पूर्वकाळनां साणसेनी वा
तो अनें ह्मणांजे धायके ते वेसुं समन कर्थायी
आपणी चालसां सर्व प्रकारनां दृष्टांत मळशे; अ
नें तेसांधी घणुं साहं अशे. विजो कोई पूरसां
तणातो होय ते जोईनें, तेनुं तणावुं आपणो व
द्वार करेके, एन विजानें टेश वागो जोईनें आप
ण संभाळीनें चाळीयेछीये. साटे जे पुरुष एवा प
दार्धनांसांधी गुणदोष लेके तेनें कोई वखत क्य
म द्वाजवुं केवुं करवुं आपणायी छोटे लक्षवा व

रोवरीनो

रोवरीनो अथवा आपणो हेडेनो कोई होय तो ते
तोसाथे क्यम बोल्हवुं क्यम चालवुं एसां काई सं
देह पडे नहीं.

वात १५२

घरडो सिंहे

कोई एक घरडो सिंहे मरवा पड्यो ते सांभळी
नें पूर्वे सिंहे जेनें जेनें दुःख दीधुं हतुं ते सघळां
यग्र पोतपोतानुं बेर लेवानें तेनी पासे आब्बां;
भुडे प्रोतानी डाहाड घशीनें तेना पेटसां घोची,
जेवी विजळीनी शळी, वळरे तेनें शींगडां मारीनें
लोही काहासां. ते जोईनें गधेडे पण आगळ ज
ईनें शाहला पण उपाडीनें सिंहेना छोडाउपर ला
तो मरीयो, द्वारे ते द्वारो सिंहे प्राण मुकती
वखत बोल्हो, अरे परमेश्वर आ शुं दुःख, हरे व

३३

१०

रा अपने पराक्रमी समोपण तिरस्कार सज्ज न
हीं ते ऊँ, आज आवा नीचना हाथना मार स
ऊँ ते करतां अपने हजार मृत्युनुं दुःख कठण ला
गंतुं नथी.

सार

आपणनें प्राणिमात्र माने अपने दुःख न दे एवी
इच्छा जेनें होय तेणे लोकानुं सह करवुं. अमर्थ
कोई कोईनें मानतुं नथी, ए माटे जेनें छोटापण
मेळववुं होय, अपने ते वंशपरंपरासुधी चलाव
वुं होय, तो तेणे स्वार्थे चालवुं, पक्षी तेनें को
ईपण दुःखदायक धतार नहीं; अपने संकटनी बख
त तेनें बेरी नजरे पडे नहीं. जाहां जुए त्याहां सु
हाय करनारा अपने मित्रज नजरे पडये.

२२२२२

वात १५४

डोसो अपने तेनां होकरां

एक डोसाने पांच होकरां हतां, ते मांहेमां
हे लडतां माटे बापे तेमनें धमकाव्यां, सामादि

भेदे

भेदे करीनेपण समजाव्यां, पण ते सघळुं व्यर्थ न
थुं. त्वारे हेलीवारे तेणे आ युक्ति करी जे, ते
होकरांनें पोताने सामे बोलावोनें एक लाकडी
घोनी भारी अणार्थी; अपने एक एक होकराने क
ह्युं के तारासां जेटलुं जोर होय तेटलुं करीनें
आ भारी अपने भागी आप. पक्षी तेमणे सघळां
थे एके एके घणुं जोर कर्युं पण भारीमांती ला
कडीयो एक एकनें आश्रये हतीयो ते कोईयो भ
गाईयो नहीं. पक्षी डोसे तेज भारी होडीमांती
नें ते मांहेनी एक एक लाकडी एक एकना हा
थमां आपी, अपने प्रथमनी पेठे भागवानुं कह्युं, त्वा
रे तेमणे ते सघळी लाकडीयो एक क्षणमां भागी
नांलीयो. पक्षी बाप तेमनें केहेके होकरांयो आ
जोयुंनां एकानुं जोर? तमे एमज स्नेहे करीनें ए
क एकनो आश्रय राखीनें रेहेशो तो, तमनें उप
द्रव करवाने इंदनपण सामर्थ्य चालनार नहीं;
अने तेज स्नेहने आश्रय एकवार कुट्यो तो पक्षी
कोई एक रांडीरांड आवीनें तमनें एक क्षणमां
उपद्रव करी सकये.

सार

सार

सर्वदा आपणुं सारुं थाय एवं जो मनमां होय तो माणसाये अरसरस एको, अने भाईबंधाई, ए उपर नजर राखवी. जे राज्यमां अथवा कुटुंबमां जेटलो एको आहो होय, अने टुकडीयो घणी होय, ते राज्य अने कुटुंब घणुं नबळुं अने शत्रूये जीतवा योग्य थायके कह्युं जे, मांहा मांहे लडाईं पोताना नाशनुं कारणके. एमाटे राज्यमां, नातमां, कुटुंबमां, मंडळीमां, अथवा जाहां जाहां चार एकठा यईने एकादुं काम करवा मां डीये तेमां, लडाईं, द्वेष, पेटो एटले जाणवुं जे विनाश काळ पासेज आयो. जे एक माना पेट मांथी नोकच्या तेगणे तो एक एके स्नेह राखवो, एक एकनुं सारुं करवुं, ए तो सेहेज जोईये. को ईना कह्यावी करवुं एवं नथी. दुःखमां भानीयो होय एटले दुःख हलकुं थायके, अने सुख थायके. ए माटे जेनें जगतमां मित्र नथी अथवा छेपण बोडाके तो ते नित्य विहीतो रेहेके. शमाटे तेना

मनमां

मनमां पोतानी निर्बळतानी चिंता होयके, अने ते मा मनमां एवं आवेके जे, हर कोईनेहाये ह्या रो नाम थयी सकरे.



वात १५५

डोशी अने तेनी लुंडीयो

एक डोशीनी लुंडीयो हतीयो तेमनें ते नित्ये कुकडां बोले ते वखत उठाडीनें कामे वळगाडे. पक्षी कोई एक दिवस ते लुंडीयोये विचार करीये के आ दुष्ट कुकडा आपणी मिठी उंठ सेहेलावे हे, माटे, एनें सारी नांखीये एटले आपणनें डोशी जो उपद्रव नहीं थाय. पक्षी तेप्रमाणे करीये. अने मनमां धारुं जे, हवे अजुवाळुं थतासुधी डोशी आपणनें उठाडनारी नथी. डोशीये ते सघळुं जाणुं, पक्षी लुंडीबोनें शिक्षा थवासारु डोशी तेमनें ते दिवसथी मध्य राते उठाडवा लागी.

सार

सार

कोई एक काम करता पेहेलां तेना परिणाम मो विचार करवो; नहीं तो सुखनें गाटे जे उद्योग करीये ते दुःखनुं देकाणुं थाय.



बात १५६

मोर अनें कागडे

आपणाउपर राजा करवो, माटे सर्व पक्षी एक दिवस, एकठां थयां हतां. तेमां जेरे आगळ आवीनें पोतानां सोनेरी पोंछां उंचां करीनें तेनी शोभा जोवानां सर्वनां नेत्र लगाव्यां, ते बखत घणाक पक्षीयोये तेनें राजा करवानें हा कही; अनें तेनां घणां वखाण करीनें संतोषथी पांखो उचीयो करीथो. आगळ एवं चणवार करीनें तेनें राजपदवी उपर थापनार ते बखत, कागडे आगळ आवीनें बोलके. राजाधिराज तमारा दासमा दासनें एक शंका थयीके ते जो आपणी आज्ञा थाय तो बोलुं. मोर केहे सुखे बोल भाई. काग

डे

डो कहेके महाराज, अछे तमनें राजा करीनें अछारा प्राण तमारे स्वाधीन कर्या; हवे अछारे सघळी वातनो भहंसी तमाराउपर के, पण, जो कदाशनें गहड, गिध, अथवा बाज, ए अछारो गरीब नो घात करवा आवशे, तो तने केयोरीतीये तेनें जीतशो? तेडलुं कहीनें अछारा भयनुं निवारण करो. ए अश्रु सर्व मंडळीये सांभळतां वातज तेमणे विचार करीनें कह्युं के वात खरी; आपणुं रक्षण था नाजुक शरीरवाळाथी थवानुं नथी; माटे था राजा उपयोगी नथी.

सार

कोई मंडळीये पोतानो मुख्य करवो तो, तेनी उपरनी शोभा जोईनें भुलीनें करवो नहीं. सर्वनुं साहं करवामां जेना गुण होय, अनें सामर्थ्य होय, अनें जे शाहाणो, चतुर, होय तेनें करवो, तो तेनें लोक करता नथी अनें नरी श्रीमंताई उपर नजर राखीनें मूर्खनुं अनुसरण करेके; माटेज ते सांथी घणोक वातानो बगाड थायके,

बात

बात १५७

पोपट अने पांजरुं

कोई एक छोटा पुरुषनीपासे पोपट हतो ते
नें तेणे नित्य सारा पदार्थ खवरावीनें एक घणा
मूलना पांजरामां पाव्यो, ते पांजरुं तेणे जाण
मां एक झाडनें हेठे आरस पाहाणना चोतरो क
रीनें नीउपर मेहेल्युं हतुं; मनमां एवं जे, ए पोप
ट उज्हाळामां उघाडे ठेकाणे वा खाईनें सुख पा
से, ते घरधणी अथवा घरनां माणस ते पोपटनी
पासे जाय त्यारे तेनी साथे सीढे शब्दे बोले, ते
मां पीछां विखराय ते घरधणीयाणी पोताना को
मळ हाथ तेनीउपर फेरवीनें ठोक करे. एवा घ
णा सुखमां रेहेतो तोपण ते पोपट नित्य मनमां
विमासतो हतो के, हे परमेश्वर विजां पक्षि अर
ण्यमां कुटां रहीं झाडोनां डाळांउपर स्वहंद बे
सेके, ते छोटां भाग्यवान् जं तेसनी पेठे कुटो क्या
रे फरीश? पक्षी कोई एक दिवस चाकरनें हाथे

पांजरानुं

पांजरानुं वारणुं उघाडुं रहुं ते ते पोपटनें लाग
पाव्यो एटले पांजरामांथी नोकळीनें पासेना अर
ण्यमां उडी गयो; मनमां एवं के बाकीनुं आयुष्य त्यां
हां सुखे करीनें पुरुं करीश, पण अरण्यमां जईनें
नानाप्रकारना नवा नवा संकटमां मात्र पड्यो.
बचारो ते प्रथम जं दुःखी कुं एवं मनमां मात्र
जाणतो हतो, ते हवे खराज दुःखमां पड्यो. विजां
पक्षि तेनें चांचो मारवा लाग्यां; तेनी जे मनुष्य
वाणी सांभळीनें लोकोनें संतोष थतो हतो, तेज
वाणी सांभळीनें पक्षीजात तेनें वक्तुं दुःख देवा ला
ग्या, सारुं सारुं अन्न खातो तेनें हवे उद्योग करी
नें पेट भरवुं, तेनी तो, तेनें अभ्यास नहीं माटे
भुखे मरवा लाग्यो. वा वरसातना उपद्रवमांथी
रक्षण घाय एवं घर नहीं. वरसाते करीनें पां
खो पळ्ळे, अनें टाहाडे टुठवे, ए प्रकारनुं दुःख
तेना शरीरनी प्रकृती नाजुक माटे तेथी सेहेवायुं
नहीं. केलीवारे ते दुःख पामी पामीनें मरती व
खत पोताना मनमां कोहेवा लाग्यो, अरे बचारा

पोपट,

घोपट, जो फरीनें एक वार ते पांजह तनें मळे
तो तं बाहेर फारवानी वात कोई दिवस न करे.
पण ते हवे कांथी मळे? एम कहीनें तेणे आंख्यो
सोचियो.

सार

सर्व वातो अनुकूल सते जेनें स्वतंत्रपणे भटक
वानं मन थाय तेणे आ वातमांथी शिक्षा लेवी
के, जो स्वतंत्रपण विपत्ताये युक्तके तो ते शा काम
नुं. नावडीयावना नाव समुद्रमां नभतुं नथी,
सेनाधिपवना सेना नभती नथी. तेमज स्वियो अ
षवा होकरां जेनें पोतानी मळे नभवानुं सानर्थ्य
नथी तेणे ऊं पराधीनकुं एवं जाणीनें खेद आणवो
नहीं. न होय ते दुःख पेश करीनें पोताना आ
त्वाने संकटमां कां नांखीये?



वात १५८

चकली अनें विजां पक्षी

एक कण्ठी खेतरमां भोंडो वावतो हतो ते च
कलीना ध्यानमां हतुं, ते विजां पक्षीनें केहेके, अरे,
तमे

तमे सघळां अनुकूल थाओ तो आपण सर्व मळी
नें आ वी खेतरनें एना नाश करीये; शमाटे जे
भोंडोनां दोरडां थायके, पारधी तेनी जाळ करे
हे, तेथी आपणी जातानो नाश थायके ते तेनुं वो
लपुं कोई पक्षीये गगमायुं नहीं; पक्षी भोंडोनां श
णगा फुट्या, त्यारे पण तेणे तेमनें कहुं, जुओ,
जो आपण सघळां आ खेतरमां तुटी पडोये तो,
हजु उपाय के ते सांभळीनें ते सघळांथे तेनुं उप
हास्य कर्युं, अनें केहेवा लाग्या के आ मुखे घुनें
आगळनुं भावी सुजेके एवं आपणनें जणवेके के
शुं? पक्षी पोतानुं कहुं व्यर्थ गयुं जाणनें चकलीये
विचार कर्यो के, आवा अविचारीना संगमां रेहे
बुं हवे योग्य नथी, एवं कहीनें तेणे ते दिवसथी
पक्षीनें समागम मुखो अनें माणसोमां वास कर्यो.

सार

आपण माणस होये साटे जेमां सघळां माणसो
नं सारं थाय ते करवुं, ए आपणो स्वाभाविक ध
मके, तेमांपण आपणा ओळखीता, सना, संबधी,
एमनुं

एमनुं

एतनुं सारं करुं एतो आवशकके; विजुं काई
 आपणधी न घाय तो सारी बुद्धि पण आपोये; ए
 क वार न सांभळे तो वे वार, वण वार, कही जो
 ईये; एटले आपणनें जेटलुं घटतुं हतुं तेटलुं आ
 पणे कर्युं; पक्षी ते न मानोनें काई एकाश बंधन
 मां आवे तो ते आवो; तेनो आपणे साधे दोष न
 हों. पक्षी एषा अबिवेकीनो संग करीनें तेनो
 साधे आपण आपणो नाइ करीये ते करतां तेन
 जो संगज मेहेलीये ए युक्तके; जामाटे जे, ते आ
 पणुं कहुं सांभळता नथी माटे तेसनुं खोटुं कर
 वुं ए जेव डोक नहीं, तेस तेसनेो संग करीनें ते
 पनी साधे आपण बुडोये ए पण योग्य नहीं.



बात १५६

जवान पुरुष अनें बलाडी

कोइ एक जवान पुरुष एक बलाडीनी साधे नि
 त्य रमतो; ते घणो सुंदर हती, तेउपर ते पुरुष
 नुं हेत घणुं वयुं; ते एटलुं जे, केलीवारे तेनीउप

र

र सुकाल यईनें रात दाहाडो झरवा लाग्यो. पक्षी
 ते दु.ख मटाडवासार तेणे रति देवीनी आरधना
 करी; एटले देवीये कृपा करीनें ते बलाडीनी स्व
 रूपवती स्त्री करी. तेनें जोईनें ते पुरुषनेो हर्ष
 ब्रह्मांडमां साध नहीं. पक्षी तेणे तेज दिवसे ते
 मोसाये लग्न कर्युं. राते वैजणां सुवानें चोरडी
 मां गयां त्यांहां, तेणोये कहींक उंदरनेो शब्द सां
 भळ्यो; ते सांभळतांज ते बखत पोताना वरनें नु
 कीनें उंदरनी पक्षबाडे दोडी; ते जोईनें रतीनें री
 स चडी के, आ झारो उत्सव, जेनें छोटा छोटा
 लोक मान देके, तेनो एणोये अनादर कर्यो ना
 टे, ए नीचके ह्ये एनें माणस करी ते बाहेरथी ना
 च वधी पण अंतःकरणधी बलाडीजके माटे एनो
 आहती अनें कृति ए अरसरस मळतां नथी ते म
 ळे एवं करवुं. एम कहीनें देवीये तेनें जेवी ह
 ती तेवी करी.

सार

७०

जाणवोनी सारी अने छोटी रीतीने कारण जि
 ष्ठा अने संगति एहे खरां; पण घणुं करीने तेनें
 तेनो स्वभावज कारण हे. जो स्वभावजो ज गुण
 सारो होय तो, ते गुणनें बधाराय, पण ते मुक्तावो
 नें नवो गुण जाणवो ए घणुं कठिणहे. जो स्वभा
 व दरिद्रीहे अने तेनीपासे करोड रुपैयानो सत्ता
 हे तोपण, ते पोताना सघळा व्यवहारमां दरि
 द्रीनां चिन्हज देखाडये. प्रकृतये तेनें दरिद्र भो
 गववासार प्रेश कर्याहे तेनो अदृष्टे हाव झाखो,
 तोपण तेनो स्वभावगुण जाय नहीं. स्वभावे क
 रीनें जे मूर्खहे तेनें द्रव्यादि संपत्तीची शाहाणो क
 रो सकतो नथी. स्वभावची मूर्खहे तेनें द्रव्यनी
 गरज सार लोक भजो, पण ते गुणे छोटे या
 य नहीं.

मधमाख्यो माख्यो अने भनरी

कौटली एक माख्यो मधमाख्योना मधपुडानां
 आबोनें केहेवा लागीथो जे, या मध अक्षार हे,
 पक्षी जे जणांचोनें अरसरस लडार्द घईनें जे पक्ष
 नोयो, भनरीपासे व्याध करावा गयो. त्यारे
 भनरीये कक्षुं जो तने अदालतनी रीते वाद क
 रशो तो तननें खरच घणुं यशे; अने फडयो पण
 वेहेलो यशे नहीं, माटे, तने उभयतां ह्यारां जे
 हीको, ऊं तमारुं सारुं इच्छुंकुं, माटे तननें कऊं
 कुं जे तने जे मळीनें क्षुनें तगारी हकीगत लखी
 जापो; एउले ऊं तमारुं सघळुं मनसां जाणीनें जे
 नीति हशे ते कहोर. ते सांभळीनें जे पक्षनीयो
 राजी थयीयो; अने हकीगत लखी जापो. पक्षी ते
 भनरीये तेमनी लडार्दने वाद मनसां जाणीनें ते
 ननें कक्षुं सांभळोको, तने जे बरोबर जणांचोको
 माटे, खरा होयानो न्याय करवो क्षुनें लगार क

बिण दीसेके माटे, माख्यो तमे एवं करो के एक
खाली ठेकाणुं ल्यो, अने मधमाख्यो एक तमे प
ण ल्यो, अने त्यांहां मध करीने वे जणांचो ह्या
रो पासो लावो, पळी ऊं ते वे मधनो खाद रंग
जोर्डने आ मधपूडानुं मध कोनु ते कहोय मध
माख्योये ते वातनी तरतज हा कहा अने माख्यो
चे आंऊं करवा मांछुं ते जोर्डने भवरीये माख्यो
ने कहां जे तमे जुडवोवो अने मध माख्यो सा
चीयोके.

सार

जे जुडोके ते पोतानी जुडाई जे ठेकाणे उधा
डी पडे त्यांहां आडुं आवळुं अणुं बोलीने कजीयो
लांबो चलावोने भला माणसने अमयो दुःखी करे.
मनसां एवं के कजीयो चुकवनारनी नजर चुकी
ने आपणुं कान थयुं, तो थयुं, न थयुं तो नहीं.
अने जे बाचोके ते कशी वातसां वांकुं बोले नहीं.

वात

वात १६१

चोर अने कुकडो

एक घरसां राते चोर वेडा त्यांहां तेमने चो
रवा जेबुं कांई मव्युं नहीं, एक कुकडो मात्र ज
ह्यो; तेने खेईने मारवा मांडो ते बळते कुकडे
तेमनी घणी सुतो करी जे ज्यो ऊं लोकोने के
टलो कामनो कुं जे, ऊं पराडसां बोलीने सर्व
लोकोने पोत पोताने कामे वळगाडुंकुं, माटे तने
ह्यने मारयो नहीं. चोर बोल्या, अरे सुचा, एठ
सा माटेज अहो तारुं गळुं कापनार जे, तुं वो
लीने लोकोने सावधान करुं तेषो अह्याराथी चो
रो सुखे थती नथी.

सार

जे गुणे करीने भला लोक आपणने सारा के
हेके, तेज आपणो गुण, दुष्ट लोकोने छोडे दुर्गु
ण थाचके.

वात

बात १६२

बलाडो जेने जमवाने बोलाव्यो हतो

एक ग्रहस्थे एक छोटा माणसने जमवाने ते
छो तेने माटे छोटे समारंभ कर्वाते, ते जोईने
घरने बलाडो मनमां विचार करवा लाग्यो के,
ऊं घणा दिवस घया भाईबंधने जमवाते डनार ह
तो ते, आज सारो अवसर मज्योके, पक्षी तेणेप
ण पोताना इष्टमिचने नोतरुं दीधुं, पक्षी ते नि
च त्यांहां आव्यो अने पेहेलो रसोई आगळ गयो,
त्यांहां कै कै जातना पदार्थ रांधता हता ते जोई
ने मनमां केठेके, आ पदार्थ सहज मळवा दुर्लभ,
पण भाईबंधना योग्यो आज हाने मळये, ते हवे
ऊं एवं खाईश जे, आठ दाहाडानी निरांत करी
श. एवो मनसुवो करीने पुंछडो हलावेके अने
छो मळमळावेके एवामां तेने एक रांधनारि दी
डो, तेणे हळवे रहीने पळवाडेथी आवीने तीनी
पाकली बे टांगडोथी झालीने तेने खडकाने बाहे
र नांखी दीधो; त्यांहां हेवे पथर हता तेउपर अ

घडाईने

घडाईने बलाडानुं सवळुं शरीर टीचार्द गयुं, ते
आरडतो आरडतो त्यांहांथी नासवा लाग्यो तेने
विजां बलडां मज्यां तेनणे पुञुं अरे तमने आज
मिजमानीमां तेझा हता तेना शा समाचार के?
ते बोळ्यो ते समाचारनुं शुं वर्णनकरुं एवी मिज
मानी जन्मांतरणां पण हाने थयी नहोती पण ते
मां एक शुं थयुंजे लागारेक कसुवो वतो लोधा
नां आव्यो तेनुं घेन द्युं तेथी ऊं ते घरमांहेथी
बाहेर क्यम नीसरी आव्यो तीनी शुद्धी हाने रही
नहीं.

सार

घरधणीना ओळखाणवना अने तेणे तेझावि
ना असथा विजाने विश्वासे कहीं जवुं ते आ बला
डानो पेटे खेदनुं डेकाणुं याय, त्यांहां अप्रतिष्ठा
याय, ते पक्षी छोटी युक्तीचे करीने टांकवी पडे.

बात

बात १६३

रबारी बेपारी यथो हतो

एक रबारी एक दिवस समुद्रमें कांठे बकरां चारतो हतो, ते बकरांनिं चारो वळगाडीनें पोते एक शिळाउपर टाहाडो, अनें धोमो, सुंदर वा खावा बेडो ते वखत वा वंध यथो एटले समुद्रनं पाणि हालतुं वंध यथं, ते जोर्डनें तेनें आनंद यथो; अनें एवो विचार यथो जे, ऊं बेपारी थाउं, आ अहींबां बकरां चारतो नकामो बेशी रऊं ऊं, तेकरतां एक न्हामुं सरखुं नावडुं वेचाथी लेईनें दरीयो खेडीश, तो केटलो सुखी यईश. दे शावर माल लेई जाऊं तो छाने केटलो लाभ था य, इथ अनें छोटाई मेळववानो आ रस्तो के बो सारोके. एवो विचार करीनें घेर जोर्डनें पोतानां सघळां बकरां वेच्यां, विजुं जे घरमां हतुं ते सघळुं वेचीनें तेनुं एक नाव लीधुं, तेमां माल अनें उताव माणख भरीनें नाव हाकीनें लगार था

बो

घो गघो, एटलामां वादळां थयां, छोटा छोटा मोजा आववा लाग्या, दिशाओ खावा धाईयो, ना वडु बुडवा लाग्युं; ते जोर्डनें भार ओको करवा साव माल सघळा पाणीमां नांख्यो एटले तरतज नावडुं वायरे धकेसाईनें एक पघराये अथडायुं, ते, तेना कडके कडका यईरथा, नावडुं तथा उताव सघळां बुच्यां, रबारीमात्र बुडतां बुडतां रह्यो ते महाकष्टे करीनें तीरे आय्यो. पक्षो तेणे जेनें बकरां वेचाथी आय्यां हतां तेनें घेर चाकर रेहे घाने बयो, तेणे तेनें तेज बकरां चारवाने राख्यो, त्यारे ते फारीथी एक दिवस ते समुद्रनें कांठे ते ज शिळाउपर बेडो हतो ते समुद्रनें पूर्ववत् निश्चळ जोर्डनें केहेके, अरे टग, हवे फारीथी तुं छाने ललखावाने जअछ ते हवे तारो अम मिथ्याहे, ऊं तनें जोर्डनें एक वार भुल्यो ते अत्यंत दरिद्री यथोऊं अनें एक वार अनुभव लीधो तेणे छाने शाहाणां कर्यो माटे ऊं हवे कोई दिवस तारो विश्वास करनार नहीं.

सार

सार

बेचाथी शाहाणपण सारुं, एवं केहेवत के ए माटे, जे पुरुष एक वार पोते दुःख भोगवने जे वस्तुना अनुभव लेईने टाहाडो थयो, ते फारीथो ते वस्तुनी इच्छा करतो नथो. पोतानी जे अवस्थाके तेमांज प्रसन्न रहेके.



बात १६४

जवान होकरो अने सिहनं चित्र

एक डोसो कोव्याधीश हतो, तेने एकज एक होकरो हतो, तेउपर तेने अत्यंत हेत हतं, एवा ते होकराने शकार रमवानं असन लाग्यं, ते जो ईने डोसो केहेके, अरे परमेश्वर, ह्यारा होकरा नी गत केवी थसे? एम नित्य ते चिंता करे; एक दिवस राते तेने शमणं आच जे, बनमां होकरा ने सिंहे मारीनांख्यो के, पकी तेने एवी चिंता थयो

जे

जे रले जो ए शमणं खरं थतं; ए बिहीके शमणं होटं करवाने डोसे एक छोटा घर करीने तेने प हवाडे फरतो कोट करीने तेमां होकराने घालो मेहेख्यो. ते घरमां होकरानं मन रमाडवाने तेणे सर्व वस्तुनी अनुकूलता करी; नाना प्रकारनां चित्र चितराव्यां, अने जे जे जनावर होकराने वा हासां हतां तेनां चित्रामण भीतउपर कहडाव्यां, तेमां एक सिहनं चित्रपण हतं; एक दिवस होकरो सिहनं चित्र जोईने होकराने घणी रीस चढी कां जे, शमणं खरं पडे एवं जाणीने वापे छाने घालो मेहेख्योके, ते आ सिहनं माटे; एवं कहीने ते आंख्यो काहाडीने ते चित्रने केहेके अरे दुष्ट; ऊं आ बंदोखानामां दुःख भोगवं कुं ए तारे माटे, ह्यारीपासे जो आ वखत तरवार होत तो, तारा पे टमां घोचत पण शं करं रे एम कहीने दांत पी शीने रीसमां तेणे ते चित्रमांना सिहनो ह्यतीमां मुंकी मारी त्यांहां भीतमां एक खीखो हतो ते हाथमां पेशी गयो, अने तेना वा पाकीने तेना दुःखथाज ते होकरो मरण पाख्यो. ए प्रमाणे

बापे

बापे शमणं खोटुं करवाने जे उपाय कर्यो ते नि
ध्या यईने यनार हतुं ते यद्युज.

सार

यवानुं होय ते मटमार नहींज. पक्षी चिंता क
रीने अमथा जीवने खेदमां कां नांखीये.



बात १६५

कुकडी अने शियाळ

एक शियाळ एक जाळामां पेशीने कांडे खावा
नुं मेळववाने उंचेनीचे जोतो हतो; तेणे त्यांचां ए
क कुकडी दीठी, ते जाळामां उंचीवेठी हतो ते
नीपासे शियाळेजवाय एवं हतुं नहीं, त्यारे ते
णे कुकडीनां बखाण करवा मांड्यां अने केहेके, अ
रे, बेहेन, तारी शी खबर के तने घणो करार
नथी घरमांज सुई रेहेके; एवं ह्ये सांभव्य ते ब
सतथी बेहेन तने खरंज कऊंजे ह्ये एवि धि
ता थयी के रात अने दाहाडे उंच आवती नथी;

ना

माटे खरंज केहे हवे तुं केवोकं, अने लगार पा
से तो आव, ह्ये तारी नाड जोबादे; एवं ते वा
खेके, वझे वझे तेनां बखाण करतो जायके, ते
सांभळीने जहां वेठी हती त्यांहांथोज कुकडी जवा
पटेके. खरंज भाई ते सांभव्य ते खरंज. एवो मं
दबाड ह्ये कोई दिवस आथ्या नहोतो, ऊं ह
मणा तारीपासे आवी होत, पण शुं करुं वैथे ह्ये
ने कहुंजे जे तुं कोईने पासे आववा देईश न
हीं, अने कोईपासे जईश नहीं, माटे भाई मज
थी हेवे अवातुं नथी, हवे तुं आ बलत जा
हमणां तो ऊं अशक्त एवी कुं जे तारीपासे चाली
ने आवुं तो ह्यारो जीव तरतज नीकळी जाय.

सार

बखाण करनारा जेटला तेटला जुटा जाणवा.
माटे, ते सर्वना शत्रु एवं सलजोनें सघळाये, तेस
नीसाथे तेभ्रमाणे चालवुं. शामाटे जे तेसना मा

थावी

याची बोलवार्ता पार नजर पोहोचाडोनें, तेना बं
धनमां आवनार नही एवा चतुर पुरुष या लोका
मां थोडा, अनें आवनारा घणा.



वात १६६

देडकुं अनें उंदर

एक दिवस उंदर अनें देडकुं एमनें नदीकांठा
ना धणीघणासार वरवाड थया, त्यांहां उंदर धू
र्तते घासनें ओठे रहीनें देडकानें मार मारे; दे
डको कुत्कारा मारवामां निपुण तेणे ते जोईनें अ
क्तीची उंदरनी साथे गांठ पाडी, अनें तेनें केहेके अ
रे पुरुष, आवो सामो हाथो हाथ आव, चोरनी घेठे
छपाईनें कां मारळ? पक्षी ते वे एक एकनें छेणां
देईनें हाथोहाथ मारामारी आया, अनें हसणां
एकएकनो जीव लेशे, एटलामां समळी आवो ते
ते वे जणांघोनें उचकीनें खेई गयी.

सार

चार

केहेवत के जे, बेना लडाईमां विजाने लाभ.
तेनुं कारण ए के जे, मनुष्य एकएकनो खार क
रवा लागे एटले, एकएकनां छिद्र काहाडे, ते,
हेधची जाणता नथी जे, विजो कोई आपणा बोल
वा उपरची अटकळ बांधीनें, आपणो घात कर
वाना उद्योगमां हशे. घणेक ठेकाणे एवं दीडा
मां आथुंके के, जे बल्लूमाटे लडेके ते बल्लूमां कां
ईं जीव नथी हेतो, फलागाने फलाणे हाथो ए
टला अभिमानसारुज तेमनें सामानो जीव लेवो
अथवा पोतानो आपवो एवं करवुं पडेके. एवी
लडाईनुं फळ ए जे जीव जाय, पराधीन थाय, दुःख
थामे, ए के.



वात १६७

नोळुवो अनें माणस

एक माणस नोळुवाने पकडीने तेनें मारी नांख
तेा हतो, ते वखत ते नोळुवे तेनी दीन बाणीचे
करीनें

करीमें प्रार्थना करी जे, भाई तू ह्यमें मारीश न
हीं, ऊं तारे कामनोकं, जो जे ऊं ऊं तो तारा
घरमां उंदरनो उपद्रव नथी, माणस केहेके खरी
बात तू जो ते ह्यारं काम मनदेईनें करतो हो
त तो ऊं तनें आ वखत जीवनें सुकीनें तारे
छोटो उपकार मानत, पण, उंदर ह्यारे खावा
पीवानी जनसो रेहेवा देता नहोता, ते उपद्रव ह्यार
रे हजु ताराधीपण तेवोनें तेवोज के, माटे, तारा
ते उपकार विजा कोईनें देखाड ह्यनें शेखाडीश न
हीं, एवं कहोनें तेजे तेनो जीव लीधो.

सार

जे काम आपणे आपणा स्वार्थमाटे कर्युं, ते
थी यद्यपि विजामें पण गुण थयो, तोपण ते ते
नाउपर उपकार कर्षो एत केहेवानुं नथो.

बात

बात १६८

चाकर अनें अणसमजु

कोई एक चाकरनो धणी, दिवस आयमती वे
छाये घेर आयो. तेहे उतावळुं जमवानुं कर;
एवो आझा चाकरनें करी, ते वखत घरमां देवता
महोतो ते माटे, ते चाकर पाडोशीना घरमांथी
दीवो करीनें उतावळो घेर आवतो हतो, तेनें र
स्तानां एक अणसमजु माणसे हाये झालीनें उ
भो राख्यो. अनें पुकेके, अरे, आ वखत तारे दी
वानुं शुं कामके, आ तू कोनें माटे क्यांहां लेई
जायके, ते ह्यनें कहीश? चाकर उत्तर करेके;
अरे, ऊं डाहाया माणसनें शोध करुंकुं, ते ह्यनें
हजु जडतो नथी, ते सांभळोनें अणसमजु लजवा
ईनें चालतो थयो.

सार

जेनुं मन कामनां अथवा विचारमां होय, तेनें
सजय बनानुं बोलावीनें खीजववो, ए अणसमजु
नुं लक्षण. एवा माणसनें समजु जे के ते माणस
मां गणता नथो.

७४

बात

शियाळ अने शाऊडी

एक शियाळ नदी उतरीनें पेल्ले पार गयं. त्यां हां भेखड पडीगयेली हती माटे शियाळची तेंउपर चढातुं न्हातुं. माटे, ते त्यांहां आणीमेर तेणी मेर फांफां मारीनें चढवाने लाग जातुं हतुं; एट लामां तेना माघाउपर माख्योना समुदाय आची नें वेढो, अने ते तेनु लोही पोवा लाग्यो; त्यांहां भेखडउपर एक शाऊडी हती ते तेनें केहेके, माई, हानें केहे तो ऊं या माख्योनें उडाडी नेहेलुं. तेनें ते जवाप देळे, वार्द, तें हानें छोटे उपका र कर्ची, पण, ह्यारे ते नथो करवुं, शामाटे जे, या माख्यो इमणां लोही पोनें तप्त यशे एटले घ छो उपद्रव नहीं करे; अने एनें जो तं उडाडी मे हेले तो, विजे धणे विजी मुखी माख्योना समुदाय आचीनें उपर वेसशे अनें ह्यारा मरीरमां एक लो होनुं टोपुं पण रेहेवा देशे नहीं.

राजानी पासेना केटलाक कारभारी लांचिया होयके, माटे जो आपण तेमनें वेगळा करवानो उपाय करीये तो, तेसां पण कांई फळ नथी. कां जे, तेनें ठेकाणे विजा जे आवशे तेपण तेवुज का म करशे. माटे जे हे तेज सारा; ते केटलेक दि वसे तप्त यथा पल्ली विजा नवा आवशे तेना सर छो घळो उपद्रव ते जुनाथी नहीं थाय.



कागडे अने साप

एक कागडे एक दिवस सापनें चांचनां झाल्यो, अने तेनें खानार, एटलामां सापे पण तरफडतां तरफडतां कागडानी डोको वचकुं भयुं; तेणे करो नें ते कागडानें झेर चडुं अने सरशे एवो थयो; तेवखत ते केहेके, अरे, ऊं विजानें मारीनें सुख भोगव मारो हतो ते हानें आ शिखा थची, ते चोगयज थची.

सार

परपीडा करनारानो कोई दिवसे नात्र थाव
ज. जेना आज निश्चय जे, पोतानो स्वार्थ धतो
होय तो विजाने कोटलु दुःख आयो, पण ते मन
मां आणे नहीं; तेनुं सारं कथय थाव.



वात १७१

ब्रह्मा अने उंउ

एक दिवस उंउटे ब्रह्मानी करगीनें स्तुति करी,
हे देव, जेवा बळद आदि खिर्दनें सर्व पशूओनें तें
शींगडां आप्यां के, तेवां हाने कां नधी आपतो?
के जेणे करीनें छं शत्रूथी छारा देहनुं रक्षण करुं;
अने केहेवा लाग्यो जे परमेश्वर एटली छारी वि
नती सांभळवीज. तेने ब्रह्मा उत्तर करेके, अरे
मूर्ख, तेनें ह्ये जे आप्यके ते विचार करीनेंज आ
प्यके; तेसां तारे संतोष राखवो योग्यके; ते न रा

खीन

खीनें ह्ये विजाने आप्यके ते आगळ करीनें तेवुं
भागळ; ते माटे तनें आ तारा धड पणानी शिक्षा
एटलीज कहके, तारा कान लांवाके ते टुंका
अशे, अनें तं आजथो कवाड बहीण.

सार

आ संसारमां परमेश्वरे जेनें जे नेमी आप्यके
ते योग्यके. ते फेरवीनें विजुं करवा सारु जे उ
द्योग करेके ते ओछी बुद्धीना मूर्ख जाणवा. एवा
पुरुषोभो उद्योगज धर्य जायके एम नथी, तो,
ते धर्य जायके, अनें उलटा दुःखो थायके.



वात १७२

सावरी अनें तेनां वच्चां

एक सावरी खेतरसां रेहेती हतो, ते खेतर पा
क्युं एटले तेनें चिंता थयो जे, छारां वच्चां वां
हो आवीनें उडवुं शीलता पेहेसां, जो खेतरवाळो

खेतर

खेतर कापवानें आवणे, तो कस घणे? पक्षी ते रोज चारो आणवा जाय त्यारे बघानें केहेतो जाय जे, झारी पळवाडे कोई कांई बोले, तो ते स घळं ऊं घेर आवुं एटले झानें केहेवुं. एक दिवस खेत रनो धणी खेतरमां आवीनें पोताना होकरानें केहेके, होकरा, ऊं जाणुंकुं के आ खेतर पाकां; अनें कापवानें योग्य घथं, माटे तं काले सवारमां जा, अनें आपणा दृष्टमित्र, पाडोशी, एतनें खेत रनी कापणीमां मदत करवासारु कही आव. ए वुं ते खेतरवाळे दीकरानें कहुं. ते सघळं बघां घे मा घेर आवी एटले कहुं. अनें सानो पळवा डे कलवलाट करीनें केहेवा लाग्यां के, मा हवे तं अहानें उतावळी अहींयांघो विजे ठेकाणे लोई जा. मा बोली बघां मिश्रित रोहो, कां के, खे तरना धणीये खेतर कापवानो भहंसा पाडोशी अनें दृष्टमित्र उपर राख्योई; तेथी ऊं पळुं जाणुंकुं जे, काले कापणी यती नथी. विजे दिवसे लाव रो जवा लागो त्यारे तेणीये बघानें पूर्वनेपडे क ही मेहेल्युं. तेउपरथो ते खेतरनो धणी शुं बोलेके

ते

ते सांभळवासारु बघां टांपतांज हतां, एटलानां, ते खेतरनो धणी आव्यो, अनें जेनें बोलाव्यां हतां तेनो वाट जोतो वेढो, पण कोई आव्युं नही, अनें तडको पण घयो, त्यारे ते होकरानें केहेके अरे, पाडोशी, दृष्टमित्र, ए उपर विन्वास राखवो कामनो नही, माटे तं हवे, एवं कर के, आप णा सगांती प्रार्थना करानें तेनें केहे; जे अहारे माटे तमे सवारमां वेहेलां जडोनें खेतरनी काप णीनो सहायतानें आवजो. ते सांभळीनें बघां घ णां विहीनां अनें मा आवी एटलेज तेमणे ते स साचार नानें कहुं; त्यारे ते बोली बघारे, एट हुंज जो के, तो, तमे विहीशो नही; शानाटे जे सगां, सगांती चिंता राखीनें तेमना कामनां पड शे ए निथ्या जाणजो, पण काले फरीघी ते शुं नो लेके ते मन राखीनें सांभळजो, अनें झानें केहेजो. विजे दाहाडे खेतरनो धणी घणी बारसुधी सगां आवनारांके एवं जाणीनें वाट जोतो वेढो, पण ते कोई आव्युं नही, पक्षी ते होकरानें केहेके कांई

चिंता

चिन्ता नथी, भिन्ना, काले तं सवारनां दातरडां सारां तैघार करी मेहेल्ल, आपण आपणे हाथेज कापोशुं. ए बर्तमान वाचांये मानें कहुं एटले ज ते वोली बचां हवे आपणे अहीयां रेहेवुं सा हं नथी, शाभाटे के जे माणस योतानां काम आ पण पोने करबामें नीकथो, ते घणुं करीनें ते कामनें पार पाडे. पळी तेणीये योतानां बचां त्यां हांथी ते बखत काहाडीनें विजे ठेकाणे मेहेल्यां, विजे दाहाडे खेतरो धगो अनें तेनो होकरो वे जणाये आधीनें खेतरो कापणी करी.

सार

जे काम योतानी मेळे करीसकथ एवके, ते काम करवानो भरसो सगां इष्टभिव उपर राखे वो नथी. जे पुरुष तेमनाउपर भरसो राखेके, तेमनें वे तरफथी खोट आवेके, एकतो मर्खजो पे ठे तेसनी वाट जोतां वेणी रेहेवुं, विजुं तेसणे के तर्था वास्ते घणो संताप पाववुं. ए करता योना मा कामनो मुखपणेथी योतानाउपर भरसो राखे

हे,

हे, तेनुं काम उतावळुं थई आवेके. करापिक न थई सकुं तो तेनाथी योतानं मन वाळी सका घके जे, ह्यो ह्यारी तरफथी उद्योग करवानां वाळ स कार्यु नथी, अनें कोईमें भरसे रछी नथी, एम करते घयुं नहीतो तेनो दोष ह्यारे नाथेनहीं.

वात १७३

कागडो अनें गाडइ

एक कागडो एक गाडराना बांसाउपर का, का, करतो बेडो हतो, तेनें गाडइ केहेके, अ रे दुःखदायक छानो क्यम रेहेतो नथी? कलबलाट कां करेके थरे जो ऊं वाच के कुतरो हात तो, तं ह्यनें आटलो उपद्रव करीसकत? कागडो केहे के, खरीवात कही, ऊं ते जाणीनेंज काहकुं, जे क र हे, अनें जे ह्यनें शिक्षा करीसके एवाके, तेमनें हांथडेपण ऊं उभो रेहेतो नथी जे तारासरखा अनाथ दोन के जेनो ह्यनें भो नथी तेमनेंज ऊं उपद्रव करकुं.

सा८

वार

घण करीने लोकोना लुभाव आ कामडाना जे
घो होयके, जेने उपद्रव करीयो ते शिक्षा पामे
तेने परकांथे ते रहेना नथी, अने जे प्रभाव रीज
हे तेमने पोडा करीने पोताना मनसां प्रसन्न या
थके. तेमनी समजण एटलोअ जे, जेने पोडा क
रियो पोताने शिक्षा थाय नही तेने पोडा कर
यो ज्याहां शिक्षा थाय त्याहां न करवी.

—००००—

वात १७४

कणवी अने अहड

कोई एक कणवी खेतरेगां हळ नांखीने खेडते
हते, तेगा हळने द्रव्यना चर अथडाये ते जो
ईने कणवीने घमो आमंद थयो. आंस्थीमां ह
र्षनां आंसु आघ्यां, ते बखत ते खेतरेने कोडेके अ
रे ह्यारा खेतरे, ते ह्यने ह्योदो उपकार करीं,

मज

मज दीनउपर ह्योदो दया करी, ते सांभळीने अह
एने रीस चढी अने ते माणसने रुपे कणवीना
ह्यो आगळ आवीने दोखवा लाग्दं, अरे, मूर्ख, त
जे अं कहाये? ते ह्यने सुकीने खेतरेना उपकार
लाव्यो, अने ह्यने संभार्येपण नही, अरे बळद,
आ तने मूर्ख एटखं द्रव्य ताहं नही एवं थईजा
त तो, आ तं ह्यारे नाजे रोवा वेसत, ते बखत
तुं विजा कोईना दोष केहेत वहीं.

वार

एकादा काम फाजमां आपणुं साहं थयं होय
तो, तेने संभारोये, जेने आपणुं खोटं थयं दोष
जेहेलीये.

वात १७५

कुकडं अने शियाळ

एक दिवस सवारमां एक शियाळ वाडामां दोरीना
फांसामां भरायो, ते एक कुकडो वेगळेथी जोईने,

ते

ते हल्ले तेनीवासि आबोने तेना ह्यो सामं जोवा
 लाम्या. तेने शिवाळ केहेके, भाई, जोचुं के ऊं
 केवा संकटमां पड्यो ते, अने ए सपजुं भाईरे ता
 रे माटे, कां जे, ऊं घेर जतो हतो एटलामां ता
 रो प्रब्ल कामे पड्यो, अने ह्येने एवं यचुं जे तने
 क्यारे मळुं, माटे उतावळो आवतो हतो तेमां
 आवुं यचुं हवे तं एवं कर जे एक पाळी खाव,
 अने आ दोरी काप, अने जो ए तजघी न शात्र
 तो आ झारा समाचार बोईनी आमळ कहीश
 नहीं, जांहां सुधी ऊं आ दोरी झारेदांते करीने क
 रजी नासुं अने कुटी जाजं. कुकडे ते सचळुं कब
 टनं जाणोने उतावळो जईने पेहेलां बाडाना घणी
 ने ते समाचार कह्या, ते दोडतो आब्यो, अने शि
 वाळ दोरी करडतो हतो एटलामां तेणे शिवाळ
 ने शिक्षा करी.

सार

दुष्टनीउपर उपकार करीये नहीं केहेणो के
 कोईनेपण संकटमां काममां कायीये एबो नीति

के

हे तो तेउपरयो घोरनेपण सहाय यचुं एवं थ
 ईजरे माटे ते करचुं नहीं तो दुष्टनेते दुष्टज स
 हाय याच अने घोरनेते घोरज याच पण बिजा
 ये यचुं नहीं.



वात १७६

एक खाली घोडो अने लादेलोगधेडो.

एक खाली घोडो अने एक भारे भरेलो गधेडो,
 ए वे मारगमां चालेके, अने तेमने धणी पकवा
 डियो तेमने हाकतो चाल्यो जायके, ते बलत ग
 धेडाने भार घणो ययो, अने ते खुंटणोये पडवा
 ना संधानमां आय्यो, तेबलत तेणे घोडानो घणी
 घणी प्रार्थना करी जे भाई, झारा वांसाउपरने
 थोडोक भार तं लीईने ह्येने सहाय या. जो ऊं
 प्राण जवाना संकटमां कुं, पण घोडो निर्दय दुष्ट
 तेणे ते कांई सांभय्यं नहीं. पक्षी ते गधेडाने अर्थ
 मार्गेज टेश वागी अने ते हेडे पड्यो, ते उठे नहीं,

तेबलत

७७

तेवखत तेना धणीचे तेना तंग डीलो कर्या, अने
विजापण घणा घणा उपाय कर्या, पण ते मरोगयो
ते क्यम उठे? पक्षी तेने धणीचे तेना उपरना भा
र अने तेने चामडुं उतारीने घोडानो पीठउपर
स्वायुं. ए प्रमाणे ते घोडे घोडा उबकार न क
र्या साडे पोते घणा अममां पद्या.

सार

आपण एकएकना काममां न आशीचे तो ते मां
बे जणाने तोटाके; झोणी नजरे जोताकां एकएक
ने सहाय घावडे साटेज या सृष्टीने व्यवहार चा
लेके. साटे ए बात ज्यांहां ज्यांहां यती नथो
त्यांहां सवळाओना स्वार्य बडेके.



बात १७७

शियाळ अने दीपडे

एक दीपडे गुफामां पोताने खावानुं साहित्य
भरीने निराते रेहेतो हतो, ते अटकळीने एक शि

याळ

याळ तेने मळवाने आबो, मजमां एवुं जे शुंके
ते आपणे प्रत्यक्ष जोर्डने लक्षमां आणोचे. दीपडे
तेने गुफामांभीज उत्तर कर्या जे भाई हमणां तो
तुं क्षमा करीने जा, ह्यारे शरीरे करार नथी.
शियाळ धूर्त तेने प्रथम संदेह हतो ज ते तेवखत
खरो थयो. पक्षी ते तरतज एक वकरां चारना
र रवारीपासे गयो, अने तेने ते सवळी बात क
हीने केहेके, तारे विजुं कांई काम नथो एक
कुतकुं मात्र लेर्डने चाल, अने दीपडे गुफामां सु
तो के तेना कपाळमां ते मार, एटले तारुं का
म थयुंज. पक्षी तेणे ते प्रमाणे कर्या, अने दीप
डाने प्राण लोथो. पक्षी ते दुष्ट शियाळ ते गुफा
मां रहीने दीपडानुं मेळवेलुं साहित्य पोते भोगववा
मांछुं, तेने घणा दिवस थया नहीं एटला मां तेज व
करां चारनारो एक दिवस ते मार्गे जतो हतो ते
णे शियाळने ते गुफामां जोर्डने तेनापण कपाळ
मां कुतकुं सारीने प्राण लोथो.

सार

सार

जे विज्ञानो नाश करीने अत्याये वैभव देहा क
रे ते घणा दिवस भोगवे नहीं.

वात १७८

हरण अने द्राखना वेला

एक हरणनी पक्षवाडे पारधी पक्षा त्यारे ते ना
टुं नाटुं द्राखना वेलांने ओठे पेटुं ते देखायुं नहीं,
त्यारे पारधी आशा सुकीने पाशा फर्या, एटला
मां ते हरणे तेज वेलांनां पांरडां खावा मांझां,
तेथी ते वेला हात्या एटलामां ते पारधीमांथी
एकजणे पाहुं वाळीने जायुं तेणे एवं जाण्युं जे
कोई जनावर वेलामां पेटुंके, एवं अटकळीने ए
क तीर नांझो, ते हरणने वाग्यो, तेथी तेनो प्रा
ण गयो. मरती वखत ते पोताने केहेके अरे, कृत
न्न एवो जे ऊं तेने या शिक्षा यथी ते योग्य थयो.
कां जे ह्यारा संकट समयमां जे ह्यारे काममां
आथा तेज वेलांने ही उपद्रव कथी.

सार

सार

कृतज्ञता ए सर्वदोषनो राजा हे, कांजे, जे पोता
नं सारुं करनाराने दुःख देके, ते पुरुष विजा जो
कोने दुखः देवामां आधुं पाहुं काम जोशे. नाटे
जे कृतज्ञ थयो एटले तेनां दुष्टपणानो अवधी थयो.

वात १७९

समळी अने कोळी

एक समळी खूबतरनी पक्षवाडे बडी हती ते, ए
क कोळीये जनावर पकडवाने जाळनांखी हती ते
मां भराथी, तेवखत ते पांझो फडफडावेके अने
तेमांहेथी जवानो उद्योग करेके, एटलामां ते को
ळी, पासेज काम करतो हतो तेणे आधीने तेनें
पकडी, अने मारबालाग्यो, त्यारे ते करगरीने ते
ने विनती करेके के, छनें जीव दान आप, जा,

होकांइ

७८

सौं कांई तनें उपद्रव करी नथी, ऊं खबुतरनी पछ
वाडे पडो हतो, तेनें कोळो उत्तर करेके, बार
खबुतरे पण ताहं शं वगाळुं हतुं? एवं कहीनें ते
णे तेनुं माथुं अनें घड तेवखत जुदुं करुं.

घार

विजानें पीडा करवी एज पेहेलो दोषके, पछी
ते ह्योटानें करो अथवा न्हानानें करो, पण ते
नुं दुःख वेनें बरोबर के, माटे न्हानानें पीडा क
बांधी दोष थवामां कांई चुक नथी.

वात १८०

बांदरी अनें तेनां वे वचां

एक बांदरीनें वे वचां हतां, ते मांहेची एक
उपर ते घणुं छेत राखे, अनें विजानो अनादर
करे एवामां एक दिवस तेनी पछवाडे पारधी प

द्यो

द्यो तेवखत, तेणीये वाहाला वचानें उगारवा
माटे तेनें खाती सरसुं लोधुं, अनें विजं हतं ते
सेहेजज तेनें वांसे बळगुं ए प्रमाणे वचानें लेई
नें ते उतावळी वेगे दोडेके, एटखामां, दैवधेण
थी एवं घयुं जे एक पथ्यरनां वाहाला वचानुं
माथुं पछडाईनें ते मरीगथुं. अनें वांसाउपरनुं
संकटलांथी उगयुं.

घार

आपण जेनें लाड लडावीये ते कोकरं वगडे
ते पोतानें अनें पोतानां माशपनें सुख दे नहीं.
अनें आपण जेनें लाड नथी करतां ते घणुं करी
नें दैववान् नोपजे.

वात १८१

काळुं साणस

गोरा लोकना देशनां एक जणे एक काळा साणस
नें वेजाथी लोधो, तेनें जोईनें ते पुरुषना मनमां ए

बुं

वुं आयुं के, आ जेनीपासे हतो तेनी एनाउपर
अनाखा, माटे एना शरीरउपर जेल पटीके, ते घा
ई नांखीयेतो ए गोरौ याय. एवो अनमां विचा
र करीनें तेणे तेनें एक छोटी कथरोटनां बेसा
यो, अनें अणुं खर्च करीनें सावू, पापवीधो खारो,
अनें पम घसवाना पधरा, अनें नजर, नवाव्या प
छी एक साणसे तेना शरीरनें खारो अनें सावु चो
ळवा संखो, अनें शिजे तेना माथाउपर पाणीनी
धारा रेडवागांडी, अनें एक बे जणा तेना शरी
रनें पधरा लेईनें घसवा लाग्या, एवं सवारधी
ते संध्याकाळसुधी तेणे दारेबारे क्युं. पण ते
सघळुं वार्ध घईनें साणसेनें थक मात्र लाग्यो,
अनें ते काळुं साणस टाडे उठवीनें मरण पास्युं.

सार

जे जांहांथी यवानं नहीं, ते यवासार कुतर्क क
रीनें सिध्या जे अम करेके, ते मेहेनत करीनें हा
अनें कोला मात्र जाणेके.

वात

वात १८३

शियाळ अनें मांदो सिंह

एक समये सिंहे जुडोज वात उडाडो जे, ऊं
मांदोकुं, तो आ बखत जे जनावर छारा सनाचा
र जीवाने आवशे तो छारा भिन्न जाणीश. तेउप
रधी सघळां जनावर सिंहनो गुफामां गयां. तेमां
शियाळ गयुं नहीं, ते नजरमां आणीनें, सिंहे दी
पडाने गुप्त शोध काहाडवाने मोकल्यो; ते जई
नें शियाळनें केहेके, भाई, तु आवो निष्ठुर वचन
रे थयोके? अरे, सघळां जनावरो स्वामीना समा
चारनें गयां, अनें तजथी रेहेवायुं पण क्यम! शि
याळ केहेके, छोटा भाई, सिंहेनें छारो साष्टांग
नमस्कार कहोनें विनंतो करजो जे, छारो स्नेह
तमारीउपर पूर्वे जेवो हतो तेवोज के, ते वातना
तमे मनमां लगार संदेह आणशो नहीं; अनें ऊं
हसणां पण तमारा अरणउपर सायुं मेहेलवा आ

वत,

७६

इत, पण शुं कहां? तनारी गुफा ह्यारी नजरे पडे
हे एटले ह्यारा पेटमां फाळ पडेके; कां के, जे ते
मां एकवार गवाके, तेनां पणसां ह्यमुधो पाछां
कथीं नथी.

सार

जे जे वात आगल आवी, तेना विचार कर्था बि
ना तेमां पलासां ह्यानीके. सर्वनी वाट ते आप
णी वाट, एम कहोनें जो एकादा खटलासां पडी
ये, पण, एवुंके के, घणुं करीनें लोक पोतानी व
होये चालता नथी, तो, तेसां एकादो कोर्ड ह्या
थसाधक होयके ते तेमनें जेम वाळेके तेम वळेके
तेमाटे घणा करे तेज करीये एवं ठीक नही; तेनां
आपणे पण सारासार विचार कथीं जाईये.



वात १८३

मद्यपी वर

एक स्त्रीनें धणी अणो मद्यपी हतो; तेनें ते
असन कुटवासाह तेणीये घणा उपास कथीं, पण

ते

ते सघळा व्यर्थ गया, त्यारे केली, तेणीये आ शु
क्ती करी: के, एक रात्रीये नित्यनीपेटे तेना धणी
मद्यपीनें रस्तामां अचेतन पड्याहतो, तेनें त्यांहां
थी उपाडीनें तेणीये मसाणमां एक मशीतमां घो
रमां सुवाड्यो, जेवो कोर्ड केहेसे के, खरोज मु
एलोके. अनें पोते घेर आवी. पक्षी केटलीक
वारे, तेनें शुद्धी आवीनें ते पश्चान्ताप पास्या हये,
एवं मनमां आणीनें, पाक्षी ते मसाणमां गथी; अ
नें मशीतनां वारणां टोकवा लागी; एटले ते मां
हेथी बोल्या; कोणके? ते बोली ऊं आ मसाणमां
रहीनें गुएलाओनी सेवा कर्हं, तारेमाटे जम
वानुं सेइनें आवीरुं, माटे कमाड उवाड. ते बो
ल्यो, वारतो ह्यारी बेहेन, हमणांतो तं जमवानी
वात एक कोरे मेहेल, अनें ह्यनें थोडोसरखो दा
रु घीवानें आणी आप, ऊं तारेो घणो उपकार
मानीश. वाचडीये ते सांभळीनें कपाळउपर हा
थ टोक्यो. अनें केहेवालागो, आहा; ऊं ह्योटी
दिव हीन! एनी टेव मेहेलाववानें आ एकज उपा

य

य रहो हतो, तेपण मिथ्या गयो, हवे जं एउतं
निसे समजी के, एनु व्यसन मुखावना कोई दिव
स जनार नथी.

सार

कोइपण ठेव गळेपडी नहोय ते मुकी अथवा
मुकावी सकायके. पण एकवार ते गळेपडी ए
ढले पक्षी कुटवी कडणके.



बात १८४

माणस अने सत्सर

एक माणस जांच उघाडी मुकीनें, एक झाडनें
हेटे विसामो खातो हतो, तेनी ते जांचउपर एक
सत्सर दंश करवा लाग्यो; तेबखत तेणे घणीरीसे
तेउपर एक घापट मारी; तेमांथी ते नाशीनें फ
रीथी तेज ठेकाणे आवीनें बेटो, त्यारे तेणे पा
क्षी घापट मारी; तेमांथी पण ते पाक्षी नाडो, ए
प्रमाणे पांच पचीस वार जांचउपर घापटो पडी

घो,

घा, तेणेकरिनें ते माणसनी जांचमाच सुजी गयो;
पण सत्सर हाथ आय्यो नहीं. तेबखत तेनें घणो
खेद थयो अनें तेणे बोरभद्रनी प्रार्थना करो के,
हे देव, तूं छोटाके, तारां सानर्थनी आगळ को
ई ठरतुं नथी; आ दुष्ट सत्सरे छानें घणो उपद्रव
करवा सांझोहे; तो एउपर पराक्रम करीनें एनो
प्राण ले, अनें सज दीनउपर दयाकर, एना दंशे
करीनें जं घणो व्यथा पामुंहुं.

सार

हलका काम सार, छोटाणे अम देवो ए अ
ज्ञानीनुं काम. जे अक्षय सुखना आपनार तेनें
नामवंत पदार्थनी प्राप्तिमाटे संकटसां घालोये
नहीं.

बात

बात १८५

वे बासण

एक माटीनं, अने एक पितळनं, एवां वे बासण,
कोईये एक नदीनी तीरे मेहेल्यां हतां; ते नदीनं पूर
आयुं तेमां तणायां, ते वखत माटीना बासणनें
चिंता मडो के, कदाचित् जं पितळना उपर अथ
डाईश तो, फुटीजईश. तेनें काष्टी जोईनें, पितळ
नं केहेके, अरे, तं विहीश नहीं, तनें जं संभाळी
श. माटीनं बोळ्यं, भाई तं लगार वेनळेचीज बो
ल, ज्ञाने तारी घणो भो के; कांजे, जं तनें अथ
बाजं के, तं ज्ञाने अथडाव, तोपण नाग झारो
ज थाव.

हार

जरीइनें तालेवरनी सगाई, अथवा संगती, वि
पत्नीनां नांलिके. तालेवरनी जोडे रेहेवाभां, आ
लडो, के ते लडो, पण वे तदफथी हानी गरीब
नोज थाव.

बात

बात १८६

शीयाळ अनें वाघ

एक दिवस कोई एक कुमळ तीरंदाज, अर
प्यतां पारथ करवा गयो हतो, तेषे घणां जना
वर सायां, अनें केटलांकनी, पळवाडे पळो. ते
जोईनें सघळां जनावर गभरायां; अनें भय पानी
नें नाशोनें झाडो, गुफा, एतां भराई गयां. ते व
खत एक वाघ तेजनें केहेके, अरे, जं जीवंकं अ
नें तननें भो! एवुं थाव तो ज्ञाने धिक्कार के.
तो कांई चिंता करशो नहीं, तमे धीरजनात्र रा
खो, अनें ज्ञानं वळ, शौर्य, एउपर विश्वास रा
खो; जं एकलोज तमारा वैरीनें मारीनांखीश.
एवी छोटी छोटी बडाईनी बातो केहेके, पुंछडुं
पछाडेके, अनें रावणां अंहुं खोतरेके, एटलांमां
एक तार आवीनें तेनी कूखमां बांधा, तेजळ
त तेनी वेदनाचे आकुळ थईनें, तेणे छोटे
घांटे काहाडीनें वून पाडो, अनें छो वती तीर
नं पुंछडुं झालीनें तेनें वाहेर काहाडेके, एटलां

मां,

मां, श्रीयाळ, पासे आवीनें विस्तय फामोनें तेनें प
केके, बाघजी, हवा ते कोण वळीये छे, के जे
णे तमसरखा छोटा वळवान प्रभूनेंयण घाएल क
था. वाघ बोखो, भाई झारी बटकळ चुका, जे
णे हनें घाएल कथा ते, पेसो सामो उभाई ते
मनुष्य, जे, आपण प्रभूयोथी जीतातो नथो.

सार

वळ, अनें शौर्य, ए छोटां कान करेके पण
जा तेमा साहित्यमां तेटलुं बुद्धिवळ होय तो ते
नहोय तो, तेज उळटां दुखरायक बायडे. मरा
वळवान सुराके, ते, घोटाना सामर्थ्य उपर भरसो
राखीने, उतावळापण करेके, तेमां तेनें उळटुं ए
काहुं सम, प्रभूना जाण्यामां नहोय, ते जाण्यामा
आवेके, अनें तेन पळो तेमना घातनं निमित्त बाय
के. बुद्धिमान वळवा
नें पण नाथ मनुष्यानें
जीती सकतां नथी तेन बुद्धिहीन वळवान, डाहा



दाने.

G. 2808

NOT TO BE RETURNED

7PK
1936
G 75
A 3A3
1828

JNB

G - 2808